इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

बी.ई.एस-123
अधिगम और शिक्षण

खंड

2

शिक्षार्थी को समझना

इकाई 5
सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में शिक्षार्थी 5

इकाई 6
वैयक्तिक रूप में शिक्षार्थी-I 21

इकाई 7
वैयक्तिक रूप में शिक्षार्थी-II 36

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विशेषज्ञ समिति

प्रोफेसर आई.के. बंसल (अध्यक्ष)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक षिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रोफेसर श्रीधर वशिष्ठ
पूर्व कुलपति
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

प्रोफेसर परवीन सिंक्लेयर
पूर्व निदेषक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद
नई दिल्ली एवं
प्रोफेसर, विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एजाज़ मसीह
षिक्षा संकाय, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रोफेसर प्रत्यूष कुमार मंडल
डी.ई.एस.एस.एच.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रषिक्षण परिषद, नई दिल्ली

प्रोफेसर अंजू सहगल गुप्ता
मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एन.के. दाष
पूर्व निदेषक, षिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रोफेसर एम. सी. शर्मा
(कार्यक्रम समन्वयक-बी.एड.)
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. गौरव सिंह
(कार्यक्रम सह-समन्वयक-बी.एड.)
षिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित सदस्य (षिक्षा विद्यापीठ के संकाय सदस्य)

प्रोफेसर डी. वेंकटेष्वरलू
प्रोफेसर अभिताव मिश्रा
सुश्री. पूनम भूषण
डॉ. आयषा कन्नाडी
डॉ. एम.वी. लक्ष्मी रेड्डी
डॉ. भारती डोगरा
डॉ. वंदना सिंह
डॉ. एलिज़ाबेथ कुरुविला
डॉ. निराधर डे

पाठ्यक्रम समन्वयक : गौरव सिंह

खंड निर्माण दल

पाठ्यक्रम योगदान

डॉ. कनक शर्मा (इकाई 5)
पोस्ट डाक्टरल फैलो, षिक्षा संकाय,
जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली

डॉ. आशीष श्रीवास्तव (इकाई 6)
एसोसिएट प्रोफेसर, शांति निकेतन, पष्चिम बंगाल

डॉ. पंतजलि मिश्रा (इकाई 7)
असिस्टेंट प्रोफेसर, षिक्षा विद्यापीठ,
वर्धमान महावीर खुला विष्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान

विषयवस्तु संपादन

प्रोफेसर रजनी रंजन सिंह
डीन, विशेष षिक्षा संकाय

डॉ. शकुन्तला मिश्रा
राष्ट्रीय पुनर्वास विष्वविद्यालय, लखनऊ

इकाई संरचना एवं आरूप संपादन

डॉ. गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अनुवादक दल

अनुवादक

डॉ. सुनीता सुदरियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, एच.एल.वाई. बी.डी.सी.
लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ. चम्पा पंत
पूर्व प्रवक्ता, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिषद नई दिल्ली

डॉ. सत्यवीर सिंह
एस.एन. इंटर कॉलेज, पिल्लाना, उत्तरप्रदेष

हिन्दी पुनर्रीक्षण

डॉ. गौरव सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

प्रूफ रीडिंग

डॉ. अंजुली सुहाने
असिस्टेंट प्रोफेसर,
षिक्षा विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामाग्री निर्माण

प्रो. सरोज पाण्डेय
निदेशक, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

श्री एस.एस वेंकटाचलम
सहायक सचिव, शिक्षा विद्यापीठ, इग्नू

सितम्बर, 2016

©इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2016

ISBN-978-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

शिक्षा विद्यापीठ एवं इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, प्रो. विभा जोशी, शिक्षा विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक :

बी.ई.एस.-123 अधिगम और षिक्षण

खंड 1 अधिगम : परिप्रेक्ष्य और उपागम

इकाई 1 अधिगम की समझ

इकाई 2 अधिगम के उपागम

इकाई 3 ज्ञान की रचना हेतु अधिगम

इकाई 4 विभिन्न संदर्भों में अधिगम

खंड 2 षिक्षार्थी को समझना

इकाई 5 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में षिक्षार्थी

इकाई 6 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-I

इकाई 7 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-II

खंड 3 षिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

इकाई 8 षिक्षण को समझना

इकाई 9 षिक्षण-अधिगम का नियोजन

इकाई 10 षिक्षण-अधिगम का संगठन

इकाई 11 षिक्षण-अधिगम संसाधन

इकाई 12 कक्षाकक्ष में षिक्षण-अधिगम प्रबंधन

खंड 4 षिक्षक एक वृत्तिक

इकाई 13 विविध भूमिकाओं में षिक्षक

इकाई 14 नवाचारी और क्रियात्मक शोधकर्त्ता के रूप में षिक्षक

इकाई 15 मुक्त चिंतक के रूप में षिक्षक

इकाई 16 षिक्षकों का वृत्तिक विकास

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 2 षिक्षार्थी को समझना

खंड की प्रस्तावना

खंड 1 में हमने अधिगम की मूल बातों और अधिगम के विविध उपागमों के बारे में चर्चा की है। अधिगम को सहज बनाने का चाहे कोई भी उपागम हो, सर्वप्रथम षिक्षार्थी को समझना महत्वपूर्ण है। इस खंड में षिक्षार्थी के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की गई है, जो षिक्षण-अधिगम के सहजीकरण हेतु आपको ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। यह खंड आपको षिक्षार्थियों को समझने में सहायक होगा, साथ ही उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और वैयक्तिक भिन्नताओं को समझने में भी सहायता मिलेगी। इस खंड में निम्नलिखित तीन इकाइयाँ हैं:

इकाई 5 : "सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में षिक्षार्थी", षिक्षार्थियों की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं को समझने में आपको सहायक होगी। यह इकाई षिक्षार्थियों को सक्रिय रूप में देखने के बदलते हुए दृष्टिकोण पर बल देगी और षिक्षार्थियों को प्रभावित करने वाले विविध कारकों पर चर्चा करेगी। विभिन्न प्रकार के षिक्षार्थियों की विशेषताएँ, जैसे श्रवणिक, दृश्यीय और स्पर्ष क्षमता वाले षिक्षार्थियों की जानकारी आपको अपने कक्षाकक्ष में विभिन्न प्रकार की अधिगम शैली के षिक्षार्थियों को पहचानने में सहायता करेगी। यह इकाई भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थियों के विविध प्रकारों पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा करेगी।

इकाई 6 : "वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-I" में बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व पर चर्चा की जाएगी। इकाई में बुद्धि की अवधारणा, बुद्धि से संबंधित मिथ्या धारणाओं को स्पष्ट किया गया है। इकाई में बुद्धिलब्धि (Intelligence Quotient - IQ), सांवेगिक गुणक (Emotional Quotient – EQ), आध्यात्मिक गुणक (SQ) जैसी अवधारणाओं पर भी चर्चा की गई है। बहु-बुद्धि के सिद्धान्त की चर्चा आपको बुद्धि के बारे में नए परिप्रेक्ष्य को समझने में सहायक होगी। इकाई एक व्यक्ति के व्यक्तित्व की अधिगम में भूमिका पर भी चर्चा करेगी।

इकाई 7 : "वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-II", इकाई 6 के क्रमषः है और अधिगम से जुड़े विभिन्न कारकों की चर्चा करती है। अधिगम के सहजीकरण हेतु षिक्षार्थी की तत्परता, अभिप्रेरणा, दृष्टिकोण और अभिवृत्ति की भूमिका की चर्चा इस इकाई में की गई है। इकाई, अधिगम में जिज्ञासा, रचनात्मकता और रुचि की भूमिका पर भी चर्चा करती है।

इस खंड का उद्देष्य आपको अपने षिक्षार्थियों को समझने में मदद करना है, ताकि जब आप अपने षिक्षण-अधिगम का नियोजन करें तो उचित योजना बना सकें और आगे बढ़ सकें।

इकाई 5 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में षिक्षार्थी

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देष्य

5.3 षिक्षार्थियों में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता

5.4 षिक्षार्थियों को प्रभावित करने वाले कारक

- 5.4.1 पारिवारिक संरचना
- 5.4.2 विद्यालय का प्रकार
- 5.4.3 भौगोलिक स्थिति
- 5.4.4 सामाजिक-आर्थिक स्थिति
- 5.4.5 सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- 5.4.6 भाषा

5.5 षिक्षार्थियों के प्रति बदलता दृष्टिकोण

5.6 विभिन्न प्रकार के षिक्षार्थी

- 5.6.1 श्रवणिक षिक्षार्थी
- 5.6.2 दृश्यीय षिक्षार्थी
- 5.6.3 स्पर्षी (काइनेस्थेटिक) षिक्षार्थी

5.7 भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थी

- 5.7.1 मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थी
- 5.7.2 श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी
- 5.7.3 दृष्य-क्षीणता वाले षिक्षार्थी
- 5.7.4 विशिष्ट अधिगम अक्षमताएँ

5.8 सारांष

5.9 इकाई के अंत में अभ्यास

5.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

5.11 बोध प्रष्नों के उत्तर

5.1 प्रस्तावना

षिक्षार्थी को उसके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ से अलग करके नहीं समझा जा सकता है। अधिगम पर सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। अधिगम सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ही संपन्न होता है।

एक षिक्षार्थी अपने परिवार, समाज और विद्यालय से सीखता है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा अपने प्रति अपने अभिभावकों के व्यवहार से, अपने संगी-साथी जिनके साथ वह खेलता/खेलती है और विद्यालय जहाँ वह विभिन्न पाठ्य और पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में भाग लेता/लेती है, से सीखता/सीखती है। हम कह सकते हैं कि प्रत्येक चीज जो षिक्षार्थी सीखता है, वह उसके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में संपादित होती है।

इस इकाई में हम षिक्षार्थी की विशेषताओं, (षिक्षार्थियों में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताएँ), षिक्षार्थी के प्रति बदलते दृष्टिकोण और विभिन्न प्रकार के षिक्षार्थियों और साथ ही भिन्न प्रकार से योग्य षिक्षार्थियों के बारे में समझने का प्रयास करेंगे।

5.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आपः

- विभिन्न प्रकार के षिक्षार्थियों को सूचीबद्ध और स्पष्ट करने में सक्षम हो सकेंगे;
- सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के अधिगम पर प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे;
- षिक्षार्थियों के प्रति बदलते हुए दृष्टिकोण की व्याख्या कर सकेंगे;
- भिन्न रूपों में योग्य षिक्षार्थियों को परिभाषित कर सकेंगे;
- संकेतों और लक्षणों के आधार पर भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थियों (जिन्हें कोई बीमारी नहीं है) की पहचान कर सकेंगे; और
- विभिन्न प्रकार की अधिगम अक्षमताओं को सूचीबद्ध तथा स्पष्ट कर सकेंगे।

5.3 षिक्षार्थियों में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता

सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता भारतीय कक्षा की एक वास्तविकता है। आपको एक ही कक्षा में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों, विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे मिलते हैं। षिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 ने एक समावेषी कक्षा की वकालत की है। यहाँ समावेषन से तात्पर्य मात्र विशेष आवष्यकता वाले बच्चों के समावेषन से ही नहीं है, परंतु वंचित समूहों और पिछड़े वर्गों के बच्चे, भाषा की विविधता वाले बच्चे, विभिन्न जातियों, धर्मों और संस्कृति के बच्चे, सभी को एक ही समान कक्षा में रखने से है। आइए, समझने का प्रयास करते हैं कि कक्षाकक्ष में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता क्या है?

इस संदर्भ में सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता में शामिल हैः जाति, वर्ग, योग्यता, विभिन्न अधिगम परिस्थितियाँ और शैली, जातीयता, आयु, लिंग, लैंगिक उन्मुखीकरण, धर्म, राष्ट्रीयता और अन्य आयाम जो व्यक्तिगत विद्यार्थी की पहचान बनाते हैं और उसके अधिगम अनुभवों को प्रभावित करते हैं (यूनेस्को, 2011)

इसका अर्थ है कि एक षिक्षक होने के नाते हमें सुनिष्चित करना है कि किसी भी पृष्ठभूमि के बच्चे उनकी अधिगम शैली और आवष्यकताओं में विविधता के कारण अधिगम अवसरों से वंचित न रहें। हमें ऐसा अधिगम वातावरण प्रदान करना है, जहाँ षिक्षार्थियों की इन विविधताओं को अधिगम-संसाधनों के रूप में देखा जा सके।

सामाजिक-सांस्कृतिक विचारकों के अनुसार षिक्षार्थियों को उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से अलग करके नहीं समझा जा सकता है। षिक्षार्थियों की सामाजिक स्थितियों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में बड़ी विविधता पाई जाती है और उसी के अनुसार उनका अधिगम भी संपन्न होता है।

क्रियाकलाप 1

अपने निकट के क्षेत्र में एक सरकारी माध्यमिक विद्यालय और एक निजी रूप से प्रबन्धित पब्लिक/कान्वेंट विद्यालय के कम से कम एक कक्षाकक्ष का अवलोकन कीजिए। यूनेस्को द्वारा दी गई विविधता की परिभाषा को ध्यान में रखते हुए आपने कक्षाकक्ष में जिन विविधताओं का अवलोकन किया, उनका एक चार्ट बनाइए।

आइए, अब उन कारकों की जाँच करते हैं जिनके परिणामस्वरूप षिक्षार्थियों में विविधता होती है।

5.4 षिक्षार्थियों को प्रभावित करने वाले कारक

षिक्षार्थियों में विविधता मात्र उनकी सामाजिक स्थितियों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में नहीं होती, बल्कि उनकी अधिगम शैलियों, आवष्यकताओं, आकांक्षाओं और दृष्टिकोणों में भी होती है। यह विविधता कैसे जन्मी? एक षिक्षक को इस प्रष्न का उत्तर देने की आवष्यकता है। आपको उन कारकों से अवगत होना चाहिए जो षिक्षार्थियों के अधिगम में अंतर उत्पन्न कर सकते हैं। कुछ कारक निम्नलिखित हैंः

5.4.1 पारिवारिक संरचना

पारिवारिक संरचना में विविधता षिक्षार्थी के अधिगम को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, वे षिक्षार्थी जो एकल परिवारों से संबंधित हैं, उनके अधिगम प्रतिफल निम्न हो सकते हैं, यह माना जाता है कि एकल परिवारों में षिक्षार्थियों पर उत्तरदायित्वों की वृद्धि, जैसे बच्चे की देखभाल की भूमिका, घरेलू कार्य, विद्यालय के लिए पर्याप्त समय की उपलब्धता में बाधक हैं और अभिभावकों के पास भी अपने बच्चों के विद्यालय कार्य का अनुवीक्षण करने तथा उनके साथ-साथ बिताने के लिए समय की कमी है। परिणामस्वरूप वे निम्न अधिगम निष्पादन प्रदर्षित कर सकते हैं। जबकि एक संयुक्त परिवार में अभिभावक अपने बच्चों के साथ अधिक समय बिताते हैं क्योंकि उनके पास घर में सहायता के लिए अधिक सदस्य होते हैं। इसलिए जो षिक्षार्थी संयुक्त परिवारों से संबंधित हैं, संभव है कि वे उच्च अधिगम निष्पादन का प्रदर्षन करें।

5.4.2 विद्यालय का प्रकार

परिवार की संरचना के अतिरिक्त विद्यालय का प्रकार भी षिक्षार्थी के अधिगम प्रतिफल को प्रभावित करता है, एक निजी विद्यालय में अधिकांष षिक्षार्थी उच्च श्रेणी के परिवारों से होते हैं, जबकि एक सरकारी विद्यालय में अधिकांष षिक्षार्थी मध्यम और निम्न श्रेणी के परिवारों से होते हैं। निजी विद्यालय उच्च शैक्षिक योग्यताओं वाले षिक्षार्थियों का चयन करते हैं और उन्हें आर्थिक सहायता भी प्राप्त है। निजी विद्यालयों में अधिगम वातावरण भी सरकारी विद्यालयों से बिल्कुल अलग होता है। अधिक आर्थिक सहायता के कारण निजी विद्यालयों में कक्षाकक्ष और प्रयोगषालाएँ नई तकनीकों से सुसज्जित होती हैं जबकि सरकारी विद्यालयों में कक्षाकक्ष ठीक से सुसज्जित नहीं होते। अपने सरकारी विद्यालयों की वास्तविक छवि के बारे में हम समाचारपत्रों में अक्सर पढ़ते हैं कि वहाँ अधिकांष विद्यालयों में कक्षाकक्ष नहीं हैं और षिक्षार्थी खुले स्थान में सीखते हैं। उपयुक्त अधिगम वातावरण के अभाव के कारण सरकारी विद्यालयों में षिक्षार्थियों का अधिगम प्रतिफल कभी-कभी निजी विद्यालयों से निम्न होता है।

5.4.3 भौगोलिक स्थिति

भौगोलिक स्थिति भी अधिगम प्रतिफल को प्रभावित करती है। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में उपयुक्त अधिगम सुविधाओं की कमी जैसे लागत, यातायात की सुविधाएँ, परिवार की निम्न आय, नवीन प्रौद्योगिकी जैसे कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट आदि की अनुपलब्धता के कारण ये क्षेत्र वंचित रह जाते हैं। हम कह सकते हैं कि जो षिक्षार्थी ग़ैर-महानगरीय क्षेत्रों से संबंधित हैं उनका अधिगम प्रतिफल, महानगरीय षिक्षार्थियों की तुलना में निम्न हो सकता है।

5.4.4 सामाजिक-आर्थिक स्थिति

एक षिक्षार्थी के अधिगम में उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति निर्णायक भूमिका निभाती है। एक षिक्षार्थी जो निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार से संबंधित है वह अपने परिवार से बौद्धिक प्रोत्साहन प्राप्त नहीं कर पाता, परिणामस्वरूप वह कक्षाकक्ष में आलसी और निष्क्रिय बन जाता है। इसके विपरीत जो षिक्षार्थी मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले परिवार से संबंधित होता है, वह अपने परिवार से पूर्ण अभिप्रेरणा प्राप्त करता है, उच्च आकांक्षा स्तर रखता है और इसके परिणामस्वरूप वह कक्षाकक्ष में सक्रिय रहता है। अतः हम कह सकते हैं कि उसका अधिगम प्रतिफल उस षिक्षार्थी की तुलना में अधिक उच्च रह सकता है जो निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवार से संबंधित है।

5.4.5 सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

षिक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव उसके अधिगम पर होता है। विभिन्न पृष्ठभूमि के षिक्षार्थी विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। आपने अपने कक्षाकक्ष में अवलोकन किया होगा कि जब आप एक प्रष्न पूछते हैं तो आपकी कक्षा के कुछ षिक्षार्थी उत्तर देते समय आपकी आँख के साथ संपर्क बना पाने में समर्थ होते हैं परंतु कुछ षिक्षार्थी ऐसे भी होंगे जो उत्तर देते समय शर्म महसूस करते थे और आपकी आँख के साथ संपर्क नहीं बना पाते थे। यह साधारणतया हमारे कक्षाकक्षों में होता रहता है और इसका कारण सांस्कृतिक विविधता है। विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों में षिक्षार्थी जिस तरीके से भाग लेते हैं, उसमें उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव होता है। समूहवादी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का षिक्षार्थी दूसरों के साथ सहयोग द्वारा सीखने में प्राथमिकता रखता है जबकि व्यक्तिवादी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का षिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से सीखने में प्राथमिकता देता है। षिक्षक के लिए यह महत्वपूर्ण पक्ष है कि उसे विद्यालयी वातावरण और षिक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में अंतर का ज्ञान होना चाहिए। षिक्षक को षिक्षार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए प्रयास करना चाहिए। इस कार्य में षिक्षार्थी स्वयं षिक्षक के लिए एक मूल्यवान संसाधन हो सकता/सकती है। एक षिक्षक के नाते हमें षिक्षार्थी को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने परिवार और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि आदि के बारे में बताएँ ताकि हम अधिगम वातावरण को उसके अनुसार संगठित कर सकें।

5.4.6 भाषा

भाषायी विविधता भी षिक्षार्थी के अधिगम प्रतिफल को प्रभावित करती है। क्या आपने कभी ऐसी स्थिति के बारे में सोचा है जब आप बीमार हुए और चिकित्सक के पास परामर्ष हेतु जाते हैं? एक क्षण के लिए सोचने का प्रयास कीजिए कि यदि इस स्थिति में चार भिन्न-भिन्न चिकित्सक, जो अलग-अलग भाषाएँ बोलते हों वे आपको आपके स्वास्थ्य की स्थिति के बारे में सूचना दें, आप कैसा महसूस करेंगे? समान स्थिति षिक्षकों के साथ भी है। हमारे कक्षाकक्षों में हमारे पास विविध प्रकार के षिक्षार्थी होते हैं जिनमें कई हिन्दी या अंग्रेजी नहीं बोलने वाले भी शामिल होते हैं। वे षिक्षार्थी, जो ऐसे परिवारों से संबंधित हैं जिनकी भाषा विद्यालय की षिक्षा के माध्यम की भाषा से मेल नहीं खाती, वे स्वयं को वंचित पाते हैं। भाषायी रूप से विविध षिक्षार्थी कभी-कभी निम्न अधिगम प्रतिफल और बीच में विद्यालय छोड़ देने की उच्च दर प्रदर्षित करते हैं। शैक्षिक समता सुनिष्चित करने के लिए भाषायी रूप से विविध षिक्षार्थियों तक पहुँच हेतु हम योग्य षिक्षकों की नियुक्ति कर सकते हैं। एक षिक्षक होने के नाते हमें भिन्न भाषाओं वाले षिक्षार्थियों के लिए भाषा के कार्यक्रम प्रारंभ करने चाहिए। साथ ही अभिभावक-षिक्षक गोष्ठियों/बैठकों के दौरान हमें सूचनाएँ अभिभावकों की मातृभाषा में प्रदान करनी चाहिए।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) उन सामाजिक.सांस्कृतिक कारकों को सूचीबद्ध कीजिए जो षिक्षार्थियों के अधिगम में अंतर उत्पन्न करते हैं।

....

....

....

....

....

....

5.5 षिक्षार्थियों के प्रति बदलता दृष्टिकोण

अधिगम किसी भी व्यक्ति द्वारा, किसी भी समय पर और किसी भी स्थान पर संपन्न हो सकता है। अधिगम के लिए किसी प्रकार की उपस्थिति, परीक्षा, श्रेणी या अंकों की आवष्यकता नहीं होती है। वर्तमान परिदृश्य में हम विभिन्न संचार साधनों, जैसे– डिजिटल मीडिया (मोबाइल, इंटरनेट और कम्प्यूटर, आदि) की सहायता से विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। "विद्यार्थी" शब्द के स्थान पर हमें "षिक्षार्थी" अथवा "अधिगमकर्त्ता" शब्द का उपयोग करना चाहिए। हमारे विद्यालयों में हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जहाँ हम विद्यार्थी को नहीं बल्कि एक षिक्षार्थी को अधिक महत्व दें। हमारे कक्षाकक्षों में बच्चे स्वयं की तुलना अन्य बच्चों के साथ करते हैं। यह एक प्राकृतिक घटना है कि अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक बच्चा स्वयं की तुलना अन्य बच्चों के साथ करता है। पारम्परिक रूप से विद्यालयों में एक षिक्षक/षिक्षिका उन बच्चों की सराहना करती है/करती है जो अच्छे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वे बच्चे जो षिक्षक के निर्देषों का पालन करते हैं, अपना गृहकार्य पूरा करते हैं और उच्च अंक एवं श्रेणी प्राप्त करते हैं। प्रत्येक बच्चे में एक षिक्षार्थी को पहचान कर हमें षिक्षार्थियों के बारे में अपनी धारणा को परिवर्तित करना होगा और सर्वोत्तम अधिगम हेतु उनकी सहायता करनी होगी। इस उद्देष्य हेतु एक षिक्षक के पास षिक्षार्थी का व्यक्तिगत विवरण (प्रोफाइल) होना चाहिए, जो एक षिक्षक के लिए यह समझने में सहायक होगा कि प्रत्येक षिक्षार्थी स्वयं को विषयवस्तु के साथ किस प्रकार जोड़े रखती/रखता है, कैसे वह अपने पूर्व ज्ञान को अभिव्यक्त करती/करता है और कैसे वह नवीन ज्ञान को समझती/समझता है।

अच्छे षिक्षार्थियों की सराहना करते हेतु एक ऐसे अधिगम वातावरण को विकसित करने की आवष्यकता है जहाँ प्रत्येक बच्चे की पहचान एक षिक्षार्थी के रूप में हो। एक ऐसा अधिगम-वातावरण जो षिक्षार्थियों को उनके अधिगम के बारे में गहन चिंतन हेतु दिषा प्रदान कर सके। एक तरफ यह षिक्षार्थियों को अपने अधिगम हेतु अधिगम उद्देष्यों को निर्धारित करने में सहायक होगा और दूसरी तरफ यह षिक्षकों के लिए भी अधिगम उपकरणों, रणनीतियों और संसाधनों की समझ का निर्माण करने में उपयोगी होगा जो कि षिक्षार्थियों के अधिगम में लाभदायक होगा। अब हमारे मस्तिष्क में प्रष्न आता है कि एक षिक्षक होने के नाते ऐसे वातावरण के विकास हेतु हमें क्या करना चाहिए? एक षिक्षक के रूप में हमें

षिक्षार्थियों के साथ बात करनी चाहिए कि वे हमारे साथ किस प्रकार सीख रहे हैं। इस प्रकार का वार्तालाप अधिकतम अधिगम के द्वार खोलेगा। हमें अपने षिक्षार्थियों की रुचियों की सराहना करनी चाहिए ताकि वे अपने भविष्य के बारे में चिंतन करने के योग्य बनें।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2) सही / गलत चुनिएः

क) अधिगम हेतु उपस्थिति, परीक्षा, श्रेणी या अंकों की आवष्यकता होती है। (सही / गलत)

ख) हमारे विद्यालय की संस्कृति उन बच्चों की सराहना नहीं करती जो अच्छे षिक्षार्थी हैं। (सही / गलत)

3) प्रत्येक बच्चे को एक षिक्षार्थी के रूप में देखने की आवष्यकता क्यों है?

....

....

....

....

....

5.6 विभिन्न प्रकार के षिक्षार्थी

प्रत्येक षिक्षार्थी की अद्वितीय अधिगम शैली होती है। अपने षिक्षार्थियों की अधिगम शैलियों को समझकर आप उनके बेहतर अधिगम हेतु बेहतर रणनीतियाँ अपना सकते हैं। हम अधिगम शैलियों के आधार पर षिक्षार्थियों को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित कर सकते हैंः

5.6.1 श्रवणिक षिक्षार्थी

श्रवणिक षिक्षार्थी मौखिक भाषणों, चर्चाओं और अन्य लोग जो कहते हैं, उसे सुनकर सीखते हैं। ये षिक्षार्थी आवाज का लहजा, अंतराल (पिच) और गति को सुनकर भाषण में सन्निहित अर्थ की व्याख्या करते हैं। श्रवणिक षिक्षार्थियों के लिए लिखित सूचना तब तक व्यर्थ है जब तक कि वे उसे सुन न लें।

षिक्षक की भूमिका

इन षिक्षार्थियों की सहायता हेतु निम्नलिखित कुछ रणनीतियाँ एक षिक्षक द्वारा उपयोग में लाई जा सकती हैंः

- पारम्परिक षिक्षण विधि, जहाँ भाषण को न्यूनतम प्रभावी विधि समझा जाता है, परंतु श्रवणिक षिक्षार्थी सुनने से सर्वोत्तम सीखते हैं।
- षिक्षार्थियों के साथ अंतर्क्रिया द्वारा मौखिक रूप से सूचना प्रस्तुत करना।
- षिक्षार्थियों को चर्चाओं में भाग लेने हेतु प्रेरित करना।
- अधिगम सामग्री के प्रस्तुतीकरण में अभिलेखित (recorded) भाषणों का उपयोग करना।

5.6.2 दृश्यीय षिक्षार्थी

दृश्यीय षिक्षार्थी अधिगम पाठ की विषयवस्तु को पूर्ण रूप से समझने के लिए षिक्षक की शारीरिक भाषा और चेहरे के हाव-भाव को देखकर सीखते हैं। ये षिक्षार्थी दृष्य संबंधी किसी बाधा से दूर रहने के लिए कक्षाकक्ष में आगे की पंक्ति में बैठने को प्राथमिकता देते हैं। कक्षाकक्ष में चर्चा के दौरान ये षिक्षार्थी सूचना को संपोषित करने के लिए विस्तार से टिप्पणियाँ (नोट्स) लिखते हैं।

षिक्षक की भूमिका

दृश्यीय षिक्षार्थी दृश्य वस्तुओं द्वारा सर्वाधिक सीखते हैं। इसलिए एक षिक्षक के रूप में हमें अपने कक्षाकक्ष में निम्नलिखित रणनीतियाँ उपयोग में लानी चाहिएः

- षिक्षण हेतु अवधारणा मानचित्रण विधि का उपयोग करना चाहिए।
- चार्ट, चित्र, फोटो, वीडियो, ओवरहैड ट्रान्सपेरेन्सीस, आदि का उपयोग करना चाहिए।
- हम षिक्षार्थियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि जब वे पढ़ रहे हों या टिप्पणियाँ लिख रहे हों तो वे रंगीन पैन या रंगीन हाइलाइटर का उपयोग करें।

5.6.3 स्पर्षी (काइनेस्थेटिक) षिक्षार्थी

स्पर्षी षिक्षार्थी गति, क्रिया और स्पर्ष द्वारा सीखते हैं। इस प्रकार के षिक्षार्थी बहुत लम्बे समय तक नहीं बैठ सकते हैं और अपनी गतिविधियों की आवष्यकता के कारण विचलित हो जाते हैं। जब षिक्षार्थियों को स्वयं कुछ करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं तो षिक्षार्थी अपनी अधिगम क्षमता को सुदृढ़ करते हैं। सामान्यतया हम अपने विज्ञान के कक्षाकक्षों में इसे देख सकते हैं, जहाँ षिक्षार्थी करके सीखते हैं।

षिक्षक की भूमिका

स्पर्षी (काइनेस्थेटिक) षिक्षार्थी सर्वोत्तम सीखते हैं जब वे क्रियाकलापों में संलग्न रहते हैं। एक षिक्षक के रूप में अपने कक्षाकक्ष में निम्नलिखित रणनीतियाँ उपयोग में ला सकते हैंः

- हम षिक्षार्थियों को करके सीखने के अवसर प्रदान करें।
- हम उन्हें प्रदर्षनी, क्लब गतिविधियों, नाटक, नष्त्य, एकांकी और स्थानीय भ्रमण आदि में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- हम षिक्षण विधि के रूप में समस्या-समाधान और परियोजना विधि का उपयोग कर सकते हैं।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4) दो संभव सहायक रणनीतियाँ सुझाइए जो एक षिक्षक के रूप में आपके द्वारा निम्नलिखित के लिए अपनाई जा सकेंः

क) श्रवणिक षिक्षार्थी

....

....

....

ख) दृश्यीय षिक्षार्थी

....

....

....

....

....

ग) स्पर्षी (काइनेस्थेटिक) षिक्षार्थी

....

....

....

....

....

5.7 भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थी

भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थी वे हैं जो यद्यपि औसत या औसत से अधिक बुद्धि के होते हैं, परंतु अधिगम में कुछ कठिनाइयों का सामना करते हैं। वे रचनात्मक हो सकते हैं, लेकिन पढ़ने, लिखने और गणित में अच्छा निष्पादन देने में सक्षम नहीं होते। हम कह सकते हैं कि उपयुक्त षिक्षण विधियों के उपयोग द्वारा भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थी भी सामान्य षिक्षार्थी की भाँति सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक दृष्टिहीन षिक्षार्थी एक सामान्य पाठ्य-सामग्री को पढ़कर नहीं सीख सकता परंतु वह जो कुछ सुनती/सुनता है अथवा करती/करता है, के द्वारा सीख सकता है। एक बधिर षिक्षार्थी एक भाषण को सुनकर नहीं सीख सकता, परंतु वह जो कुछ देखता या करता है, उसके द्वारा सीख सकता है।

5.7.1 मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थी

मानसिक मंदता (एम.आर.) को बौद्धिक विकास विकार (आई.डी.डी.) या सामान्य अधिगम अक्षमता भी कहते हैं। मानसिक मंदता पर अमेरिका की संस्था (ए.ए.एम.आर.) 2002 के अनुसार *"मानसिक मंदता एक अक्षमता है जिसमें बौद्धिक कार्य पद्धति और अनुकूलक व्यवहार में महत्वपूर्ण परिसीमन एक विशेषता है, जैसा कि वैचारिक, सामाजिक और व्यावहारिक अनुकूलक कौषलों में अभिव्यक्त किया गया है। यह अक्षमता 18 वर्ष की आयु से पूर्व उत्पन्न होती है।"*

इस अक्षमता वाले षिक्षार्थी:

- सामान्य षिक्षार्थी की तुलना में भाषा सीखने में लम्बा समय ले सकते हैं।
- सामाजिक कौषलों को सीखने में अधिक समय ले सकते हैं।
- अपनी व्यक्तिगत आवष्यकताओं का ध्यान रखना सीखने में लम्बा समय ले सकते हैं, जैसे शौचालय का उपयोग करना, कपड़े पहनना, भोजन करना, आदि।

शैक्षिक दृष्टि से मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थियों को हम तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं:

1) **षिक्षित करने योग्यः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि लगभग 50-70 होती है।

2) **प्रषिक्षित करने योग्यः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि लगभग 20-49 होती है।

3) **अभिरक्षा से संबंधितः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि 20 से कम होती है।

उपर्युक्त सभी वर्ग मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थियों के कार्यकरण के स्तर पर आधारित हैं। इससे हमें यह निष्चित करने में सहायता मिलती है कि षिक्षार्थी को किस प्रकार की षिक्षा और सहायता प्रदान करने की आवष्यकता है।

षिक्षक की भूमिका

मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थियों की सहायता हेतु एक षिक्षक जिन रणनीतियों का उपयोग कर सकता है, उनमें से कुछ सामान्य रणनीतियाँ निम्नलिखित हैं:

- प्रदर्षन पर अधिक बल दें न कि मात्र मौखिक निर्देषों पर।
- नई सूचनाओं को चित्रों द्वारा प्रस्तुत करें और षिक्षार्थियों को सामग्री के साथ कार्य करने का अवसर प्रदान करें।
- बड़े कार्यों को छोटे-छोटे चरणों में विभाजित करें।
- षिक्षार्थियों को तत्काल प्रतिपुष्टि दें।
- षिक्षार्थियों को विभिन्न सामूहिक क्रियाकलापों या क्लब गतिविधियों में संलग्न करें।

5.7.2 श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी

श्रवण-क्षीणता या श्रवण-हानि ध्वनियों को पहचानने और समझने की योग्यता में पूर्ण अथवा आंषिक कमी है। अक्षमता वाले व्यक्तियों की षिक्षा अधिनियम (आई डी ई ए, 1992) के अनुसार "श्रवण-क्षीणता चाहे पूर्ण या अस्थिर हो, बच्चे के शैक्षिक कार्यक्रम को विपरीत रूप से प्रभावित करती है।" उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि श्रवण-क्षीणता संप्रेषण में समस्याएँ उत्पन्न करती है। श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थियों को बोलना और भाषा सीखने के लिए अतिरिक्त समय की आवष्यकता होती है।

शैक्षिक उद्देष्यों के लिए श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थियों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1) कम श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी - 25 - 50 डेसिबल

2) मध्यम श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी - 51 - 70 डेसिबल

3) तीव्र श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी - 71 - 90 डेसिबल

4) गंभीर श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थी - 91 डेसिबल और इससे अधिक

षिक्षक की भूमिका

कम और मध्यम श्रवण-क्षीणता वाले षिक्षार्थियों को सामान्य विद्यालयों में प्रवेष दिया जा सकता है और षिक्षकों की सहायता एवं समर्थन द्वारा षिक्षित किया जा सकता है। इन षिक्षार्थियों की सहायता के लिए षिक्षक द्वारा उपयोग हेतु कुछ रणनीतियाँ निम्नलिखित हैं:

- आधुनिक उपयुक्त श्रवण सहायक उपकरण (एड) के उपयोग की अनुमति दें।
- षिक्षक के पास तथा अन्य षिक्षार्थियों के पास आगे की पंक्ति में इन षिक्षार्थियों के बैठने की व्यवस्था करें।

- इन षिक्षार्थियों को पहले ही षिक्षण टिप्पणियाँ प्रदान करें ताकि वे इन्हें पाठ की चर्चा कक्षा में होने से पूर्व पाठ को पढ़ सकें।
- दृश्य चित्रों द्वारा नई सूचना प्रदान करना और प्रदर्षन पर अधिक बल देना।

5.7.3 दृश्य-क्षीणता वाले षिक्षार्थी

दृश्य-क्षीणता को दृष्टि हानि या दृष्टि-क्षीणता भी कहते हैं। इसे दृष्टि संबंधी किसी भी कार्य की हानि के माध्यम द्वारा मापा जाता है, जैसे तीक्ष्णता, रंग-दृष्टि या द्विनेत्री दृष्टि, आदि।

अक्षमता वाले व्यक्तियों के अधिनियम (पी.डब्ल्यू.डी. एक्ट, 1995) के अनुसार, "अंधता एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है, जहाँ एक व्यक्ति निम्नलिखित में से किसी भी स्थिति को ग्रस्त होः

1) दृष्टि की सम्पूर्ण अनुपस्थिति
2) दृष्टि-तीक्ष्णता 6/60 या बेहतर आँख में लैंसों में सुधार के बाद भी 20/200 (स्नेलेन) से अधिक न हो।
3) दृष्टि क्षेत्र 20 डिग्री या उससे भी कम कोण तक सीमित हो।"

भारत में दृश्य-क्षीणता की परिभाषा को अक्षमता वाले व्यक्ति (समान अवसर, अधिकारों का संरक्षण और संपूर्ण प्रतिभागिता) अधिनियम, 1995 से लिया गया है। इसके अनुसार, हम दृश्य-क्षीणता वाले षिक्षार्थियों को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैंः

क) **अंधापन**ः यह उस स्थिति को संदर्भित करता है जहाँ एक व्यक्ति निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति से ग्रसित होः

   – दृष्टि की संपूर्ण अनुपस्थिति।
   – दृष्टि-तीक्ष्णता 6/60 या बेहतर आँख में लैंसों में सुधार के बाद भी 20/200 (स्नेलेन) से अधिक न हो।
   – दृष्टि-क्षेत्र 20 डिग्री या उससे कम कोण तक सीमित न हो। दृश्य-क्षीणता और दृष्टि क्षेत्र का आकलन अंधापन निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

ख) **कम दृष्टि**ः अक्षमता वाले व्यक्ति अधिनियम, 1995 (पी.डब्ल्यू.डी. एक्ट), 1995 में कम दृष्टि को एक अलग वर्ग में रखा गया है और इसे निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया गया हैः

"कम दृष्टि वाले व्यक्ति" का अर्थ है - उपचार या मानक अपवर्तक सुधार के बाद भी दृश्य कार्यकरण की क्षीणता वाला व्यक्ति। परंतु जो उपयुक्त सहायक उपकरणों के साथ कार्यों के नियोजन और कार्यान्वयन के लिए दृष्टि का उपयोग करता है या दृष्टि के उपयोग की क्षमता रखता है।

षिक्षक की भूमिका

इन षिक्षार्थियों की सहायता हेतु एक षिक्षक जिन रणनीतियों का उपयोग कर सकता है, उनमें से कुछ सामान्य रणनीतियाँ निम्नलिखित हैंः

– अंध षिक्षार्थियों के लिए ब्रेल का उपयोग करें।
– दृश्य-क्षीणता वाले षिक्षार्थियों के लिए सामान्य कक्षाकक्षों की निर्देषन सामग्री और कक्षाकक्ष के वातावरण में परिवर्तन करें।

– कम दृष्टि वाले षिक्षार्थियों को पढ़ने की ऐसी सामग्री प्रदान करें जो बड़े अक्षरों वाले प्रिंट की हों।

– उनके लिए आगे की पंक्ति में षिक्षक और अन्य षिक्षार्थियों के साथ बैठने की व्यवस्था करें।

– कक्षाकक्ष में कम्प्यूटर के उपयोग की अनुमति दें ताकि कम दृष्टि वाले षिक्षार्थी स्क्रीन को बड़ा करने वाला, स्क्रीन रीडर/स्पीच सिंथेसाइजरर का उपयोग अधिगम के लिए कर सकें।

– कम दृष्टि वाले उपकरणों की अनुमति दें।

– श्रव्य-अधिगम सामग्री का उपयोग करें।

5.7.4 विशिष्ट अधिगम अक्षमताएँ

विशिष्ट अधिगम अक्षमता को "बोलने या लिखित भाषा को समझने या उपयोग करने में संलग्न मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में अव्यवस्था" के रूप में परिभाषित किया गया है। जो षिक्षार्थी इस अव्यवस्था से ग्रसित है, यद्यपि उसके पास औसत या औसत से अधिक बुद्धि होती है, परंतु पढ़ने, सुनने, बोलने, लिखने, बताने या गणितीय गणना करने और ध्यान केन्द्रित करने में अपूर्ण योग्यता होती है। यहाँ हम डिसकेलकुलिया, डिसलेक्सिया, डिसग्राफिया और डिसप्रेक्सिया के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

डिसकेलकुलिया

डिसकेलकुलिया एक गणितीय अक्षमता है। इसमें षिक्षार्थी को गणित सीखने या समझने में कठिनाई होती है। कई चिन्ह हैं, जो इंगित करते हैं कि षिक्षार्थी में डिसकेलकुलिया है। उदाहरण के लिए डिसकेलकुलिया वाले षिक्षार्थी कोः

- गिनने में कठिनाई हो सकती है।
- वस्तुओं को व्यवस्थित या क्रमबद्ध तरीके से लगाने में कठिनाई हो सकती है।
- भिन्नों को समझाने में कठिनाई हो सकती है।
- गणितीय कार्य में चरणों को कैसे उपयोग करें, नहीं समझ पाते।
- मात्रा, स्थानीय मान, धनात्मक और ऋणात्मक मान की अवधारणाओं को समझने में कठिनाई हो सकती है।
- माह, सप्ताह, दिन आदि को समझने में कठिनाई हो सकती है।
- जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग में कठिनाई हो सकती है।

षिक्षक की भूमिका

डिसकेलकुलिया वाले षिक्षार्थी की सहायता के लिए षिक्षक जिन सामान्य रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, वे निम्नलिखित हैंः

- गणित के ऐसे उदाहरणों का उपयोग करें जो गणित को वास्तविक जीवन से जोड़ें, जैसे– फलों, घरेलू वस्तुओं, फूलों, आदि को गिनना।
- गणित संबंधी खेल खिलवाएँ जो अंकों को दैनिक गतिविधि से जोड़ें और षिक्षार्थी गणित के साथ स्वयं को सुखद अनुभव करें।
- गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए समस्या-समाधान विधि का उपयोग करें।
- समस्याओं का हल करते समय दृश्य सामग्री का उपयोग करें।

डिसलेक्सिया

पढ़ने में कठिनाई को डिसलेक्सिया कहलाती है। इसे पठन में अक्षमता भी कहा जा सकता है। कई चिन्ह हैं जो इंगित करते हैं कि षिक्षार्थी डिसलेक्सिया से ग्रसित है। डिसलेक्सिया वाले षिक्षार्थी कोः

- शब्दों को पढ़ने, लिखने और बताने में कठिनाई हो सकती है।
- बोलने में कठिनाई हो सकती है, जैसे-जैसे वे एक पठन सामग्री को जल्दी नहीं बल्कि धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं।
- परिचित शब्दों को पुनःस्मरण करने में कठिनाई हो सकती है।
- सुनने और पढ़कर समझने के बीच असमानता प्रदर्षित कर सकते हैं।

षिक्षक की भूमिका

डिसलेक्सिया वाले षिक्षार्थियों की सहायता के लिए षिक्षक जिन सामान्य रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, वे निम्नलिखित हैंः

- अपनी रुचि के अनुसार विद्यार्थियों को विभिन्न पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे, कॉमिक्स, कहानी की पुस्तकें, खेलों पर समाचारपत्र के लेख, सिनेमा आदि। विद्यालय में एक शांत स्थान और अतिरिक्त समय उन्हें पढ़ने के लिए प्रदान करें।
- षिक्षार्थी को पठन विशेषज्ञ के पास संदर्भित करें।
- ऐसी पुस्तकों का उपयोग करें जिनके प्रिंट बड़े आकार के और पंक्तियों के बीच खाली स्थान अधिक हो।
- ऐसी षिक्षण विधियों का उपयोग करें जो अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ावा दें और रटने वाले अधिगम की उपेक्षा करें।
- कक्षाकक्ष में कम्प्यूटर की अनुमति दें।
- वर्ड प्रोसेसर और स्पेल चैकर के उपयोग की अनुमति दें जो उन षिक्षार्थियों के लिए सहायक होगा जिन्हें पढ़ने में और शुद्ध वर्तनी में कठिनाई है।
- पठन सामग्री को छोटी इकाइयों में प्रस्तुत करें।

डिसग्राफिया

डिसग्राफिया लेखन अक्षमता है। कई लक्षण हैं जो इंगित करते हैं कि षिक्षार्थी डिसग्राफिया वाला है। उदाहरण के लिए, डिसग्राफिया वाले षिक्षार्थी कोः

- सही वर्तनी (स्पेलिंग) लिखने में कठिनाई हो सकती है।
- कागज पर खराब स्थानिक नियोजन प्रदर्षित कर सकता है (पंक्तियों और हाषियों का व्यर्थ प्रयोग)।
- बड़े (अपरकेस) और छोटे (लोवरकेस) अक्षरों को मिश्रित कर सकता है।
- अक्षरों को बनाने में कठिनाई हो सकती है (असंगत आकृति और आकार)।
- पंक्तियों में लिखने में कठिनाई हो सकती है।
- विचारों को संगठित करने में कठिनाई हो सकती है।
- एक ही समय में चिंतन करने और लेखन में कठिनाई हो सकती है।

षिक्षक की भूमिका

डिसग्राफिया वाले षिक्षार्थियों की सहायता के लिए षिक्षक जिन सामान्य रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं:

- लिखित परीक्षा के स्थान पर मौखिक परीक्षा संचालित करें।
- लिखित टिप्पणियाँ के स्थान पर टेप रिकार्डर के प्रयोग की अनुमति दें।
- लिखित कार्य को कम करने के लिए मुद्रित टिप्पणियाँ (प्रिंटेड नोट्स) प्रदान करें।
- विशेष रूप से निरूपित लेखन उपकरणों के उपयोग की अनुमति दें।
- विद्यालय-कार्य या परीक्षा पूर्ण करने के लिए षिक्षार्थी को अतिरिक्त समय प्रदान करें।

डिसप्रेक्सिया

डिसप्रेक्सिया, चालन समन्वयन की कठिनाई या चालन (मोटर) अधिगम की कठिनाई है। ये चालन कौषल को प्रभावित कर सकते हैं। जैसे हाथ की गतियाँ जो स्पष्ट रूप से लिखने के लिए आवष्यकता होती हैं, मुँह और जीभ की गतियाँ जो शब्द के सही उच्चारण के लिए आवष्यक हैं, आदि। यद्यपि, यह अधिगम अक्षमता नहीं है, यह सामान्य रूप से डिसलेक्सिया या डिसकेलकुलिया के साथ ही उपस्थित होती है। अन्य कई लक्षण हैं जो इंगित करते हैं कि षिक्षार्थी डिसप्रेक्सिया वाला है। उदाहरण के लिए, डिसप्रेक्सिया वाले षिक्षार्थी को:

- वस्तुओं को पकड़ने में कठिनाई हो सकती है।
- संतुलन और मुद्रा संबंधी समस्याओं का सामना कर सकता है।
- पेंसिल और पैन पकड़ने में कठिनाई हो सकती है और इसके कारण वह अक्षर लिखने के लिए अधिक समय ले सकता है।
- ऐसे खेलों की उपेक्षा करने का प्रयास करता है जिसमें आँख और हाथ के समन्वयन की आवष्यकता होती है।
- निर्देषों का अनुसरण और याद रखने में कठिनाई हो सकती है।

षिक्षक की भूमिका

डिसप्रेक्सिया वाले षिक्षार्थी की सहायता के लिए एक षिक्षक जिन सामान्य रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं:

- नवीन कार्य में भाग लेने के लिए षिक्षार्थी की प्रषंसा करें।
- बहुत कम प्रगति के लिए भी षिक्षार्थी को पुरस्कार दें।
- षिक्षार्थी को कक्षाकक्ष में कम्प्यूटर का उपयोग करने की अनुमति दें क्योंकि उसके लिए लिखने की तुलना में टंकण अधिक सरल हो सकता है।
- षिक्षार्थी को शारीरिक गतिविधि के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें चालन कौषलों के विकास में सहायक हो सकते हैं। उदाहरण के लिए - तैरना, सरल खेल खेलना जैसे छुप्पा-छुप्पी, भूल-भुलैया आदि।
- षिक्षार्थी को औक्यूपेषनल थरैपी और स्पीच थरैपी के लिए संदर्भित करें।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5) शैक्षिक कार्यों के लिए मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थियों को कैसे वर्गीकृत किया गया है?

....

....

....

....

....

6) एक षिक्षार्थी के रूप में दृश्य क्षीणता वाले षिक्षार्थियों के लिए दो संभव रणनीतियाँ सुझाइए।

....

....

....

....

....

7) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

क) चालन समन्वयन कठिनाई जो .... रूप में जानी जाती है, जो सहज रूप से .... या .... के साथ रहती है।

ख) डिसकेलकुलिया एक .... अक्षमता है।

ग) .... लेखन की अक्षमता है।

घ) .... पठन की अक्षमता है।

5.8 सारांष

षिक्षार्थी की सामाजिक स्थितियों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में बहुत विविधता पाई जाती है और उसी के अनुसार उनका अधिगम संपन्न होता है। षिक्षार्थियों के अधिगम में अंतर के मुख्य कारक हैंः परिवार की संरचना, विद्यालय का प्रकार, भौगोलिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक स्तर, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा आदि।

विद्यार्थी के स्थान पर हमें षिक्षार्थी शब्द का उपयोग करना चाहिए। विद्यालयों में हमें ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जो षिक्षार्थी को अधिक महत्व दें, न कि विद्यार्थी पर। अच्छे षिक्षार्थियों की सराहना के लिए एक ऐसे अधिगम वातावरण को विकसित करने की आवष्यकता है, जहाँ प्रत्येक बच्चे को एक षिक्षार्थी के रूप में पहचाना जा सके। ऐसा अधिगम वातावरण जो षिक्षार्थी को अपने षिक्षार्थी के बारे में गहन चिंतन के लिए दिषा

प्रदान कर सके। षिक्षार्थियों को उनकी अधिगम शैलियों के आधार पर पहचानने और उसके अनुसार उन्हें सहायता प्रदान करने की आवष्यकता है। इस इकाई में यह भी सुझाव दिया गया है कि एक षिक्षक के रूप में हमें विभिन्न प्रकार के भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थियों के बारे में जागरूक होना चाहिए अर्थात् वे षिक्षार्थी जो यद्यपि औसत और औसत से अधिक बुद्धि रखते हैं, तथापि उन्हें अधिगम में कुछ कठिनाइयाँ होती हैं। वे रचनात्मक भी हो सकते हैं परंतु वे पढ़ने, लिखने और गणित में अच्छा निष्पादन करने में असमर्थ हो सकते हैं।

5.9 इकाई के अंत में अभ्यास

1) अपने निकट के सरकारी विद्यालय का भ्रमण कीजिए और षिक्षार्थियों में विविधता का अवलोकन कीजिए। षिक्षार्थी अनुकूल अधिगम वातावरण के विकास में इन विविधताओं के उपयोग करने हेतु षिक्षकों को सुझाने के लिए सुझावों की एक तालिका बनाइए।

2) अपनी कक्षा में आप विभिन्न प्रकार के भिन्न रूप से योग्य षिक्षार्थियों की पहचान कैसे करेंगे? व्याख्या कीजिए। इन षिक्षार्थियों को अपनी कक्षा में संलग्न करने के लिए आप कौन-सी रणनीतियाँ अपनाएँगे?

5.10 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

ब्लैंकषिप, सी. (1981). मेनस्ट्रीमिंग स्टूडेंट्स विद लर्निंग एंड बिहेविरहल प्रोब्ल्म्स, न्यूयॉर्कः होल्ट, रिनेहर्ट और वॉटसन।

बॉयड, एफ.; ब्रोक, सी.एच., एवं रोजेनडल, एम.एस. (2004), *मल्टीकल्चरल लिटरेसी एंड लैंग्वेजः कान्टेक्स्ट एंड प्रैक्टिसेस*, न्यू यॉर्क : गिलफोर्ड प्रैस।

जंगीरा, एन. के. एवं मुखोपाध्याय, एस. (1987). *प्लानिंग एंड मैनेजमेंट ऑफ आई.ई.डी. प्रोग्रामः ए हैंडबुक*, नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।

मनीवन्नम एम. (2011). *साइकोलॉजी ऑफ लर्निंग एंड ह्यूमन डेवलेपमेंट*, हैदराबादः नीलकमल पब्लिकेषन्स प्राइवेट लिमिटेड।

शर्मा, पी. एल. (1988). *ए टीचर्स हैंडबुक ऑन आई ई डीः हैल्पिंग चिल्ड्रन विद स्पेषल नीड्सः*, नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।

यूनेस्को (2011). एड्रेसिंग सोषियोकल्चरल डायवर्सिटी थ्रू दि कैरीकुलम, ई-फोरम 2011, डिस्कषन पेपर, http://www.ibe.unesco.org/fileadmn/user-upload/cops/ newdocuments/ 2001/e-focus/eng_e-forum2011_discussion_paper_ sociocultural_ diversity_&_ curriculum.pdf से 29 मार्च 2016 को लिया गया।

वेबसाइट्स

http://www.disabled_world.com/disability/types/hearing

http://www.greatschools.org/gk/articles/culturaldifferences_student_performance.

http://www.jhu.edu/disabilities/faculty/guidelines.html.

5.11 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) पारिवारिक संरचना, विद्यालय का प्रकार, भौगोलिक स्थान, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा।

2) क) गलत   ख) सही

3) क्योंकि प्रत्येक षिक्षार्थी की अधिगम की स्वाभाविक इच्छा और क्षमता होती है, परंतु उनकी आकांक्षाएँ, आवष्यकताएँ और अधिगम शैली भिन्न होती हैं।

4) क) 1) षिक्षक पारम्परिक षिक्षण विधियों का उपयोग कर सकते हैं। जबकि भाषण को न्यूनतम प्रभावी विधि माना जाता है परंतु श्रवणिक षिक्षार्थी सुनकर सर्वाधिक सीखते हैं।

2) षिक्षण अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध षिक्षाविदों के अभिलेखित (रिकार्डेड) भाषणों का उपयोग कर सकते हैं।

ख) 1) षिक्षक षिक्षण के लिए अवधारणा मानचित्रण विधि का उपयोग कर सकता है।

2) षिक्षक चार्ट्स, चित्रों, रेखाचित्रों, वीडियोज, ओवरहैड ट्रान्सपेरेन्सीज का उपयोग कर सकते हैं।

ग) 1) समस्या-समाधान विधि

2) परियोजना विधि

5) शैक्षिक कार्यों के लिए हम मानसिक मंदता वाले षिक्षार्थियों को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैंः

1) **षिक्षा के योग्यः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि लगभग 50-70 होती है।

2) **प्रषिक्षण के योग्यः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि लगभग 20-49 होती है।

3) **अभिरक्षा से संबंधितः** वे षिक्षार्थी जिनकी बुद्धिलब्धि 20 से कम होती है।

6) 1) षिक्षक अन्धता वाले षिक्षार्थियों के लिए ब्रेल का उपयोग कर सकता है।

2) षिक्षक कक्षाकक्ष में कम्प्यूटर के उपयोग की अनुमति दे सकता है ताकि कम दृष्टि वाले षिक्षार्थी स्क्रीन एनलार्जर/स्पीच सिन्थेसाइजर का उपयोग अधिगम के लिए कर सकते हैं।

7) क) डिसप्रेक्सिया, डिस्लेक्सिया अथवा डिस्केल्कुलिया

ख) गणितीय

ग) डिसग्राफिया

घ) डिसलेक्सिया

इकाई 6 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-I

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देष्य

6.3 बुद्धि का प्रत्यय

6.4 बुद्धि तथा अधिगम में इसकी भूमिका

6.5 बुद्धिलब्धि, सांवेगिक गुणक, आध्यात्मिक गुणक का बोध

  6.5.1 बुद्धिलब्धि

  6.5.2 सांवेगिक गुणक

  6.5.3 आध्यात्मिक गुणक

6.6 बहु-बुद्धि

6.7 व्यक्तित्व का प्रत्यय

6.8 व्यक्तित्व एवं अधिगम

6.9 सारांष

6.10 इकाई के अंत में अभ्यास

6.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

6.12 बोध प्रष्नों के उत्तर

6.1 प्रस्तावना

आपने कई बार इस प्रकार की टिप्पणी सुनी होगी जैसे, "अमित ने इस बार अपने सेमेस्टर को 'A' श्रेणी में उत्तीर्ण किया है, वह बहुत बुद्धिमान है", परंतु मैं उसके जैसा व्यक्तित्व नहीं पाना चाहता", "रेहान का विद्यालय प्रदर्षन ठीक नहीं है परंतु वह वस्तुओं को समझने की व्यावहारिक बुद्धि रखता है";

"रोज़ी बीजगणित में अनुत्तीर्ण रही परंतु जब बात कार की मरम्मत और जुगाड़ की हो तो वह अनुभवी और वास्तविक व्यावसायिक है" आदि।

इन सभी टिप्पणियों का तात्पर्य है मानसिक, सांवेगिक तथा वैयक्तिक क्षमता पर कोई धारणा या राय क्या उन गहरे प्रत्ययों को दर्षाते हैं जो बुद्धि अथवा व्यक्तित्व का गठन करते हैं? जब हम किसी व्यक्ति को बुद्धिमान कहते हैं या उसका व्यक्तित्व आकर्षक है? तो वास्तव में इसका अर्थ क्या है, क्या हम उसकी श्रेणी के आधार पर अमित को समुचित रूप से बुद्धिमान कह सकते हैं तथा इस तथ्य को अनदेखा करें कि उसका सामाजिक कौषल निम्न स्तर का प्रतीत होता हो? क्या रेहान वास्तव में बुद्धिमान है? क्या हम तार्किक रूप से कह सकते हैं कि रोज़ी यांत्रिकी में बुद्धिमान है और बीजगणित में नहीं? इस इकाई में बुद्धि और व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर हम विचार और तर्क-वितर्क करेंगे तथा अधिगम से इनके संबंध को समझेंगे। ये आपको अपने षिक्षार्थियों को समझने में सहायता करेंगे।

6.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आपः

- बुद्धि के प्रत्यय को समझ सकेंगे;
- बुद्धि के बारे में भ्रांतियाँ तथा अधिगम में उसकी भूमिका की विवेचना कर सकेंगे;
- बुद्धिलब्धि (Intelligence Quotient - IQ), सांवेगिक गुणक (Emotional Quotient – EQ), आध्यात्मिक गुणक (SQ) की तुलना कर सकेंगे;
- बहु-बुद्धि के सिद्धान्त की व्याख्या तथा अधिगम में उसका निहितार्थ जान सकेंगे;
- व्यक्तित्व से जुड़े मिथकों की विवेचना कर सकेंगे; और
- षिक्षार्थियों के लिए अर्थपूर्ण अधिगम सुगम बना सकेंगे।

6.3 बुद्धि का प्रत्यय

बुद्धि इतना जटिल प्रत्यय है कि इसकी परिभाषा पर मनोवैज्ञानिकों में आपसी सहमति नहीं है। जिसे हम "बुद्धि" कहते हैं उसे हम कई तरह से अभिव्यक्त कर सकते हैं। एक विद्यालय का षिक्षक उस विद्यार्थी को बुद्धिमान मानता है जो अपना पाठ जल्दी से याद कर लेता है। एक कारखाने वाला फौरमैन अपने प्रषिक्षु को तब एक होनहार युवा मानता है जब वह अपने हाथों और औजारों के साथ काबिल और कुषल हो। एक स्टोर मैनेजर अपनी सामान बेचने वाली महिला को तभी निपुण और योग्य समझता है जब वह तुरंत एवं पूर्वानुमान से अपने ग्राहकों की थाह ले ले तथा उनकी जरूरतों को पूरा करे। षिक्षक, फौरमैन तथा स्टोर मैनेजर सब इस बात पर सहमत होंगे कि वे "दक्षता" का जो विवरण दे रहे हैं, उसे वे बुद्धिमान व्यवहार कह सकते हैं। रोजमर्रा की परिस्थितियों अथवा रोजमर्रा की परेषानियों को दक्षता से हल करना ही शायद "सामान्य बुद्धि" की एक व्यावहारिक परिभाषा है।

क्रियाकलाप 1

आगे बढ़ने से पहले चलिए एक अभ्यास करते हैं। कुछ योग्यताओं और क्षमताओं की अभिसूची बनाए जो यह जानने में सहायता करें कि कोई षिक्षार्थी बुद्धिमान है या नहीं।

....

....

....

....

....

....

इन सभी कथनों को जानने के बाद और निम्न स्पष्टीकरण पढ़ने पर आप अपनी "बुद्धि" संबंधित अवधारणा पर पुनः विचार कर सकते हैं।

आपने कई ऐसी परिभाषाएँ देखी होंगी जो अन्तर्दृष्टि, स्मृति, तर्कबुद्धि तथा कल्पनाषक्ति जैसी बौद्धिक प्रक्रियाओं की प्रभाविकता पर केन्द्रित हों। अतः बुद्धि को इस प्रकार भी परिभाषित कर सकते हैं- **अमूर्त विचार करने की योग्यता, अधिगम करने की क्षमता** तथा **वास्तविकता व तथ्य आधारित उत्तर देने की योग्यता**।

परंतु इसे **अपने वातावरण से समायोजन** करने की क्षमता भी कहा गया है तथा अन्य कई परिभाषाएँ दी गई हैं। अधिकतर परिभाषाएँ बुद्धि की विचार और अवधारणा के साथ **कुषलता** पर केन्द्रित हैं। मुख्यतः ये शैक्षिक निर्देषित हैं तथा शब्दों, संख्याओं, सूत्रों तथा उनके अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों में इनके अर्थ निहित हैं। इसी प्रकार से बुद्धि को हम उन मानसिक प्रक्रियाओं में कुषलता पर मूल्यांकित कर सकते हैं जो अमूर्त चिन्हों को सम्बोधित करती हों। फिर भी बुद्धि को **पूर्णतः "षैक्षिक व अमूर्त में कुषलता" से परिभाषित नहीं कर सकते।** परिभाषा के विस्तृत मानकों के अनुसार शारीरिक कौषल, साथ ही साथ मूर्त/ठोस वस्तुओं और उपकरणों के साथ कुषलता भी सम्मिलित है।

बुद्धि की एक और अधिक व्यापक परिभाषा के अनुसार एक व्यक्ति बुद्धिमान तभी माना जा सकता है जब वह अपने वातावरण के सभी तत्वों के साथ कितनी प्रभाविता के साथ संबंधित होता है; **एक व्यक्ति की बुद्धिमत्ता का मूल्यांकन इस प्रकार से लगाया जा सकता है कि वह कैसे लोगों, वस्तुओं तथा विचारों से पेष आता है।** अतः **सामाजिक-सांवेगिक** तत्व भी जोड़ दिया गया है।

अक्सर इन सभी परिभाषाओं की बेहतर और अच्छी बातें तथा गुण साथ-साथ सम्मिलित होते हैं; जैसे अक्सर कोई व्यक्ति जिसका अमूर्त बौद्धिक स्तर अच्छा हो उसका सामाजिक अवबोध भी अच्छा होता है। व्यक्ति, जिसकी यांत्रिकी बुद्धि अच्छी है तो उसकी अमूर्त बुद्धि स्तर में औसत से ऊपर हो सकती है। किन्तु कोई व्यक्ति अगर कुछ कार्यों में बुद्धिमान है, तो वह कुछ में नहीं भी हो सकता है। वह गणित में बहुत अच्छा हो सकता है परंतु वित्तीय कार्यों में नहीं हो सकता या किसी मापन उपकरण को उपयोग करने में निपुण न हो। अगर कोई श्रेष्ठ वास्तुकार इतना आत्मकेन्द्रित हो कि वह अपने दोस्तों को अपने से दूर कर दे, तो उसका व्यवहार वास्तव में बुद्धिमत्ता नहीं है। एक बालक अच्छा षिक्षार्थी हो सकता है परंतु अगर वह अनुचित व्याकुलता और द्वंद से भरा है तो वह हर समय नाखुष और प्रभावहीन रहेगा। चाहे वह जितना भी बुद्धिमान हो, कुछ मामलों में ऐसे लोग समरूप अथवा एकसमान नहीं रह पाते। साथ ही साथ यह जानना भी असंभव है कि एक व्यक्ति कैसे कार्य करता है, अर्थात उसके व्यवहार को मानसिक, सामाजिक तथा अन्य तत्वों को अलग करना।

संभवतः **अमूर्त बुद्धि का सर्वोच्च पहलू काल्पनिक, मौलिक तथा सृजनात्मक कार्य में पाया जाता है;** तथा निम्न पहलू साधारण गतिविधियों का केवल अनुकरण करना है। संगीतकार जिसने उत्कृष्ट संगीत को संगीतबद्ध किया हो वह उस व्यक्ति से ज्यादा बुद्धिमान है जो उस धुन को ढोल पर थपथपा कर निकाल ले। व्यक्ति जो रासायनिक अभिक्रिया की खोज कर लेता है वह उस व्यक्ति से ज्यादा बुद्धिमान है जो सरल सूत्रों को समझ लेता है।

निःसंदेह उच्च श्रेणी और विकसित विज्ञान को समझने के लिए भी उच्च स्तर की बुद्धि चाहिए परंतु वे विद्वान जिन्होंने उनके प्रत्ययों की खोज एवं विकास किया है उनसे ज्यादा बुद्धिमान हैं। अतः यह जानना जरूरी है कि व्यक्ति की बुद्धि की प्रकृति तक सीमा का निर्धारण करने के लिए उसके व्यवहार का मूल्यांकन करना उपयोगी है। आइए, अब कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर दृष्टि डालते हैंः

- बुद्धि को हम एक व्यक्ति की योग्यता का क्रियात्मक प्रभाव कह सकते हैं;
- षिक्षार्थियों को निर्दिष्ट की गई इन योग्यताओं और क्षमताओं, अमूर्त, सामाजिक, यांत्रिकी, संगीतात्मक, क्रीडात्मक, भाषात्मक और अन्य, के बारे में षिक्षक की जानकारी होनी चाहिए;

- किसी भी मानव मस्तिष्क की विशेषता उसके कार्य करने की क्षमता और गति से लगाई जा सकती है;
- विभिन्न मानव योग्यताओं का सह-संबंध उन समान तत्वों की मात्रा से है।
- प्रतिभाषाली व्यक्ति में उच्च स्तरीय बुद्धि होती है किन्तु ज्यादा बुद्धिमान व्यक्ति जरूरी नहीं कि प्रतिभाषाली हो।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) सामाजिक-सांवेगिक बुद्धि क्या है?

....

....

....

....

....

....

6.4 बुद्धि तथा अधिगम में इसकी भूमिका

आपने महसूस किया होगा कि कक्षा में षिक्षार्थियों की क्षमताओं और अभिवृत्तियों में भिन्नता होती है। कुछ बच्चे ज्यादा याद कर लेते हैं तथा रुचि दिखाते हैं वहीं उनके कुछ साथियों को कक्षा के न्यूनतम स्तर तक पहुँचने में कठिनाई होती है तथा वे कार्य कम अथवा बिल्कुल भी उत्साह से कार्य नहीं करते। विचार हेतु कुछ निम्नलिखित मुद्दे हैं:

- यह प्रायः कहा जाता है कि बुद्धि परीक्षण में प्राप्त अंक विद्यालय में सफलता से संबंधित हैं, किन्तु प्रष्न यह है कि सह-संबंध कितना नजदीक है।
- क्या यह सम्भव है कि एक पाँचवी कक्षा के षिक्षार्थी का परीक्षण कर उसके परिणाम का पूर्वानुमान लगाने के लिए प्रयोग कर विषुद्धता से पता कर सकें कि वह बारहवीं कक्षा में कैसा प्रदर्षन करेगा?
- एक छोटे से ग्रामीण विद्यालय का उत्कृष्ट षिक्षार्थी की तुलना एक विपरीत नामचीन शहरी विद्यालय के षिक्षार्थी से कैसे की जाए?
- हाई स्कूल की तुलना में कॉलेज की षिक्षा पूरी करने के लिए वास्तव में कितनी बौद्धिक क्षमता की जरूरत है? तथा क्या एक षिक्षार्थी को अपने क्षेत्रीय कालेज में उतनी ही उपस्थिति चाहिए जितनी "ऑक्सफोर्ड" और "येल" में जरूरत होती है।
- क्या आगे के जीवन में व्यक्तिगत खुषी प्राप्त करने की औसत से अधिक संभावना, उच्च क्षमता तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि से सुनिष्चित होती है?
- क्या बुद्धि परीक्षण मापन द्वारा यह सुनिष्चित करता है कि जिस षिक्षार्थी में विशेष रूप से उच्च क्षमता होती है उसे ही शैक्षिक सफलता मिलती है? अथवा उसके अपने शैक्षिक जीवन में विफल होने या विक्षिप्त तथा अपने निजी जीवन में पूरा असमायोजित होने की संभावना है।

ऊपर दिए गए मुद्दों के साथ-साथ "बुद्धि" को लेकर कई भ्रांतियाँ भी हैं जिनकी चर्चा नीचे की गई हैं:

- एक व्यक्ति का बौद्धिक स्तर निर्धारित होता है।
- बुद्धिमत्ता बढ़ाने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता।
- क्या बुद्धि का वास्तव में मापन किया जा सकता है?
- बुद्धिलब्धि, बुद्धि का मापन नहीं करती।

हम इन मुद्दों तथा अधिगम में इनके प्रभावों पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्ष करते हैं:

- प्रभावषाली अधिगम तथा वैयक्तिक सफलता के लिए उत्तरदायी मूलभूत कारक, जैसे, उपलब्धि की प्रवृत्ति, सांवेगिक स्वास्थ्य, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा जिज्ञासा को ध्यान में रखकर ही मानसिक क्षमता को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- बुद्धि परीक्षण आधारित अंकों का शैक्षिक विषयों के अंकों से औसत सह-संबंध, षिक्षार्थी की अध्ययन की अलग-अलग आदतों, अंकन में अषुद्धता और त्रुटि तथा परीक्षण प्राप्तांक में अविष्वसनीयता की वजह से है।
- विशेष विषय जैसे कला, कपड़ा-उद्योग, काष्ठकारी तथा अन्य कौषलों और बुद्धि परीक्षण से सहसंबंध निम्न होता है।
- बुद्धिलब्धि तथा मानसिक आयु, जो किसी मानसिक परीक्षण से किसी के विद्यालय में प्रवेष के लिए ली जाती है, वह बच्चे को निर्देषित करने में सहायक होती है और उससे उसकी अधिगम में प्रगति का पूर्वानुमान भी लगाया जा सकता है।
- बुद्धि परीक्षण यह संकेत अवष्य देता है कि एक षिक्षार्थी क्या कर सकता है, और विद्यालयी प्राप्तांक यह बताते हैं कि उसने क्या किया है, अतः शायद दोबारा भी करेगा। षिक्षार्थी, जो दोनों में अच्छा है अक्सर प्रगति करता है और जो नहीं है वह क्षमता तथा उपलब्धि दोनों में कम रह जाता है।

बुद्धि को परिभाषित करने में विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावषाली व्यवहार भी शामिल है; यह उन क्षेत्रों के लिए वैद्य नहीं है जो एक-दूसरे से संबंधित हैं। अतः ज्यादातर पेषीय, यांत्रिक और सामाजिक क्रियाओं में एक अमूर्त चिन्तन तत्व होता है। एक षिक्षार्थी में थोड़ी क्षमता, अभिवृत्ति, प्रतिभा अथवा सामर्थ्य हो, तो किसी दिए गए क्रियाकलाप में कुछ ईमानदार प्रयासों के पष्चात्, उसके अन्दर उस क्रियाकलाप को करने की क्षमता आ जाती है। जैसे कुछ षिक्षार्थियों को, जिनसे बहुत कम अपेक्षाएँ हैं, उन्हें बेसबॉल, बॉस्केट-बाल, या अन्य खेल खेलने के लिए कई अवसर दिए जाते हैं। कुछ उन खेलों में वैसे ही कमजोर रहते हैं क्योंकि उनमें दौड़ भाग के खेलों के प्रति निम्न अभिवृत्ति होती है परंतु कुछ बहुत तेजी से प्रगति करके अच्छे खिलाड़ी बन जाते हैं, क्योंकि उनमें वह उच्च्च अभिवृत्ति है। उसी प्रकार से जल्द शैक्षिक सफलता षिक्षार्थी में अभिवृत्ति का संकेत देती है।

क्षमता प्राथमिक संकेत वह आयुकाल है जब बच्चा अपनी क्षमताएँ प्रदर्षित करता है। जो बच्चे जल्दी चलना सीख लेते हैं या विद्यालय जाना शुरु करने से पहले पढ़ना सीख लेते हैं, यह हर वह चीज कर लेते हैं, जो औसत आयु से पहले प्रदर्षित हो जाती है, वे उच्च क्षमता का प्रदर्षन करते हैं। अब हम बुद्धि के विभिन्न क्षेत्रों का मूल्यांकन करते हैं जिसमें विभिन्न क्षमताओं और योग्यताओं को ध्यान में रखकर तथा उनको समाविष्ट कर सहयोग लिया जाता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2) "बुद्धि" से संबंधित भ्रांतियाँ किस प्रकार अधिगम को प्रभावित करती है?

....

....

....

....

....

6.5 बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ), आध्यात्मिक गुणक (SQ) का बोध

6.5.1 बुद्धिलब्धि

एक बुद्धि परीक्षण के विकास के दौरान, परीक्षण को विकसित करने वाला, बुद्धि को क्रियाषीलता के आधार पर परिभाषित करता है, तदानुसार परीक्षण में सम्मिलित करने के लिए जिन तथ्यों की आवष्यकता है, उन्हें एकत्रित और व्यवस्थित करता है। इन सबके लिए कुछ मानदण्ड या मानक तय किए जाते हैं।

जब कार्य समाप्त हो जाता है तब वह परीक्षण को प्रषासित करता है ताकि व्यक्ति की "मानसिक आयु" की गणना की जा सके, तथा उसे पूर्व स्थापित मानकों से संबंधित कर प्राप्त करता है। मानसिक आयु जानने के बाद व्यक्ति की कालानुक्रमिक आयु सुनिष्चित की जाती है, तदुपरान्त निम्न सूत्र लगाकर बुद्धिलब्धि ज्ञात की जा सकती हैः

$$\text{बुद्धिलब्धि (IQ)} = \left[\frac{MA}{CA}\right] \times 100$$

MA = मानसिक आयु

CA = कालानुक्रमिक आयु

यह बुद्धिलब्धि बालक की मानसिक विकास दर की ओर संकेत करती है। यह कहा जाता है कि जितनी अधिक बुद्धिलब्धि (IQ) होगी उतनी बेहतर शैक्षिक सफलता मिलेगी परंतु फिर भी ये विवादास्पद विषय है। बुद्धिलब्धि (IQ) मानसिक तेजस्विता की मात्रा के बारे में बताती है तथा मानसिक विकास की लगभग दर बताती है। अगर किसी बड़ी तथा कम उम्र बालक की समान बुद्धिलब्धि (IQ) है, तो बड़े बालक की मानसिक योग्यता अधिक होगी क्योंकि वह बड़ा है और मानसिक आयु ज्यादा है परंतु एक छोटे बालक बुद्धिलब्धि (IQ) काफी उच्च होगी अगर उसकी मानसिक योग्यता बड़ी आयु वाले बालक से अधिक है।

6.5.2 सांवेगिक गुणक

सांवेगिक गुणक (Emotional Quotient - EQ) किसी व्यक्ति की सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक मापन दर्षाता है। शोधकर्त्ताओं ने पाया है कि संज्ञानात्मक बुद्धि (IQ) के अलावा भी कुछ है जो हमें जीवन में सफलता और खुषी देता है और वह **सांवेगिक गुणक** है जो

इस भिन्नता का कारण है। सामान्य बुद्धि के समान ही सांवेगिक गुणक भी किसी की आनुवांषिकता और वातावरणीय कारकों से उसकी अन्तःक्रिया का परिणाम है। सांवेगिक गुणक (EQ) की कुछ परिभाषाएँ निम्नवत् हैं:

"सांवेगिक गुणक (EQ) संवेगों की शक्ति को अपनी जानकारी, सृजनात्मकता, विष्वास और सयोजन के लिए अनुभव करने, समझने और प्रभावषाली ढंग से लागू करने की योग्यता है।"
- एस्थर ओरीओली

"सांवेगिक गुणक (EQ) संवेगों का प्रयोग कर समस्या समाधान करने तथा प्रभावषाली जीवनयापन करने की योग्यता है। सांवेगिक बुद्धि बिना बुद्धि या बुद्धि बिना सांवेगिक बुद्धि किसी समाधान का एक भाग है। पूर्ण समाधान तभी है जब मस्तिष्क हृदय के साथ कार्य करे"। - डेविड केरुसो

6.5.3 आध्यात्मिक गुणक

आध्यात्मिक गुणक (SQ) को परम बुद्धि के रूप में भी जाना जाता है जो हमारे जीवन को मूल्य और अर्थ दे सकने के योग्य बनाता है तथा भौतिकवादी सफलता से आगे कुछ बड़े लक्ष्यों की ओर देखने को प्रेरित करता है, जिसके लिए हम संसार में आए हैं। आध्यात्मिक बुद्धि हमारे आंतरिक मस्तिष्क, जीवन और आत्मा से संबंधित है तथा उसका इस जगत में अस्तित्व से भी संबंध है।

आध्यात्मिक बुद्धि हमारे अंदर निहित एक क्षमता है जो अस्तित्ववाद संबंधी प्रष्नों और चेतना में अंतर्दृष्टि के विभिन्न स्तरों को समझे। आध्यात्मिक बुद्धि आत्मा के प्रति जागरूकता की ओर भी इंगित करती है जिसे क्रमिक विकास में सृजनशील जैविक शक्ति का आधार माना है। आध्यात्मिक बुद्धि एक चेतना की तरह विकसित होती है; किसी वस्तु, जीवन, शरीर, मस्तिष्क, रूह, आत्मा आदि के प्रति एक सदा गहराती जागरूकता। अतः यह व्यक्ति की मानसिक योग्यता से कुछ बढ़कर है। यह व्यक्ति को अपने अस्तित्व के परे तथा स्वयं की आत्मा से जोड़ती प्रतीत होती है। आध्यात्मिक बुद्धि परंपरागत मनोवैज्ञानिक विकास से आगे सप्रत्यय है। स्वयं की जागरूकता के अलावा, इसका आषय ज्ञानातीत से हमारे संबंध, अपने आपसे, धरती से तथा सभी जनजीवन से संबंधों की जागरूकता से भी है। यह कहा जा सकता है कि आध्यात्मिक गुणक (SQ), बुद्धिलब्धि (IQ) तथा सांवेगिक गुणक (EQ) का कुल योग है।

कई वर्षों तक यह माना गया है कि जितनी अधिक बुद्धिलब्धि (IQ) होगी उतनी अधिक ही व्यक्ति की सफलता होगी यही कारण है कि उच्च बुद्धिलब्धि वाले व्यक्ति को शैक्षणिक संस्थानों और स्थापन में वरीयता मिलती है। परंतु कुछ वर्षों उपरान्त, विभिन्न अनुसंधानों के पष्चात यह पाया गया कि कुछ लोगों की बुद्धिलब्धि उच्च थी परंतु जीवनयापन दयनीय रहा तथा उन्होंने कई असफलताओं का सामना भी किया। इस खोज ने उन सभी विशेषज्ञों को एक रास्ता दिखाया जो सफलता में बुद्धिलब्धि (IQ) के अलावा और भी कुछ देखते थे। तब सांवेगिक गुणक (EQ) का प्रत्यय सामने आया, जो हमें कुषलतापूर्वक हमारी प्रसन्नता और कष्ट के प्रति सही अभिवृत्ति और बुद्धिमत्ता से अनुक्रिया करने के लिए योग्यता, सहानुभूति, समानुभूति और पुनर्बलन देता है। परंतु इक्कीसवीं सदी में बढ़ते हुए दबाव में सांवेगिक गुणक भी शैक्षिक, व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में आने वाली परिस्थितियों को समझाने में नाकामयाब रहीं। तदुपरान्त, एक नया प्रत्यय आध्यात्मिक गुणक (SQ) इस क्षेत्र में आया। गार्डनर ने बहु बुद्धि का अन्तर्वैयक्तिक और अन्तःवैयक्तिक बुद्धि सिद्धान्त, प्रस्तुत किया। इसे भी एक तरह की सांवेगिक बुद्धि माना जा सकता है, परंतु गार्डनर ने इस पद "EQ" को प्रयोग नहीं किया परंतु दोनों को ही (अन्तर्वैयक्तिक और अन्तःवैयक्तिक) को सांवेगिक

गुणक (EQ) का ही क्रियात्मक पक्ष माना। इसी प्रकार से इस सिद्धान्त के यथार्थवादी और अस्तित्ववादी बुद्धि पक्ष को आध्यात्मिक गुणक (SQ) से संबंधित किया जा सकता है।

बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) में संबंध

अब हम उन समूह के बारे में जानेंगे जो बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) में संबंध निम्न प्रकार से देखते हैं:

क) एक समूह मानता है कि एक व्यक्ति में इन तीनों गुणक का कुछ-कुछ भाग होता है। जीवन की परिस्थितियों में सफलता और असफलता तथा एक सुखी जीवनयापन तभी हो सकता है जब तीनों आपस में अन्तःक्रिया करें।

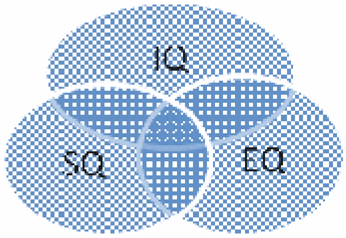

ख) द्वारा समूह मानता है कि ये तीनों गुणक श्रेणीकृत हैं जिसमें बुद्धिलब्धि (IQ) आधार पर है, उसके ऊपर सांवेगिक गुणक (EQ) तथा आध्यात्मिक गुणक (SQ) सबसे ऊपर आता है और एक त्रिभुज का निर्माण होता है। यहाँ सांवेगिक गुणक के बुद्धिलब्धि पूर्वावष्यक है तथा आध्यात्मिक गुणक के लिए सांवेगिक गुणक पूवार्वष्यक है।

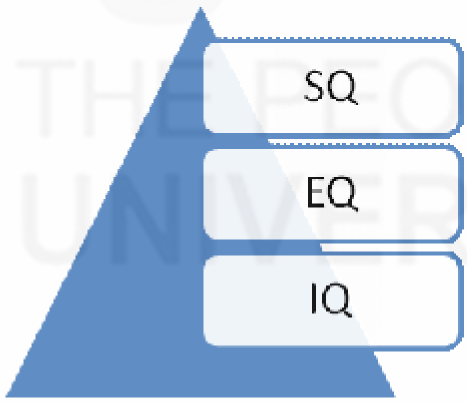

ग) एक समूह मानता है कि आध्यात्मिक गुणक (SQ); बुद्धिलब्धि (IQ) और सांवेगिक गुणक (EQ) का कुल योग है।

बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) की तुलना

बुद्धि (Intelligence)	क्रियाकलाप (Operations)
बुद्धिलब्धि (IQ)	ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, नियोजन, कार्यान्वयन
सांवेगिक गुणक (EQ)	टोली में कार्य, नेतृत्व, जागरूकता, क्रिया, संबंध व्यवस्था, सांवेगिक सुख, शारीरिक तन्दुरूस्ती, सकारात्मकता, कौषल, अनुभव
आध्यात्मिक गुणक (SQ)	मूल्यांकन, संश्लेषण, धारणा, अन्तर्दृष्टि, सृजनात्मकता, समस्या-समाधान, अंतर्बोध, दूरदर्षिता, वचनबद्धता, लचीलापन, स्वयं पर विष्वास, सुख, ढलना।

तालिका 6.1: बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) में तुलना

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3) आध्यात्मिक गुणक (SQ) सांवेगिक गुणक (EQ) से किस प्रकार भिन्न है?

....

....

....

....

....

....

....

....

6.6 बहु-बुद्धि

1983 में हॉवर्ड गार्डनर ने प्रारंभ में सात प्रकार की बुद्धि को अपने "बहु-बुद्धि के सिद्धान्त" में पहचाना। उनके अनुसार एक अंक (बुद्धिलब्धि परीक्षण का एक प्राप्तांक) पर्याप्त रूप से एक मनुष्य की जटिल और विविध क्षमताओं को नहीं दर्षा सकता है। अतः उन्होंने "बहु-बुद्धि के सिद्धान्त" को प्रस्तावित किया। वे अपना तर्क प्रस्तुत करते हैं कि सात बुद्धिमत्ताएँ सुस्पष्टता और पूर्णतया एक दूसरे से अलग हैं तथा हर व्यक्ति में किसी न किसी बुद्धि का स्तर अधिक होता है। 1997 में इस सूची में अब दो और बुद्धिमत्ताएँ जोड़ दी गई हैं। वर्तमान में नौ बुद्धिमत्ताएँ हैं– **शाब्दिक भाषा विज्ञान, तार्किक-गणितीय, स्थानिक, संगीतात्मक, शारीरिक गत्यात्मकता, अन्तर्वैयक्तिक, अन्तःवैयक्तिक, प्रकृतिवादी, अस्तित्ववादी योग्यताएँ।** गार्डनर का "बहु-बुद्धि का सिद्धान्त" मानव योग्यताओं का व्यापक एवं विस्तृत दृष्टिकोण देता है। अर्थात् एक तरफ भाषा विज्ञान तथा तार्किक गणितीय योग्यता है तथा दूसरी तरफ इसका विस्तार प्राकृतिवाद और अस्तित्ववाद तक है।

इस सिद्धान्त को हम एक तालिका में क्रियात्मक स्वरूप में दर्षा सकते हैं।

बुद्धि क्षेत्र	व्यक्ति निम्न से निपुण होता है	व्यक्ति निम्न को पसंद करता है	निम्न के माध्यम से अधिगम बेहतर होता है	उदाहरण
शाब्दिक भाषा विज्ञान (Verbal Linguistics)	पढ़ना, लिखना, कहानियाँ सुनाना, तिथि याद करना, शब्द सोचने में	लिखना, पढ़ना, बात करना, याद करना, पहेली सुलझाना	सुनने, पढ़ने, शब्दों को देखने, बोलने, लिखने, चर्चा, तर्क व वितर्क करने से	कवि, लेखक, वक्ता, संप्रेषक
तार्किक-गणितीय (Logico-Mathematical)	गणित, कारण ढूँढ़ना, तर्क करना, समस्या समाधान	समस्याओं को सुलझाना, प्रष्न हल करना, संख्या से कार्य करना, प्रयोग करना	आकृतियों और संबंधों पर कार्य करना, वर्गीकरण करना, अमूर्त से सम्बन्धित कार्य करना	गणितज्ञ, तर्कषास्त्री
स्थानिक (Spatial)	मानचित्र पढ़ना, रेखाचित्र, भूल-भुलैया और पहेली बनाना, चित्रण करना, अपनी सोच से चित्रांकन (मानसदर्षन)	आकृतियाँ, चित्र बनाना, निर्माण, सृजन करना, दिवा-स्वप्न, चित्र निहारना	चित्रों पर कार्य करना तथा रंगों से कार्य, चिंतनपूर्ण चित्रण	नाविक, शल्य चिकित्सक, मूर्तिकार, चित्रकार
शारीरिक गत्यात्मकता (Bodily-Kinesthetic)	खेल-कूद, नृत्य, अभिनय, षिल्प, औजार का प्रयोग	इधर-उधर घूमना, छूकर बात करना, शारीरिक भाव-भंगिमा बनाना	छूना, गतिक्रम, ज्ञान को शारीरिक इंद्रियों के प्रयोग से प्राप्त करना	नृर्तक, खिलाड़ी, शल्य-चिकित्सक, षिल्पकार
संगीतात्मक (Musical)	गायन, सुर निर्माण में, धुन याद करने में, ताल में	गाना, गुनगुना, वाद्य बजाना, संगीत सुनना	ताल, धुन गायन, संगीत सुनना	संगीतकार, गीतकार
अन्तर्वैयक्तिक (Interpersonal)	लोगों को समझना, नेतृत्व करना, संयोजन करना, संप्रेषण, द्वंद हल करना, बेचना	दोस्त बनाना, लोगों से बातें करना, समूहों से जुड़ना	बाँटना, तुलना करना, संबंध निर्माण करना, साक्षात्कार सहयोग करना	क्रय करने वाले, षिक्षक,चिकित्सक, नेता, धर्म षिक्षक
अन्तःवैयक्तिक (Intrapersonal)	अपने आप को समझना, अपनी कमजोरियों और क्षमताओं को पहचानना, लक्ष्य तय करना	अकेले कार्य करना, चिंतन कर आगे बढ़ना, रुचि के अनुसार	अकेले कार्य करना, अपनी गति से कार्य करना, अपनी जगह में सोचना और कार्य करना, चिंतन करना।	अपने आप कुछ सष्जन करने वाले
प्रकृतिवादी (Naturalist)	प्रकृति को समझना, वनस्पति और जीवों में भिन्नता ढूँढ़ना और पहचान करना	प्रकृति से जुड़ना, अंतर स्पष्ट करना	प्रकृति में कार्य करना, खोज करना, पेड़ों तथा प्राकृतिक क्रियाओं को जानना।	जंगल, पहाड़ों, समुद्रों में छानबीन करना और खोज करना
अस्तित्ववादी (Existential)	आध्यात्मिक बुद्धि	लोगों को समझना, समाज, स्थिति, परिस्थिति को समझना	सामाजिक परिवेष एवं वातावरण	समाज-विज्ञानी, आध्यात्मिक व्यक्ति

तालिका 6.2: बहु-बुद्धि क्षेत्र तथा उनके प्रदर्षित होने वाली विशेषताएँ (एम.ई.एस.-103, इकाई 4, पृष्ठ 57 से लिया गया)

क्रियाकलाप 2

इंटर्नषिप के दौरान वहाँ के विद्यार्थियों की विशेषताओं की सूची बनाएँ तथा ऊपर दिए गए वर्गीकरण के अनुसार उन्हें पहचान कर उन्हें उन बुद्धि क्षेत्रों के अनुसार वर्गीकृत करें।

....

....

....

....

....

....

6.7 व्यक्तित्व का प्रत्यय

सामान्य तौर पर व्यक्तित्व में कद-काठी, रूप-रंग, बुद्धि, अभिवृत्ति, अभिक्षमता साथ ही साथ विशिष्ट सामाजिक व्यवहार आदि गुण सम्मिलित होते हैं, "व्यक्तित्व" शब्द का प्रयोग उन विशेषताओं का विवरण देने के लिए होता है जो व्यक्ति के लोगों के सामने आकर्षक या अनाकर्षक रूप से पेष करती हैं। हम उन लोगों की प्रषंसा करते हैं जिनके पास "व्यक्तित्व" होता है तथा उन्हें हम सक्रिय, सषक्त, प्रभावषाली, मैत्रीपूर्ण आदि शब्दों से विभूषित करते हैं; दूसरी तरफ हम उससे घृणा करते हैं जिसमें "कोई व्यक्तित्व नहीं होता" अर्थात व्यक्ति में ऐसी स्पष्ट विशेषताएँ नहीं होती जो आकर्षित करे।

मनोवैज्ञानिकों ने "व्यक्तित्व" शब्द को मिलनसार और आकर्षक से कहीं आगे माना है। वास्तव में व्यक्तित्व न केवल वैयक्तिक विशेषताओं को सम्मिलित करता है, वरन् दैनिक जीवन में उनका संचालन निष्चित कर और अनुकूलन कारकों जैसे, डील-डौल, रूपरंग, बुद्धि, चारित्रिक गुण आदि को भी शामिल करने पर बल देता है। ये सभी अलग-अलग मात्रा में एक व्यक्ति की पूर्ण गुणवत्ता में योगदान देते हैं।

"व्यक्तित्व" को समझने के लिए निम्नलिखित परिभाषाएँ सहायता करेंगीः

⇒ "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के अंदर उन मनो-षारीरिक तंत्रों का सक्रिय संगठन है, जो उसकी वातावरण के साथ विशिष्ट अनुकूलन सुनिष्चित करता है।" - **ऑलपोर्ट**

⇒ व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और डील-डौल का लगभग संतुलित और चिरस्थाई संगठन है जो उसके वातावरण में समायोजन को निर्धारित करता है। - **आइसेन्क**

⇒ व्यक्तित्व आमतौर पर व्यवहार के विशिष्ट रूपों का उल्लेख करता है (विचार एवं संवेगों को सम्मिलित करते हुए) जो हर व्यक्ति का अपने जीवन की हर परिस्थिति के अनुकूलन का चारित्रीकरण करता है। - **वॉल्टर मिषेल**

शुद्ध रूप से व्यक्तित्व को तीन दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है - वर्ग, शील गुण तथा सम्पूर्ण संरचना।

वर्ग सिद्धान्त, व्यक्तित्व को अपेक्षाकृत कुछ व्यापक वर्गीकरणों के संदर्भ में दर्षाते हैं।

शील गुण सिद्धान्त, पहले तो व्यक्तित्व के अर्थपूर्ण पहलुओं की खोज करने की कोषिष करता है तथा साथ ही, व्यक्ति का विवरण उसकी विशेषताएँ प्रदर्षित करने की मात्रा और क्षमता के अनुरूप देते हैं।

संपूर्ण संरचना सिद्धान्त, वैयक्तिक व्यक्तित्व को सुनियोजित और सक्रिय "संपूर्ण" का मानते हैं न कि अपेक्षाकृत अस्थिर संघटक अंग या तत्व का संग्रह।

व्यक्तित्व लक्षण, योग्यताओं के जैसे नहीं है। बल्कि, व्यक्ति किस प्रकार अपने वातावरण में प्रतिक्रिया करते हैं, ये विशिष्ट तरीका उसके व्यवहार में दिखता है। जब व्यक्तित्व गुणों में आचरण या नैतिक स्पष्टीकरण दिया जाता है तब वह चारित्रिक गुण बन जाते हैं। जहाँ तक व्यक्तित्व में सुधार का प्रष्न है, मनोवैज्ञानिक यह ज्ञान देने में मदद कर सकते हैं कि कैसे, निष्चित गुणों जैसे कि पुनर्बलन तथा आदत निर्माण अर्जित किया जाता है। मूल व्यक्तित्व गुणों को सत्याभासी गुणों से स्पष्ट तथा अंतर करना चाहिए। मनोवैज्ञानिकों ने मूल व्यक्तित्व आयामों की कई परिभाषाएँ दी हैं जैसे, अन्तर्मुखता, बहिर्मुखता तथा इन्हें अन्य गुणों से भी संबंधित भी किया है। व्यक्तित्व के कुछ सिद्धान्त एक भिन्न दृष्टिकोण से दिए गए हैं, जैसे :

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त, जो काम तत्व, अहम् और परम् अहम् की व्याख्या करता है। शरीर रचना संबंधी सिद्धान्त (षेल्डन)- एक्टोमार्फी, मीजोमार्फी, एन्डोमार्फी- लक्षण सिद्धान्त - सामान्य और वैयक्तिक शील गुण- ऑलपोर्ट; 16 व्यक्तित्व लक्षण सिद्धान्त (कैटल) तथा आवष्यकता का सिद्धान्त जो मेसलो द्वारा दिया गया या हैनरी मुर्रे के द्वारा बताई गई आवष्यकताएँ।

जन्म से परिपक्वता तक सामाजिक समुदाय कुछ सीमाओं तक ही व्यक्तित्व को गढ़ता है जो जैविक कारकों द्वारा थौपी गई हों। व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने में साक्षात्कार, प्रष्नावली, रेटिंग मापनी तथा उपलब्धि व प्राक्षेपिक परीक्षण आदि सभी सहायक हैं।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4) आप व्यक्तित्व की किस परिभाषा को उपयुक्त मानते हैं और क्यों?

....

....

....

....

....

....

6.8 व्यक्तित्व एवं अधिगम

व्यक्तित्व के सिद्धान्त, विभिन्न पृष्ठभूमि तथा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अलग-अलग हैं। "व्यक्तित्व" शब्द को परिभाषित करते समय यह कहा जाता है कि वह एक विभिन्न विशेषताओं, गुणों अथवा लक्षणों का संयोग है जो एक व्यक्ति की विशिष्ट शैली, स्वरूप और व्यवहार आदि की रचना करता है। हममें से प्रत्येक को व्यक्तित्व और पूर्ण सक्रिय व्यक्ति के बारे में जानकारी है। जैसे-जैसे हम लोगों को जानने लगते हैं चाहे छोटी आयु का हो या बड़ी, हम कुछ विशेष गुणों को समझने लगते हैं और प्रत्येक अपने विशिष्ट व्यवहार के द्वारा, दूसरों से अलग कैसे हैं, यह पता चलता है। जब हम किसी को कुछ समय तक

लगातार देखते हैं तो यह पाते हैं कि किस प्रकार स्वभाव, रुचि तथा अभिवृत्ति का विकास हो रहा है और किस प्रकार ये व्यवहार एक स्थाई दिषा ले लेता है। जब हम समझने लगते हैं कि अब हम पूर्वानुमान लगा सकते, तभी हमें व्यक्ति के व्यवहार में कोई अप्रत्याषित, बदलाव देखने को मिल सकता है। फिर भी हम उस व्यक्ति की निष्चित व्यक्तित्व के बारे में सोचते हैं, जबकि हम पूर्ण रूप से यह समझकर स्वीकार करते हैं कि व्यक्ति में कई ऐसी क्रियाएँ होती हैं तथा पर्यावरण का भी अपना असर होता है जो व्यवहार में बदलाव ले आता है। अतः "व्यक्तित्व" शब्द को हम कुछ लचीले और अस्पष्ट रूप से प्रयोग करते हैं तथा उतनी ही मात्रा में करते हैं जो हमें दूसरे से अलग स्थापित करे। "व्यक्तित्व" शब्द एक सामान्य विचार के लिए प्रतीकात्मक शब्द है न कि किसी विशिष्ट वस्तु के लिए। यह बहुत आसान है कि जब व्यक्ति की नए शब्द "व्यक्तित्व" से पहचान होती है या वह एक जाना पहचाना "स्वयं" प्रयोग करता है तो उसकी मनोवैज्ञानिक जागरूकता कम हो जाती है। ऊपर दिए गए तथ्य से निम्न मिथक सामने आते हैं:

- व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकताः प्रकृति *बनाम* पालनपोषण।
- सफल और असफल व्यक्तित्व होते हैं : अधिगम पृष्ठभूमि।
- व्यक्तित्व प्रतीकात्मक हो सकते हैं : अद्वितीयता *बनाम* चिन्हीकरण

जहाँ तक अधिगम की बात है निम्नलिखित मुद्दों की चर्चा की जा सकती हैः

- समान आयु के बच्चे अपनी रुचि, व्यक्तित्व, योग्यता तथा सामान्य समायोजन में, एक दूसरे से भिन्न होते हैं जो उनके वैयक्तिक विभिन्नता के बावजूद किसी विद्यालय में अनुकूलन करने में सहायक हो।
- किसी भी विजातीय समूह में किसी बालक को कक्षा की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने के लिए अनुरोध किया जा सकता है।
- एक षिक्षार्थी के व्यक्तित्व में शारीरिक तथा शैक्षिक कमजोरियाँ या तीव्रता होती है। नियमानुसार वह अपने वैयक्तिक गुणों का विकास कर लाभान्वित होगा। इसके साथ-साथ उसे अपनी कमजोरियों पर पर्याप्त रूप से नियंत्रण पाना है, जो उसे असक्षम न बना दे।
- आदर्षतः, समान समूह के षिक्षार्थियों, (जिनमें समान सामाजिक बौद्धिक और शैक्षिक परिपक्वता है), उनकी आवष्यकतों और अधिगम की योग्यताओं के अनुसार पढ़ाया जाए।
- जो अच्छे षिक्षार्थी हैं और कठिन परिश्रम करने को तैयार हैं वे त्वरित (तत्पर) किए जाने चाहिए। इससे उच्च उपलब्धि करने वाले बच्चे शैक्षिक और सामाजिक रूप से त्वरित हो जाते हैं।

लगभग हर षिक्षार्थी अपने अपने विद्यालय कार्य में सफल होना चाहता है और ऐसा करने पर अत्यंत प्रसन्न होता है; हालाँकि वह अपने कार्यों में चुनौती चाहता है, पर वह नहीं चाहता कि कार्य इतने कठिन भी हो कि असफलता पर निराषा और हार का अनुभव हो। एक सामान्य समूह में ऐसे षिक्षार्थी होते हैं जो व्यक्तित्व, प्रेरणा, क्षमता और योग्यता में अलग होते हैं। अतः कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो कुछ षिक्षार्थियों के लिए सरल तो कुछ के लिए कठिन होते हैं। कुछ जल्दी पाठ को समझ लेते हैं और कुछ नहीं। षिक्षार्थी अपने वहीं कार्य खुषी से करते हैं जो उनके व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर हो, अतः विद्यालय को निर्देषित करना चाहिए जिससे उनके अनुभव उनकी जरूरतों को संतुष्टि दे सकें।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5) व्यक्तित्व के बारे में भ्रांतियों को आप कैसे नियंत्रित करेंगे, ताकि अधिगम सुगम बन सके।

....

....

....

....

....

....

....

6.9 सारांष

एक षिक्षार्थी जो अच्छे से कार्य कर सकता है या अपना व्यवहार से प्रभावित कर सकता है, अच्छे व्यक्तित्व तथा समर्थ सामाजिक बुद्धि का स्वामी है। एक षिक्षक जिस पर षिक्षार्थियों को भरोसा है तथा प्रिय है, वह जो अपने साथी षिक्षकों के साथ मिलजुलकर रहते हैं, वे अच्छे विकसित वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। षिक्षार्थी जिसमें अमूर्त बुद्धि है उसमें मानसिक क्षमता होती है कि किस प्रकार से व्यवहार करें परंतु वह अपने व्यक्तित्व के कारण ऐसा नहीं कर पाता। व्यक्तित्व और बुद्धि में कई समानताएँ तथा असंगतियाँ हैं क्योंकि सामाजिक योग्यताओं में कई तत्व हैं जो स्वभाव में अमूर्त नहीं होते है। व्यक्तित्व गुण संपूर्ण रूप से तो नहीं पर घनिष्ठता से सामाजिक बुद्धि से संबंधित हैं। एक षिक्षार्थी का व्यक्तित्व, उसका बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) सभी यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण कारक हैं कि वह लोगों के साथ कितना मिलजुलकर रह सकता है।

6.10 इकाई के अंत में अभ्यास

1) आप "बुद्धि" से क्या समझते हैं?

2) बुद्धि के बारे में क्या भ्रांतियाँ हैं और वे अधिगम से कैसे संबंधित हैं?

3) बुद्धिलब्धि (IQ), सांवेगिक गुणक (EQ) और आध्यात्मिक गुणक (SQ) क्या हैं?

4) वर्तमान संदर्भ में बहुबुद्धि का सिद्धान्त कैसे महत्वपूर्ण है?

5) अपनी कक्षा में पाँच षिक्षार्थी की पहचान कीजिए और उनके व्यक्तित्व की परीक्षण निम्न आधारों पर करें:

क) उनके व्यक्तित्व के संघटक तत्व

ख) व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले कारक।

6) "व्यक्तित्व" से जुड़ी भ्रांतियाँ क्या हैं?

6.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

ऐलन, बी.पी. (2006). *पर्सनैलिटी थ्योरिज़ः डेवलेपमेंट, ग्रोथ एंड डाइवर्सिटी* (पाँचवाँ संस्करण)

बेन्जामिन, बी.एल. (2002). *ऐषेन्षियलस ऑफ साईकोलॉजी,* इंटरनेषनल एडीसन, मैकग्रा हिल।

वर्क, एल.ई. (2010). *चाइल्ड डेवलेपमेंट,* (आठवाँ संस्करण), नई दिल्लीः पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

बर्गर, जे. एम. (2010). *पर्सनलेटी,* (आठवाँ संस्करण), सी.ए.: वाडस्वर्थ पब्लिषिंग।

कार्वर, सी.एस. तथा षियर, एम.एफ. (2008), *पर्सपेक्टिव ऑन पर्सनेलिटी,* (छठा संस्करण), नीधाम हाइट्स, ऐ : एलेन व वेकन।

क्लोनिंगर, एस.सी. (2008). *थ्योरिज ऑफ पर्सनेलिटीः अंडरस्टेडिंग परसन्स* (पाँचवाँ संस्करण), एंगलवुड क्लीफस, एन.जे.: प्रेन्टिस हॉल।

डेनियल गोलमैन (1998). *वर्किंग विद् इमोषनल इंटैलिजेन्स*।

डेनियल गोलमैन (1995). *इमोषनल इंटैलिजेन्स*, बेन्टेम बुक्स

मैथूयज, जी., डियरी, आई. जे., तथा व्हाइटमैन, एम.सी. (2009). *पर्सनेलिटी ट्रेंड्स,* (तष्तीय संस्करण), न्यूयॉर्क।

विगिन्स, जे.एस. (संपा.), (1996). *दि फाइव फेक्टर मॉडल ऑफ पर्सनेलिटीः थ्योरिटिक्ल परस्पेक्टि्व्स,* न्यूयॉर्कः गिलफार्ड पब्लिकेसन्स।

वर्डसवर्थ, बी.जे., पियाजे, *थ्योरी ऑफ कॉग्निटिव एंड अफैक्टिव डेवलेवमेंट*, न्यूयॉर्क।

6.12 बोध प्रष्नों के उत्तर

1) सामाजिक-सांवेगिक बुद्धि का अर्थ है कि एक व्यक्ति तभी बुद्धिमान है जब वह अपने वातावरण के सभी तत्वों के साथ प्रभावषाली ढंग से संबंध स्थापित करता है, एक व्यक्ति की बुद्धि इस बात से आँकी जा सकती है कि वह किस प्रकार से लोगों वस्तुओं या विचारों से सम्बन्ध स्थापित करता है।

2) षिक्षार्थी की बुद्धि से जुड़े मिथक, एक षिक्षक के मन में षिक्षार्थियों की अधिगम योग्यता के विषय में भेदभाव उत्पन्न कर सकते हैं। षिक्षक कभी-कभी मंद षिक्षार्थी के प्रति सतर्क हो जाते हैं और उनके अनुसार उनकी बुद्धि का गलत अवबोध कर लेते हैं।

3) अपनी समझ के अनुसार उत्तर दीजिए।

4) जो परिभाषा आपको उपयुक्त लगें उसे चुन लें। अपने वाक्यों में लिखें और यह स्पष्ट करें कि इस परिभाषा का आपने क्यों चयन किया।

5) अपने अनुभव के आधार पर उत्तर दीजिए।

इकाई 7 वैयक्तिक रूप में षिक्षार्थी-II

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देष्य
7.3 षिक्षार्थी की तत्परता
7.3.1 षिक्षार्थी की तत्परता के कक्षागत निहितार्थ
7.4 अभिप्रेरणा
7.4.1 आवष्यकताएँ, अन्तर्नोद और प्रोत्साहन
7.4.2 आंतरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा
7.4.3 अभिप्रेरणा के उपागम
7.4.4 अधिगम में अभिप्रेरणा
7.5 अभिक्षमता
7.5.1 अभिक्षमता क्या है?
7.5.2 क्या अभिक्षमता में वैयक्तिक भिन्नता होती है?
7.5.3 अनुदेषन युक्तियाँ
7.6 अभिवृत्ति
7.6.1 अभिवृत्ति की प्रकृति
7.6.2 अभिवृत्ति अधिगम को सुगम बनाना
7.6.3 अभिवृत्ति में वैयक्तिक भिन्नता
7.7 सृजनात्मकता
7.7.1 सृजनात्मकता क्या है?
7.7.2 क्या सृजनात्मकता में वैयक्तिक भिन्नता होती है?
7.7.3 क्या सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है?
7.8 रुचि
7.8.1 रुचि की प्रकृति और आयाम
7.8.2 रुचि की वृद्धि और विकास
7.8.3 रुचि की पहचान और महत्व
7.8.4 रुचि में वैयक्तिक भिन्नता
7.9 जिज्ञासा
7.10 सारांष
7.11 इकाई के अंत में अभ्यास
7.12 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री
7.13 बोध प्रष्नों के उत्तर

7.1 प्रस्तावना

इकाई 6 में अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप में हम बुद्धि और व्यक्तित्व की चर्चा कर चुके हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक कारक हैं जो बालक के अधिगम को प्रभावित

*इस इकाई के कुछ खंड तथा उपखंड ई.एस. 332 की इकाई 5 से लिएगए हैं।

करते हैं और एक षिक्षक होने के नाते हमें उन कारकों के विषय में जानना आवष्यक है। प्रस्तुत इकाई में पिछली इकाई के क्रम को आगे बढ़ाते हुए अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे— षिक्षार्थी की तत्परता, अभिप्रेरणा, अभिवृत्ति और अभिक्षमता, उत्सुकता, रुचि और उनकी सृजनात्मकता आदि पर चर्चा की जाएगी। इस इकाई में मुख्य रूप से अधिगम को सुगम बनाने हेतु इन कारकों की भूमिका को स्पष्ट करने पर बल दिया गया है। यह इकाई आपके लिए, षिक्षार्थी को समझने और उसके अधिगम को सुगम और सार्थक बनाने में सहायक होगी।

7.2 उद्देष्य

इस इकाई के अध्ययन के पष्चात् आपः

- अधिगम को सुगम बनाने हेतु षिक्षार्थी की तत्परता के महत्व को समझ सकेंगे;
- अधिगम को सुगम बनाने में अभिप्रेरणा के महत्व को समझ सकेंगे;
- अभिवृत्ति और अभिक्षमता का अधिगम के महत्वपूर्ण कारक के रूप में परीक्षण कर सकेंगे;
- अधिगम को सुगम बनाने में सृजनात्मकता के महत्व को समझ सकेंगे; और
- षिक्षार्थी की उत्सुकता और रुचि की अधिगम के मुख्य कारकों के रूप में व्याख्या कर सकेंगे।

7.3 षिक्षार्थी की तत्परता

अधिगम के उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धान्तों में आपने ई.एल. थॉर्नडाइक द्वारा दिए गए सीखने के नियमों के विषय में अवष्य पढ़ा होगा। उन्होंने अधिगम प्रक्रिया पर प्रयोगों की एक श्रृंखला प्रतिपादित की। अपने प्रयोगों के आधार पर उन्होंने सीखने के मूल नियमों का प्रतिपादन किया। प्रभाव का नियम और अभ्यास का नियम के बाद उन्होंने तत्परता के नियम का प्रतिपादन किया। तत्परता के नियम का अर्थ है कि जब षिक्षार्थी नई चीजों को सीखने के लिए तैयार होता है तो उसके द्वारा की गई क्रिया संतोषजनक होती है, जबकि तत्परता के अभाव में क्रिया संतोषजनक नहीं होती है। तत्परता, परिपक्वता और अनुभव दोनों पर निर्भर करती है। यह माना जाता है कि नए ज्ञान को प्राप्त करने की तत्परता के अभाव में सीखने की गति मंद होती है।

यह अधिगम में तत्परता के महत्व को दर्षाता है। तत्परता का अर्थ है नई चीज को सीखने के लिए तैयार होना। आइए, नीचे दी गई दो परिस्थितियों को पढ़ें और विचार करें।

परिस्थिति 1

विज्ञान षिक्षिक मोनिका ने अभी-अभी मध्यावकाष के बाद कक्षा में प्रवेष किया है, और उसे घर्षण की अवधारणा पढ़ानी है। वह अपनी कक्षा की शुरुआत इस प्रकार के प्रष्नों से करती है : बल क्या है? बल कितने प्रकार का होता है? विभिन्न प्रकार के बलों के कुछ उदाहरण दों। विभिन्न प्रकार के बल घर्षण बल से किस प्रकार भिन्न हैं? अन्तिम प्रष्न को वह समस्यात्मक प्रष्न के रूप में पूछती है और इसके बाद वह अपना प्रकरण पढ़ाना आरंभ करती है।

परिस्थिति 2

यही प्रकरण सुदर्षन को एक अलग कक्षा में पढ़ाना है। जब वह कक्षा में प्रवेष करता है तो देखता है कि बच्चे भागते हुए कक्षा में आ रहे थे क्योंकि मध्यावकाष अभी-अभी समाप्त हुआ है। उसने कुछ बच्चों को रुकने के लिए अथवा धीरे चलने के लिए कहा और दौड़ कर अपने डेस्क पर जाने के लिए मना किया। जब बच्चे धीरे चलने लगे तो उसने पूछा कि जब आप लोग भाग रहे थे और मैंने आपको धीरे चलने को कहा, तो आपको अपनी गति पर नियंत्रण करने में किस चीज ने सहायता की? बच्चों ने सोचना शुरु किया। तब उसने कुछ कंचे फर्ष पर फेंके और बच्चों को कंचों की गति पर ध्यान देने के लिए कहा। तब उसने षिक्षार्थियों से पूछा कि कंचों ने लुढ़कना क्यों बंद कर दिया? उनकी गति को किस चीज ने विरोध किया? उसने अपनी कक्षा आरंभ करने से पूर्व इस प्रकार के अनेकों उदाहरण दिए और षिक्षार्थियों से भी इस प्रकार की गति के कुछ उदाहरण देने को कहा।

1) ऊपर दी गई दोनों परिस्थितियों में कक्षा आरंभ करने के लिए आपके विचार में कौन-सी परिस्थिति अधिक उपयुक्त है?

....

....

....

....

....

2) वह क्या था जिसका प्रयोग सुदर्षन ने अपनी कक्षा में किया और मोनिका की कक्षा में जिसका अभाव था?

....

....

....

....

....

उपरोक्त प्रष्नों के उत्तर अधिगम प्रक्रिया हेतु षिक्षार्थी की तत्परता को समझने में सहायक होंगे। अतः, यदि उन्हें उचित रूप से तैयार किया जाए तो वे सीखने के लिए तत्पर हो जाएँगे। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि षिक्षक प्रत्येक अवसर पर षिक्षार्थियों को सीखने के लिए तैयार करे। बहुत से अवसरों पर कक्षाकक्ष से संबंधित बाह्य कारकों के कारण भी षिक्षार्थी सीखने के लिए तैयार नहीं हो पाता है। आपको उन कारकों की पहचान कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना होगा।

षिक्षार्थी की तत्परता बढ़ाने के लिए अध्यापक क्या कर सकता है? आइए, इस पर चर्चा करें।

7.3.1 षिक्षार्थी की तत्परता के कक्षागत निहितार्थ

- अध्यापक को यह पता होना चाहिए कि षिक्षार्थी सीखने के लिए कब तैयार है। यदि कोई षिक्षार्थी तैयार नहीं है तो उसे उस प्रकार के अनुभव करवाए जाने चाहिए जिससे वह सीखने के लिए तत्पर हो सके।

- षिक्षार्थी की तत्परता में बाधक तत्वों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। इन तत्वों को पहचानकर इनके निवारण का प्रयास किया जाना चाहिए।
- विषय/विषयवस्तु में षिक्षार्थी की रुचि उसकी तत्परता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। षिक्षार्थी की रुचि के अनुसार ही उसे सीखने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।
- कभी-कभी विभिन्न तरीकों से सीखने वाले सभी षिक्षार्थियों को षिक्षक एक ही षिक्षण विधि द्वारा सिखाने का प्रयास करते हैं। उनके सीखने के तरीके और सीखने की वरीयता भी उनके सीखने की तत्परता पर प्रभाव डालती है। आपको उन तरीकों के विषय में सचेत होना चाहिए और षिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में ऐसा लचीलापन रखना चाहिए जिसे सभी प्रकार के षिक्षार्थियों के लिए अपनाया जा सके।
- कक्षा का वातावरण षिक्षार्थी-केन्द्रित होना चाहिए जिससे षिक्षार्थी नए ज्ञान और कौषल को सीखने की तरफ अधिक तत्पर हो सके।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) आपकी कक्षा में षिक्षार्थी की तत्परता बढ़ाने हेतु युक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

7.4 अभिप्रेरणा

थॉमस ने एक माध्यमिक विद्यालय में सामाजिक विज्ञान षिक्षक के रूप में कार्यभार संभाला तो उसे कक्षा VIII का दायित्व सौंपा गया। पहले दो दिनों में उसने अपनी कक्षा को कोई भी प्रत्यय नहीं पढ़ाया। उसने षिक्षार्थियों से केवल उनके विषय में ही पूछा जैसे उनकी रुचियाँ, उनके आसपास का वातावरण, मौसम, नजदीकी ऐतिहासिक स्मारकों की जानकारी, समाचारपत्रों के मुख्य समाचार, बाजार के बारे में और राजनीतिक घटनाओं के बारे में, आदि।

जब वे बातें कर रहे थे उनके दिमाग में कुछ प्रष्न थे जिनके उत्तर वे औपचारिक षिक्षण शुरु करने से पहले ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे थे। क्या आप जानते हैं कि उनके दिमाग में क्या प्रष्न थे? आइए, उन प्रष्नों पर एक दृष्टि डालें:

- किन-किन प्रकरणों पर षिक्षार्थी अधिक बातें करना पसंद करते हैं?
- वे कौन-से क्षेत्र हैं जिन पर बातें करने में वे अधिक रुचि रखते हैं?
- क्या वे अपने आसपास के वातावरण और उसमें हाल ही में हुए विकास के विषय में जागरूक हैं?

- क्या वे अपने आपको इन प्रकरणों का हिस्सा मानते हैं?
- क्या वे मौसम, इतिहास, राजनीति, बाजार आदि मुद्दों से संबंधित और अधिक जानकारी प्राप्त करने में रुचि रखते हैं?

सामाजिक विज्ञान विषय को सीखने के लिए षिक्षार्थियों की अभिप्रेरणा को समझने हेतु उन्होंने इन प्रष्नों का निर्धारण किया।

आप भी विद्यालयी प्रषिक्षण (Internship) के दौरान अपनी प्रारंभिक कुछ कक्षाओं में इस प्रकार के क्रियाकलापों/ प्रष्नों को प्रयोग करने का प्रयास कर सकते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि अभिप्रेरणा व्यक्ति की क्रियाओं, इच्छाओं और आवष्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है।

अभिप्रेरणा क्या है?

अभिप्रेरणा एक सैद्धांतिक विचार है जो व्यवहार की व्याख्या करने के लिए प्रयोग किया जाता है। अभिप्रेरणा को किसी व्यक्ति द्वारा किए गए व्यवहार को दिषा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है अथवा अभिप्रेरणा वह है जिसके कारण व्यक्ति किसी व्यवहार को बार-बार दोहराने अथवा न करने के लिए प्रेरित होता है।

अभिप्रेरणा शब्द की भिन्न-भिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। फ्रेडरिक जे. मैक्डोनाल्ड (1965) के अनुसार, **"अभिप्रेरणा व्यक्ति में भावात्मक उत्तेजना और अग्रिम लक्ष्य प्रतिक्रिया द्वारा होने वाला ऊर्जा परिवर्तन है।"**

इस परिभाषा के **तीन तत्व** हैं जिनकी व्याख्या नीचे की गई है:

- अभिप्रेरणा व्यक्ति में **ऊर्जा परिवर्तन** के रूप में प्रारंभ होती है। कुछ ऊर्जा परिवर्तनों (जैसे भूख, प्यास, कण आदि) के प्रारंभ का आधार जैविक है, जबकि मनोवैज्ञानिक आवष्यकताओं के संदर्भ में ऊर्जा परिवर्तन की निष्चित जैविक प्रकृति का पता नहीं लगाया जा सकता।
- सामान्यतया अभिप्रेरणा का उदय **भावात्मक उत्तेजना** द्वारा होता है। भावात्मक उत्तेजना का अर्थ व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति से है। इसका हमेषा तीव्र होना आवष्यक नहीं है जैसे कि अपनी मेज पर काम करते समय षिक्षार्थी की भावात्मक उत्तेजना कम होती है।
- अभिप्रेरणा की एक विशेषता **अग्रिम लक्ष्य प्रतिक्रिया** है जिसका अर्थ है कि अभिप्रेरित व्यक्ति द्वारा की गई प्रतिक्रियाएँ उसके लक्ष्य पूर्ति में सहायक होती हैं।

इस प्रकार इस परिभाषा के तीनों तत्व अभिप्रेरणा के उदय से लेकर लक्ष्य प्राप्ति तक की प्रक्रिया का प्रतिमान प्रस्तुत करते हैं।

इसका अर्थ है कि **अभिप्रेरणा** वह है जो व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने की दिषा में किसी विशेष समय पर कोई विशेष क्रिया करने के लिए प्रेरित, अर्जित तथा मजबूर करती है।

मास्लो, जिसने **आत्म-अनुभूति का सिद्धान्त** दिया, ने अभिप्रेरणा को इस प्रकार परिभाषित किया है:

"Motivation is constant never ending, fluctuating and complex and that it is an almost universal characteristic of particularly every organismic state of affairs."

"अभिप्रेरणा एक निरंतर कभी समाप्त न होने वाली, अस्थिर और क्लिष्ट प्रत्यय है और प्रत्येक जैविक क्रियाकलाप में एक सार्वभौमिक लक्षण है।"

ये सभी परिभाषाएँ कुछ प्रष्नों को जन्म देती हैं जैसे क्या अभिप्रेरित करता है और क्या नहीं? अभिप्रेरणा के लिए क्या उत्तरदायी है? अभिप्रेरणा कैसे मिलती है और इसमें वैयक्तिक भिन्नता क्यों पाई जाती है?

इन सभी प्रश्नों के उत्तर के प्रति अधिकतर मनोवैज्ञानिकों का मत है कि अभिप्रेरणा मुख्य रूप से तीन मूल तत्वों **आवष्यकता**, **अन्तर्नोद** और **प्रोत्साहन** से जुड़ी होती है।

7.4.1 आवष्यकताएँ, अन्तर्नोद और प्रोत्साहन

अभिप्रेरणा के प्रत्यय का विकास मूल प्रवृत्ति से हुआ है और यह पूर्व और वर्तमान प्रवृत्ति के अवक्षेपण (precipitation) द्वारा चालित होता है। आजकल मनोविज्ञान में अवक्षेपण का प्रयोग अन्तर्नोद और प्रोत्साहन को इंगित करने में किया जाता है। लेकिन मूल अंतर इस अभिकथन में निहित है कि अन्तर्नोद की स्थिति केवल पूर्व प्रवृत्ति और प्रोत्साहन ही नहीं बल्कि अवक्षेपण का स्रोत भी है।

आवष्यकता

आवष्यकता सामान्य अपेक्षाओं और इच्छाओं को कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर अपने कार्यों में सुधार द्वारा अपनी मूल आवष्यकताओं को संतुष्ट करने का प्रयास करता रहता है। मूल रूप से आवष्यकताएँ दो प्रकार की होती हैं:

1) **जैविक आवष्यकताएँ** जैसे हवा, पानी, भोजन, आराम, मल त्याग, अधिकतम तापमान, कामेच्छा और संवेदनात्मक आवष्यकताएँ, आदि।

2) **सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवष्यकताएँ** व्यक्ति के मनो-वैज्ञानिक वातावरण से संबंधित होती हैं। इनके अंतर्गत आजादी, सुरक्षा, प्यार, स्नेह, उपलब्धि, पहचान, अनुमोदन, आत्माभिव्यक्ति अथवा आत्म-अनुभूति आदि की आवष्यकता। मेस्लो ने मानवीय आवष्यकताओं को उनके पदक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया है। इसका अर्थ है कि आवष्यकताएँ अंतर-संबंधित होती हैं और एक आवष्यकता की पूर्ति दूसरी पर निर्भर करती है।

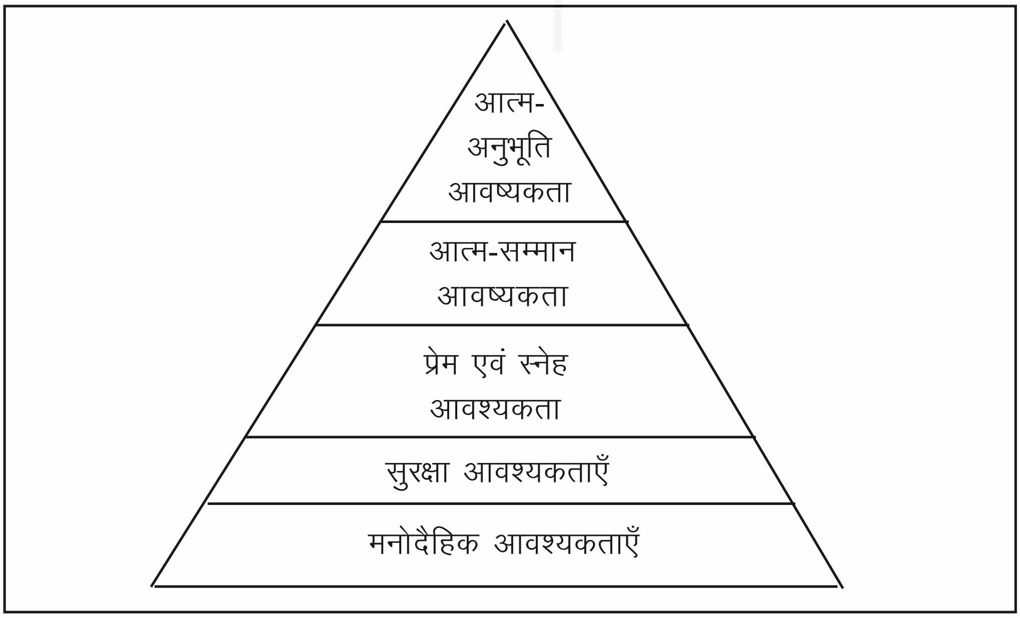

चित्र 7.1: अब्राहम मॉस्लो (1954) द्वारा प्रस्तुत आवष्यकता श्रेणीक्रम

अन्तर्नोद (चालक)

आवष्यकता अन्तर्नोद को जन्म देती है जिसे सजगता, प्रवृत्ति अथवा तनाव की ऐसी स्थिति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो किसी व्यक्ति को अपनी सामान्य क्रियाओं के स्तर को बढ़ाने के लिए बाध्य करती है। किसी भी प्रकृति के अन्तर्नोद को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है:

1) **जैविक या प्राथमिक अन्तर्नोद :** भूख, प्यास, काम आदि।
2) **सामाजिक-मनोवैज्ञानिक अन्तर्नोद :** डर, चिंता, स्वीकृति की इच्छा, आक्रामकता, आदि।

आवष्यकता चाहे दैहिक हो या मनोवैज्ञानिक, प्रत्येक व्यक्ति उसे संतुष्ट करने का प्रयास करता है। आवष्यकता को पूरा करने की मूल प्रवृत्ति ही अन्तर्नोद कहलाती है जो व्यक्ति को वांछित दिषा में प्रयास करने के लिए बाध्य करती है। अन्तर्नोद व्यक्ति को आवष्यकतापूर्ति की दिषा में कार्य करने को निर्देषित करते हैं। अन्तर्नोद की तीव्रता आवष्यकता की प्रकृति पर निर्भर करती है।

अन्तर्नोद और प्रोत्साहन

अन्तर्नोद सामान्यतया प्रोत्साहन/प्रलोभन द्वारा निर्देषित होते हैं। प्रषंसा, पुरस्कार और बोनस, आदि प्रोत्साहन के कुछ उदाहरण हैं। प्रोत्साहन अन्तर्नोद को अधिक शक्तिषाली बनाने के प्रेरणा स्रोत का कार्य करता है। प्रोत्साहन वास्तव में वह वस्तु या घटना होती है जो किसी व्यवहार को प्रोत्साहित या निरुत्साहित करने का कार्य करते हैं।

षिक्षण एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें षिक्षार्थी को ज्ञान, समझ, कौषल और मूल्य प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वे सभी परिणाम प्राप्त किए जाते हैं। यदि षिक्षार्थी में अभिप्रेरणा है तो षिक्षण और अधिगम दोनों को सुचारू रूप से सम्पादित किया जा सकता है। आपको यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि यदि सीखने के लिए अभिप्रेरणा पर्याप्त दषा/स्थिति भले न हो पर अति आवष्यक है।

अभिप्रेरित व्यवहार

यदि आप अपने षिक्षार्थियों का विश्लेषण करें तो पाएँगे कि वे अपनी प्रतिदिन की गतिविधियों और कार्यों में चयन करने की प्रवृत्ति रखते हैं। किसी विषय को सीखने के लिए बहुत से षिक्षार्थी कक्षा से बाहर की गतिविधियों का चयन करते हैं जबकि अन्य स्वयं को कक्षागत क्रियाकलापों तक ही सीमित रखते हैं। बहुत से षिक्षार्थी अपने रहन-सहन के मामले में बहुत कठोर होते हैं और वे उसमें कोई बदलाव पसंद नहीं करते जैसे प्रतिदिन देर तक सोना आदि। यदि उनमें से कोई पिज़्ज़ा खाने या पार्टी में आने के लिए कहता है तो वे साफ मना कर देते हैं।

वास्तव में षिक्षार्थी से सदैव रचनात्मकता की अपेक्षा की जाती है। मौजमस्ती करना या समय बर्बाद करना जीवन का हिस्सा है! तथापि, उनके द्वारा किए गए चुनाव जीवन में लक्ष्य प्राप्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अभिप्रेरित व्यवहार का दूसरा पहलू, **क्रियाकलापों का स्तर** अथवा कार्य में संलग्नता है। कुछ षिक्षार्थी अपने पाठ्यक्रम में बहुत अधिक व्यस्त रहते हैं। वे कार्य के बाद भी अपने अधिगम को स्थायी और गहन करने के लिए पर्याप्त प्रयास करते हैं और इस हेतु अधिगम की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ अपनाते हैं जैसे - पढ़ाई गई सामग्री को फिर से पढ़ना, स्वयं के नोट्स तैयार करना आदि। दूसरे षिक्षार्थी जो पाठ्यक्रम में कम संलग्नता रखते हैं, उनका न्यूनतम अधिगम करते हैं।

दृढ़ता अभिप्रेरित व्यवहार का तीसरा पहलू है। जब कार्य कठिन, अरुचिकर या ग़ैर-चुनौतीपूर्ण हो तो षिक्षार्थी की कार्य को करने की दृढ़ता उसकी अभिप्रेरणा और शैक्षिक सफलता की महत्वपूर्ण कारक होती है। अपने शैक्षिक कार्यों से संबंधित अनुभवों के दौरान बहुत से मामलों में षिक्षार्थी को अपने प्रयासों और कार्य की धुन/हठ को नियंत्रित करना सीखना पड़ता है।

7.4.2 आंतरिक एवं बाह्य अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा का उदय कहाँ से होता है? क्या यह व्यक्ति के अंदर विद्यमान होती है या कोई बाहरी शक्ति है? यह वह प्रष्न है जो हम में से अधिकांष लोग पूछते हैं। आप कह सकते हैं कि अभिप्रेरणा का उदय आवष्यकता, अन्तर्नोद, या प्रोत्साहन के कारण होता है। यह भय, लक्ष्य और सामाजिक दबाव के कारण भी हो सकता है। कुछ लोगों का कहना है कि यह रुचि, विष्वास या अपेक्षाओं के कारण होता है।

आइए, अब हम स्वयं से एक प्रष्न पूछते हैं।

हम सभी बहुत-सी पुस्तकें पढ़ते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकें, कहानी, उपन्यास, ऐतिहासिक पुस्तकें, संदर्भ-ग्रंथ आदि। एक अध्यापक के रूप में कभी-कभी आपको किसी विशेष प्रकरण से संबंधित पुस्तक पढ़ने के लिए पुस्तकालय जाने की आवष्यकता महसूस होती है।

ऐसा करने के लिए आपको क्या मजबूर करता है?

....

....

....

....

....

संभावित उत्तरः

– आप अपने षिक्षार्थियों द्वारा उठाए गए संषयों को दूर करना चाहते हैं।

– आप अपने षिक्षार्थियों के सम्मुख प्रकरण की और अधिक व्याख्या करना चाहते हो किन्तु पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त विवरण नहीं दिया गया है।

– षिक्षण के दौरान, अपनी ज्ञान-पिपासा शांत करने हेतु आपको और अधिक जानकारी की आवष्यकता महसूस होती है .... और अन्य अनेक कारण

उपर्युक्त उत्तरों से यह स्पष्ट है कि अभिप्रेरणा के लिए बाहय, आंतरिक और वैयक्तिक कारण होते हैं। ये कारण अभिप्रेरणा की बाहय और आंतरिक अभिप्रेरणा के रूप में वर्गीकृत करते हैं।

बाहरी कारकों जैसे पुरस्कार अथवा कुछ अन्य चीज देने का प्रलोभन, जो कार्य करने के लिए बाह्य तत्व हैं, से जन्मा अभिप्रेरणा **बाह्य अभिप्रेरणा** कहलाते हैं।

दूसरी तरफ कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जिनमें अभिप्रेरणा का स्रोत कार्य के अंदर निहित होता है। आंतरिक अभिप्रेरणा उन क्रियाकलापों से संबंधित है जो अपने आपमें पुरस्कार हैं। ऐसी स्थितियों में कार्य अपने आपमें इतना रुचिकर होता है कि उसे अभिप्रेरणा के किसी

बाह्य स्रोत की आवष्यकता नहीं होती है। ऐसी स्थिति में नियंत्रण का केन्द्र व्यक्ति के अंदर ही निहित होता है।

हम कह सकते हैं कि दोनों में मुख्य अंतर यह है कि क्रिया करने के लिए **कार्य-कारण का केन्द्र** (Locus of casuality) आंतरिक है अथवा बाह्य।

क्रियाकलाप 1

अपने षिक्षार्थियों के कुछ क्रियाकलापों की एक सूची बनाइए और आवष्यकता/ कार्य-कारण का केन्द्र पहचानिए। निम्न तालिका में इन्हें बाह्य अथवा आंतरिक के रूप में वर्गीकृत कीजिए।

क्रियाकलाप	आवष्यकता/ कार्य-कारण का केन्द्र	अभिप्रेरणा का प्रकार
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

7.4.3 अभिप्रेरणा के उपागम

विभिन्न विचारधाराओं में अभिप्रेरणा की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से की गई है। इस भाग में हम अभिप्रेरणा को समझने के लिए चार उपागमों व्यवहारात्मक, मानवतावादी, ज्ञानात्मक और सामाजिक उपागम की व्याख्या करेंगे।

व्यवहारात्मक उपागम कक्षा में अभिप्रेरणा के संदर्भ में बाह्य पुरस्कार और दंड की भूमिका से संबंधित है। इस उपागम के अनुसार, किसी विशेष व्यवहार को प्रोत्साहित अथवा निरुत्साहित करने में प्रोत्साहन के रूप में दिए गए उद्दीपक की सकारात्मक और नकारात्मक भूमिका अति महत्वपूर्ण है। षिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भी पुरस्कार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह उपागम षिक्षार्थियों को अधिक से अधिक अभिप्रेरित करने के लिए ग्रेड्स, स्टार्स, पुरस्कार, प्रमाणीकरण, प्रषंसा, आदि के प्रयोग पर बल देता है।

मानवतावादी उपागम वैयक्तिक विकास हेतु षिक्षार्थी को भविष्य के लिए विकल्प चुनने की स्वतंत्रता और सकारात्मक दृष्टिकोण की क्षमता पर बल देता है। इस उपागम का मत है कि आंतरिक स्रोत जैसे प्रतियोगिता की भावना, आत्म-सम्मान, स्वायत्तता और आत्म-अनुभूति आदि व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाले कारक हैं। मेस्लो का आवष्यकता श्रेणीक्रम इस उपागम का अच्छा उदाहरण है (उपभाग 7.4.1 में चित्र 7.1 देखिए)।

ज्ञानात्मक उपागम का मत है कि अभिप्रेरणा षिक्षार्थी के विचारों के कारण घटित होती है। वे अधिगम में बाहरी अभिप्रेरणा में विष्वास नहीं करते। उनका विष्वास है कि षिक्षार्थी की अधिगम के लिए आंतरिक अभिप्रेरणा, उनके गुण (व्याख्या करना, स्पष्टीकरण करना, क्षमायाचना करना) और उनका अपने वातावरण को नियंत्रित करने का विष्वास अभिप्रेरणा में सहायक होते हैं। षिक्षार्थी सक्रिय और जिज्ञासु होते हैं जो अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोजते रहते हैं।

सामाजिक विचारधारा का विष्वास है कि सामाजिक समूह में मान्यता, प्रषंसा और पहचान पाने की इच्छा षिक्षार्थी को अभिप्रेरित करती है जबकि षिक्षार्थी अपने समवाय समूह (peer groups) के साथ समय व्यतीत करता है। अपने समवाय समूह, माता-पिता और रिष्तेदारों के साथ नजदीकी संबंध बनाता है तो सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में अपने कार्यों की पहचान की इच्छा उसे अभिप्रेरित करती है। यह उपागम विभिन्न क्रियाओं को करने के लिए समुदाय में भागीदारी, पहचान और अन्तर-वैयक्तिक संबंधों पर बल देती है।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

2) अभिप्रेरणा के व्यवहारवादी, मानवतावादी, ज्ञानात्मक और सामाजिक उपागमों की तुलना कीजिए।

....

....

....

....

....

....

7.4.4 अधिगम में अभिप्रेरणा

अधिगम में अभिप्रेरणा की क्या भूमिका है?

ब्रूफी (1988) ने अभिप्रेरणा को इस प्रकार परिभाषित किया है "To learn as 'a learner', tendency to find academic activities meaningful and worthwhile and to try to drive the intended academic benefits from them." (पृष्ठ 205-206)।

अधिगम में अभिप्रेरणा की मुख्य विशेषताएँ हैं:

– यह व्यक्ति को अधिगम के लिए अपेक्षा से अधिक संलग्न करती हैं।

– इसमें षिक्षार्थी के मानसिक प्रयासों की विशेषता सम्मिलित है।

प्रत्येक अध्यापक यह मानता है कि उसके षिक्षार्थी सीखने के लिए अभिप्रेरित हैं लेकिन यह कभी भी सत्य नहीं होता। एक अध्यापक के रूप में आपको कुछ निष्चित लक्ष्य प्राप्त करने पड़ते हैं।

– सीखने के लिए अभिप्रेरित करने के लिए सभी षिक्षार्थियों को कक्षा के सभी क्रियाकलापों में क्रियात्मक रूप से संलग्न करें अर्थात **अधिगम हेतु अभिप्रेरणा की अवस्था निर्मित करना।**

– अपने षिक्षार्थियों में **सीखने के लिए अभिप्रेरित होने की आदत** विकसित करें। आपके षिक्षार्थी जीवनभर जब भी उन्हें सीखने का अवसर प्राप्त हो, विभिन्न स्रोतों से सीखने के लिए तैयार रहने चाहिए।

– उन्हें **विचारषील** बनाएँ जिससे वे क्या पढ़ते हैं इसके विषय में गहराई से सोच सकें। इस हेतु उन्हें मूल विचारों की व्याख्या, सारांष, अपने शब्दों में मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाष

डालना, संबंधों का चित्रों के माध्यम से प्रस्तुतीकरण, आदि क्रियाओं का अभ्यास करवाया जा सकता है।

षिक्षक की भूमिका

षिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करने के लिए एक षिक्षक क्या कर सकता है? यहाँ कुछ युक्तियाँ दी गई हैं, आप जिन्हें प्रयोग कर सकते हैं अथवा अपनी स्वयं की युक्तियाँ भी बना सकते हैं।

- आप भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि के लिए **अधिगम केन्द्रों** का विकास कर सकते हैं, जहाँ आप षिक्षार्थियों को वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अपनी पसंद की परियोजनाओं पर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। आप कुछ **समरूचि समूह** भी निर्मित कर सकते हैं।
- आंतरिक रूप से अभिप्रेरित अध्यापक के रूप में आपके उत्साह, आत्मविष्वास और आपकी अपने विषय में निपुणता षिक्षार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। आपको अपने षिक्षार्थियों की योग्यता और कुषलता में उनके आत्मविष्वास के स्तर को बढ़ाना चाहिए।
- बच्चों के शैक्षिक कार्य को अधिक आनंद और रुचिपूर्वक करने योग्य बनाएँ।
- कक्षा में ऐसे वातावरण का निर्माण करना, जहाँ षिक्षार्थी अपने विचारों को व्यक्त करने, विचार-विमर्ष करने और तर्क-वितर्क करने के लिए स्वतंत्र हो। आलोचनात्मक विचारधारा को बढ़ावा दिया जाए और उन्हें अपनी आलोचना स्वीकार करने के लिए भी तैयार किया जाएँ।
- षिक्षण को षिक्षार्थियों के स्तर से आरंभ करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए।
- अधिगम के लक्ष्य ऐसे निर्धारित करने चाहिए जिसको प्राप्त करना संभव हो सके।
- अधिगम लक्ष्य को प्राप्त करने के संबंध में आपकी **स्पष्टता, विशिष्टता और लक्ष्य तक पहुँचने की योग्यता** षिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करती है। छोटे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ने की भावना बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करती है।
- षिक्षार्थियों में **स्वयं अपनी तुलना की आदत** को बढ़ावा दिया जाए, जैसे उनमें सुनने की आदत विकसित की जाए जिससे वे स्वयं चिंतन करें कि क्या गलत है और क्यों गलत है। बच्चों के कार्यों की आपस में तुलना से बचना कीजिए।
- षिक्षार्थियों में **समस्या-समाधान की आदत** विकसित करें। उन्हें समस्या का विश्लेषण करने, समाधान का पता लगाने और सर्वाधिक उचित समाधान को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

3) एक अध्यापक के रूप में आप अधिगम में अभिप्रेरणा को बढ़ावा देने के लिए क्या कर सकते हैं?

....

....

....

7.5 अभिक्षमता

कक्षा VIII के षिक्षार्थियों को कक्षा IX में पदोन्नत कर दिया गया है। उनकी कक्षा अध्यापिका रेहाना उनका परिचय कक्षा IX की नई कक्षा अध्यापिका से कराते हुए कुछ निष्चित कथनों का प्रयोग करती है, जैसेः

रोहित से मिलिए, यह गणित में बहुत अच्छा है। यह अपनी पाठ्यपुस्तक से बाहर की समस्याओं को भी हल कर देता है और हमेषा समस्याओं/प्रष्नों को हल करने के लिए उत्सुक रहता है और ज्यामिती और बीजगणित में विशेष रुचि लेता है।

यह जेनी है, कक्षा की बहुत प्रखर वक्ता। यह अद्यानुतन विषयों पर वाद-विवाद में हिस्सा लेने के लिए सदैव उत्सुक रहती है। इसकी कल्पनाषक्ति बहुत अच्छी है और यह एक अच्छी लेखिका भी है। इसमें एक अच्छा उपन्यासकार बनने की क्षमता है।

यह हमारा शतरंज चैम्पियन अब्राहम है। शैक्षिक क्षेत्र में इसका प्रदर्षन अच्छा है लेकिन यह शतरंज में बहुत अच्छा है। इसने पिछले साल राष्ट्रीय जूनियर शतरंज प्रतियोगिता में भाग लिया था और सिल्वर मैडल प्राप्त किया था।

इसी प्रकार से रेहाना ने सभी षिक्षार्थियों की योग्यताओं के बारे में बताते हुए एक-एक करके उनका परिचय कराया और विभिन्न क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियों की प्रषंसा की।

उपर्युक्त दृश्य के आधार पर आपको क्या पता चल सकता है? आप एक बात कह सकते हो कि रेहाना षिक्षार्थियों की वैयक्तिक रुचियों ओर उपलब्धियों/योग्यताओं से भली-भाँति परिचित हैं। दूसरी बात जो आपको पता चलती है, वह यह है कि कक्षा में सभी एक समान नहीं हैं। प्रत्येक को किसी क्षेत्र विशेष में विशिष्ट योग्यता है। कभी-कभी हमें उनकी रुचि के विषय में भ्राँति हो सकती है। किसी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए सदैव रुचि पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। यहीं पर अभिक्षमता की भूमिका सामने आती है क्योंकि अभिक्षमता और रुचि एक नहीं है।

7.5.1 अभिक्षमता क्या है?

अभिक्षमता योग्यताओं के उस समूह की ओर संकेत करती है जिनका ज्ञान और कुषलता प्राप्त करना किसी क्षेत्र विशेष में प्रदर्षन हेतु आवष्यक होता हैं यह निष्चित रूप से यह किसी विशिष्ट क्रियाकलाप को करने के लिए आवष्यक योग्यताओं के समूह को इंगित करती है। जैसे जब हम इंजीनियरिंग के लिए अभिक्षमता और कला की अभिक्षमता की बात करते हैं तो इंजीनियरिंग के अधिगम और प्रदर्षन में प्रयुक्त होने वाली योग्यताएँ कला की योग्यताओं से भिन्न होती हैं। दवाइयों, गणित, विज्ञान, संगीत, षिक्षण या खेल, आदि के विषय में भी यही सत्य है। अभिक्षमता के घटक, योग्यताओं के इन समूहों के विषय में हमें और अधिक जानकारी देंगे।

अभिक्षमता के घटक क्या हैं?

बौद्धिक प्रक्रियाएँ अभिक्षमता के मुख्य घटकों में से एक है। यह चिंतन से संबंधित बहुआयामी ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे स्मृति प्रक्रियाएँ, विचारों और संकेतों की पुनर्संरचना, संबंधों की अनुभूति और विचारों के बीच अनुक्रम, स्थानिक व्यापकता अथवा उन्मुखीकरण, तर्कषक्ति, समस्या-समाधान, न्याय आदि की ओर संकेत करती हैं। ये ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ किसी कार्य को करते समय सूचनाओं को पहचानने के लिए, और नवाचार अविष्कार या खोज के लिए अति महत्वपूर्ण हैं।

अभिक्षमता का दूसरा घटक **संवेदी** घटक है और यह संवेदी प्रक्रिया से संबंधित योग्यताएँ जैसे अवलोकन और श्रवण परीक्षण, आदि को दर्षाता है। अवलोकन का अर्थ दृष्टि संबंधित संवेदनषीलता (जैसे रंगों के प्रति संवेदनषीलता, आदि) से है। श्रवण परीक्षण का अर्थ है धुनों को स्वरों के विभिन्न स्तरों पर सुनने की योग्यता (जैसे स्वरों में अंतर आवाज की प्रबलता में अंतर, आदि)।

अगला घटक **मनोगतिक** घटक है जो संपूर्ण शारीरिक गतियों या इसके अंगों जैसे हाथ, ऊंगलियों, भुजाओं, सूंड आदि संलग्न योग्यताओं में उच्चतम कुषलताओं को इंगित करता है। संलग्न योग्यताएँ शक्ति, आवेग, गति, निष्चितता और लचीलापन, आदि हैं। शक्ति का अर्थ है शारीरिक अंगों– पैर, सूंड, हाथ (जैसे हाथों की पकड़) की शक्ति। आवेष गति के शुरु होने को दर्षाता है और इसकी पहचान प्रकाष या ध्वनि की प्रतिक्रिया समय के प्रयोग करने से की जा सकती है (जैसे किसी कार्य को प्रदर्षित करते समय हाथ या ऊंगली या पैर की गति)। लचीलेपन का अर्थ है जोड़ों में ढ़ीलापन (जैसे घुटने मोड़े बिना हाथ की ऊँगलियों से पैर के अंगूठे को छूना)।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि जब हम अभिक्षमता की बात करते हैं तो हमारा आषय यांत्रिक अभिक्षमता से होता है, जोकि यांत्रिक क्रिया जैसे कलम से लिखने में ज्ञानात्मक, संवेदी और मनोगतिक प्रक्रियाओं से संबंधित एक अलग समन्वय है। यही बात गणितीय, संगीत, ग्राफिक, कला या खेल अभिक्षमता के विषय में भी लागू होती है। यहाँ आप यह प्रष्न पूछ सकते हैं कि हम मनोगतिक क्षेत्र के अंतर्गत ज्ञानात्मक घटक की चर्चा क्यों कर रहे हैं। जब हम विशिष्ट क्रियाओं को करते हैं तो हमें मनोगतिक घटक पर विचार-विमर्ष करने की आवष्यकता पड़ती है। ये क्रियाकलाप दैनिक दिनचर्या के कार्यों को करने के लिए ज्ञान और कौषल प्राप्त करने के लिए जरूरी है। इसके लिए, हम एक पायलट का उदाहरण ले सकते हैं। एक पायलट अपने हवाई जहाज के लिए मार्ग खोजते समय अनेक जटिल ऑपरेषन निष्चितता और गति के साथ संपादित करता है जिसमें ज्ञानात्मक, संवेदात्मक और मनोगतिक घटकों से संबंधित योग्यताएँ सम्मिलित होती हैं।

अभिक्षमता बुद्धि से किस प्रकार भिन्न है? बुद्धि, मानसिक योग्यताओं और कौषलों के समूह को दर्षाती है जबकि अभिक्षमता से आषय उन योग्यताओं के समूह से है जो निष्चित विशिष्ट क्षेत्रों जैसे षिक्षण अभिक्षमता, यांत्रिक अभिक्षमता आदि में व्यक्ति के प्रदर्षन को निर्देषित करते हैं। आप अभिक्षमता और शैक्षिक उपलब्धि में भी अंतर जानना चाहेंगे। तथापि भविष्य के लिए अधिगम को सुनिष्चित करने में दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। शैक्षिक उपलब्धि दी गई समयावधि में किसी विशिष्ट विषय अथवा विषयों के समूह के अधिगम के प्रभाव को प्रदर्षित करती है। अभिक्षमता दैनिक जीवन में योग्यताओं के समूहों और बहुल अनुभवों (जिसमें विषयगत अधिगम भी सम्मिलित है) के प्रभाव को प्रदर्षित करती है। जैसे आपकी कक्षा का कोई षिक्षार्थी बहुत अधिक बुद्धिमान है लेकिन वह सार्वजनिक रूप से बोलने या नृत्य करने में रुचि नहीं रखता।

7.5.2 क्या अभिक्षमता में वैयक्तिक भिन्नता होती है?

जी हाँ, अधिगम में वैयक्तिक भिन्नता होती है। कोई व्यक्ति यांत्रिक अभिक्षमता रखता है, किसी अन्य व्यक्ति में गणितीय अभिक्षमता होती है अथवा अन्य किसी को भाषा, संगीत या खेलों में अभिक्षमता हो सकती है। ये भिन्नताएँ ज्ञानात्मक, संवेदी और मनोगतिक प्रक्रियाओं से संबंधित योग्यताओं के समन्वय में अंतर के कारण होती हैं। उदाहरण के लिए, जब हम यांत्रिक अभिक्षमता की बात करते हैं तो हमारा आषय संवेदी और मनोगतिक योग्यताओं के अतिरिक्त स्थानिक संबंधों, यांत्रिक मामलों से संबंधित सूचना प्राप्त करना और यांत्रिक

संबंधों को समझने की योग्यताओं से भी होता है। इसी प्रकार संगीत में अभिक्षमता से आषय संगीत और ताल संबंधी निर्णय की योग्यता से है। इसी प्रकार विज्ञान या गणित की योग्यताएँ भिन्न हैं और प्रत्येक के लिए अलग-अलग योग्यताओं के समूहों की आवष्यकता पड़ती है।

अभिक्षमता में भिन्नता का पता अभिक्षमता परीक्षण प्रयोग करके लगाया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे यांत्रिक कौषलों, गणित, विज्ञान, भाषा, संगीत और ग्राफिक, कला, आदि में अभिक्षमता परीक्षणों द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में षिक्षार्थी की योग्यता का पता लगाया जा सकता है। आपने, मेडिकल, इंजीनियरिंग, व्यापार प्रबंधन, कानून अथवा षिक्षण-प्रषिक्षण आदि में अध्ययन हेतु षिक्षार्थियों के चयन के लिए अभिक्षमता परीक्षणों के विषय में अवष्य सुना होगा। अभिक्षमता परीक्षण वास्तव में अध्ययन के किसी क्षेत्र में जैसे-मेडिसन का अध्ययन, उम्मीदवार के सीखने की योग्यता का पता लगाने का एक पैमाना प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अभिक्षमता परीक्षण हमें बताता है कि संबंधित क्षेत्र में अध्ययन से लाभ उठाने के लिए उम्मीदवार में आवष्यक योग्यता या तत्परता है अथवा नहीं।

7.5.3 अनुदेषन युक्तियाँ

व्यक्तिगत भिन्नता के समन्वय हेतु **अनुकूलित अनुदेषन प्रणाली उपागम** का सुझाव दिया गया है। इस उपागम में शैक्षिक सफलता को सुनिष्चित करने हेतु कम से कम दो वैकल्पिक अनुदेषनात्मक प्रयोगों की आवष्यकता होती है। सर्वाधिक उपयुक्त अनुदेषनात्मक प्रयोग कौन-सा है? यह षिक्षार्थी की अभिक्षमता (सीखने की तत्परता) के वर्तमान स्तर पर निर्भर करता है। उच्च अभिक्षमता रखने वाले षिक्षार्थी असंरचित अनुदेषनात्मक आव्यूह का चुनाव कर सकते हैं। षिक्षक के न्यूनतम मार्गदर्षन में वे खोजोन्मुखी उपागम के प्रयोग द्वारा सीखने को प्रेरित हो सकते हैं। आप आगमन पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं लेकिन अनुदेषन प्रयोग आवष्यक रूप से षिक्षार्थी केन्द्रित होता है।

इसके विपरीत निम्न अभिक्षमता वाले षिक्षार्थियों के लिए उच्च संरचित अनुदेषनात्मक प्रयोग का प्रारूप, क्रमबद्ध पदों और पृष्ठ-पोषण का प्रयोग करते हुए छोटी-छोटी इकाइयों के रूप में तैयार किया जाता है। साधारण उदाहरण द्वारा प्रकरण का बार-बार सार-संक्षेप और समीक्षा, समरूपता और सही व्याख्या और सीखे जाने वाले सिद्धान्त विकासात्मक अधिगम में सहायक होंगे। सामयिक उपलब्धि और अभिक्षमता मूल्यांकन में प्राप्त प्राप्तांकों की तुलना अनुदेषन के प्रारंभ में प्राप्त की गई अभिक्षमता प्राप्तांकों से करने पर विशेष प्रयोग समूह में प्रत्येक षिक्षार्थी की उपलब्धि के स्तर का पता चल जाएगा।

तथापि, जो लोग ऊपर दिए गए वैकल्पिक प्रयोगों से लाभ उठाने में अक्षम हैं उनको **क्षतिपूर्ति अभिक्षमता प्रषिक्षण** का सुझाव दिया जाता है। इसके अंतर्गत पढ़ना कौषल, अध्ययन की आदत, स्व-अधिगम कौषल, मुख्य बिन्दु लिखना और संबंधित क्रियाकलाप सम्मिलित हैं। क्षतिपूर्ति अभिक्षमता प्रषिक्षण का मुख्य उद्देष्य संरचित प्रयोग में प्रवेष हेतु तत्परता विकसित करना है। कौन-से षिक्षार्थियों ने वैकल्पिक प्रयोग में प्रवेष हेतु आवष्यक स्तर प्राप्त कर लिया है इसका पता लगाने के लिए सामयिक पर्यवेक्षण निर्धारित किया जाना चाहिए।

षिक्षकों के लिए अभिक्षमता का निहितार्थ

1) अभिक्षमता में व्यक्ति की जन्मजात क्षमताएँ और वातावरण का प्रभाव दोनों सम्मिलित हैं।

2) किसी क्षेत्र में अधिगम षिक्षार्थी की सीखने की तत्परता पर निर्भर करता है।

3) विशिष्ट अभिक्षमता प्रारंभ में प्रतिभा के रूप में और भविष्य में प्रषिक्षण हेतु तत्परता के रूप में सामने आती है।

क्रियाकलाप 2

विद्यालय में अपने प्रषिक्षण (इंटर्नषिप) के दौरान अपने षिक्षार्थियों के लिए सामान्य अभिक्षमता परीक्षण बैटरी या विभेदी अभिक्षमता परीक्षण प्रषासित कीजिए। परीक्षण के प्रारूप को आपके कार्यक्रम अध्ययन केन्द्र या आपके क्षेत्र के अन्य किसी षिक्षण प्रषिक्षण संस्थान की मनोवैज्ञानिक प्रयोगषाला से प्राप्त किया जा सकता है। आँकड़े एकत्र करें और प्राप्यों के आधार पर एक प्रतिवेदन तैयार कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4) निम्न अभिक्षमता वाले षिक्षार्थियों के लिए आप कौन-सा अनुदेषनात्मक प्रयोग करेंगे?

....

....

....

....

....

....

....

7.6 अभिवृत्ति

अभिवृत्ति व्यक्तित्व का वह गुण है जो व्यक्ति की पसंद या नापसंद को दर्षाता है। किसी वस्तु, संस्था या व्यक्ति के प्रति व्यवहार पर व्यक्ति की अभिवृत्ति का प्रभाव पड़ता है। वस्तु विशेष के प्रति अभिवृत्ति पर व्यक्ति के माता-पिता, अध्यापकों, विद्यालय और समाज जिसमें वह रहता है, का प्रभाव पड़ता है। किसी वस्तु के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में हम वैयक्तिक भिन्नताओं की चर्चा करेंगे।

7.6.1 अभिवृत्ति की प्रकृति

हमारे चारों ओर के वातावरण में सभी प्रकार की वस्तु, व्यक्ति, समूह और संस्थाएँ सम्मिलित हैं। अपने वातावरण से अन्तर्क्रिया द्वारा व्यक्ति बहुत से अनुभवों से रूबरू होता है। लेकिन बार-बार एक जैसे अनुभवों का सामना होने पर वह नए ढंग से प्रतिक्रिया नहीं करता। इन वस्तुओं के प्रति संज्ञान, भावनाएँ और स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ एक समर्थ एवं पूर्व निर्धारित प्रणाली के अंतर्गत उत्पन्न एवं व्यवस्थित होती हैं। जब भी व्यक्ति का सामना इन वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति या विचार से होता है तो उसके अंदर विद्यमान भावनाएँ और प्रतिक्रिया की आदतों की अभिवृत्ति उसे इन वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों या विचारों के प्रति विशेष प्रतिक्रिया करने को विवष करती हैं और इनके प्रति उसकी प्रतिक्रिया में स्थायित्व की मात्रा होती है।

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने इसकी भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ दी हैं जो निम्न प्रकार हैं:

Allport (1935) "defined attitude as mental neural state of readiness organised through experiences, exerting a directive or dynamic influence on the individual response to all objects and situations to which it is related".

Schneider (1988), "Attitudes are evaluative reactions to persons objects and events. This includes your beliefs and positive and negative feelings about the objects".

Byron and Byrne (1987), "Attitudes can be defined as lasting, general evaluations of people (including oneself), objects or issues. Attitude is lasting because it persists across the time. A momentary feeling does not count as an attitude".

Vaughan and Hogg (1995) defined attitude as "A relatively enduring organisation of beliefs, feelings and behavioural tendencies towards socially significant objects, groups events or symbols or a general feeling or evaluation about some person, object or issues."

आमतौर पर जब हम किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति की बात करते हैं तो हम उसके व्यवहार के बारे में बताने का ही प्रयास कर रहे होते हैं। अभिवृत्ति उन चीजों का एक जटिल समन्वय है जिन्हें हम व्यक्तित्व, विष्वास, मूल्य व्यवहार, और अभिप्रेरणा कहते हैं। इसे एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है जब कोई कहता है, "वह अपने काम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखता है" बनाम "कोई अपने काम के प्रति बहुत खराब अभिवृत्ति रखता है।" हम परिस्थितियों को कैसे देखते हैं इसके साथ-साथ हम स्थितियों या वस्तुओं के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं यह परिभाषित करने में अभिवृत्ति हमारी सहायता करती है।

सकारात्मक और नकारात्मक अभिवृत्ति

बहुत-सी अभिवृत्तियाँ तटस्थ नहीं हो सकती क्योंकि षिक्षार्थी सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति अपने माता-पिता, समवाय समूह और विद्यालय से सीखता है। नकारात्मक अभिवृत्ति अनदेखी करना, असहमति, बहस, विवादों अथवा अन्य विरोधों को जन्म देती है। पक्षपात तथ्यों के परीक्षण से पूर्ण अपरिपक्व अथवा असामयिक निर्णय होता है। यह नकारात्मक अभिवृत्ति का मूल कारक होता है। नकारात्मक अभिवृत्ति उन लोगों के प्रति पक्षपात द्वारा उत्पन्न होती है, जो किसी न किसी रूप में एक दूसरे से भिन्न है, नकारात्मक अभिवृत्ति में व्यक्ति को वस्तु, व्यक्ति, स्थान या चीजों के साथ अंतर्क्रिया से रोकने की प्रवृत्ति होती है और फलस्वरूप उसको उन अनुभवों से भी वंचित कर देती है जो व्यक्ति के दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाने में सहायक हो सकते हैं। दूसरी तरफ सकारात्मक अभिवृत्ति व्यक्ति को दूसरे लोगों की सहायता करने, दूसरों का ध्यान रखने निःस्वार्थता द्वारा शान्तिपूर्ण जीवन जीने को प्रेरित करती है।

अभिवृत्ति का अर्जन और अभिवृत्ति परिवर्तन

प्रारंभ में हम सभी अपने माता-पिता की अभिवृत्ति का अनुकरण करते हैं। बाद में विद्यालय में अध्यापक और सहपाठी अभिवृत्ति निर्माण में सहायक होते हैं। अभिवृत्ति अपने स्वयं के अनुभव द्वारा भी अर्जित की जाती है। एक बार जो अभिवृत्ति बन जाती है वह आसानी से परिवर्तित नहीं होती। अनुभूति अथवा भ्रम में गलतियों की व्याख्या, अप्रतिबंधित या तर्कसंगत विश्लेषण पर्याप्त नहीं है क्योंकि अभिवृत्ति व्यक्ति में एक ऐसी स्थायी उप-प्रणाली को उत्पन्न करती है जिससे वह विकल्प, अनदेखी और तर्कों के द्वारा स्वयं के बचाव के लिए प्रवृत्त होता है। अभिवृत्ति चाहे अच्छी हो अथवा बुरी, परिवर्तित होती रहती है। व्यक्तित्व परिवर्तन और मूल्य प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तनों द्वारा बहुत से अभिवृत्तात्मक परिवर्तन हो जाते हैं।

7.6.2 अभिवृत्ति अधिगम को सुगम बनाना

अभिवृत्ति अधिगम को सुगम बनाने के लिए, आपको जो अभिवृत्ति अर्जित करनी है उसको पहचानने और उसके अर्थ को स्पष्ट करना आवष्यक है। एक बार यह हो जाने के बाद आपको अपनी अभिवृत्ति निर्माण से संबंधित अनुभव बाँटने चाहिए। यदि आप अपने अभिवृत्ति निर्माण से संबंधित अनुभवों को दूसरों के साथ बाँटते हो तो अधिक अच्छा होगा। यदि आप अभिवृत्ति अभ्यास और प्रोत्साहन हेतु उचित संदर्भों की व्यवस्था कर लेते हैं तो यह और भी अच्छा होगा। इसके लिए आप उस अभिवृत्ति को समझने और स्वीकार करने को सहज बनाने के लिए समूह तकनीक का प्रयोग भी कर सकते हैं। षिक्षार्थी को अपनी वांछित अभिवृत्ति को स्वयं पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करना और भी अधिक लाभकारी होगा।

अति-अभिवृत्ति से निपटना : सभी अभिवृत्तियों और मूल्यों का अनुपालन या स्वीकार्यता उद्देष्य नहीं है। तथापि, साथ रहने के लिए लोगों में सामान्य अभिवृत्तियों और मूल्यों का एक बड़ा हिस्सा होना चाहिए। वैयक्तिक विशिष्टता और वांछित समूह मानकों के अनुपालन की आवष्यकता के बीच में संतुलन हेतु समाज के संषोधित नियमों का पता लगाया जाना चाहिए।

7.6.3 अभिवृत्ति में वैयक्तिक भिन्नता

षिक्षार्थियों की अभिवृत्तियों में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। परिपक्वता स्तर, योजनाबद्ध अथवा अकस्मात अनुभव, भौतिक पर्यावरण, विद्यमान उत्साह, प्रदर्षन, लोकतंत्र और पारिवारिक वातावरण में संलग्नता, विद्यालयी षिक्षा, मित्र और मीडिया या सोषल मीडिया के समक्ष अनावरण (exposure) सभी के लिए एक समान नहीं होते हैं। इसी प्रकार, हम उसी व्यक्ति की अभिवृत्ति को अपनाते हैं जिसे हम पसंद करते हैं या जिसे हम पसंद नहीं करते उसकी अभिवृत्तियों को भी सामान्यतया नकार दिया जाता है, लेकिन यह पसंद नापसंद सभी के लिए एक जैसी नहीं होगी। एक व्यक्ति जिस चीज को पसंद करता है वह दूसरे के द्वारा नापसंद की जा सकती है। इसका परिणाम लोगों के मध्य वैयक्तिक भिन्नता के रूप में सामने आता है।

बौद्धिक रूप से परिपक्व व्यक्ति यदि यह अनुभव करता है कि उसकी अभिवृत्ति संकीर्ण, पक्षपातपूर्ण अथवा गलत है तो वह अपनी अभिवृत्तियों में परिवर्तन अथवा सुधार कर सकता है। इसके विपरीत बौद्धिक रूप से अपरिपक्व व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति नहीं छोड़ेगा चाहे पर्याप्त साक्ष्य यह सिद्ध करने के लिए दिए जाएँ कि उसकी अभिवृत्ति वांछित नहीं है।

चोरी और धोखेबाजी के प्रति अलग-अलग आयु वर्ग के षिक्षार्थियों की अभिवृत्ति भिन्न-भिन्न होती है। एक दस वर्ष की आयु में षिक्षार्थी में जालसाजी या धोखेबाजी और चोरी के विरुद्ध कठोर अभिवृत्ति हो सकती है। सोलह वर्ष की आयु में अपनी पृष्ठभूमि और बौद्धिक स्तर के

प्रभाव स्वरूप वह चोरी के प्रति कठोर अभिवृत्ति रखता है लेकिन वही षिक्षार्थी परीक्षा की स्थिति में धोखेबाजी को स्वीकार कर सकता है।

एक छोटे बच्चे में धर्म के प्रति श्रद्धापूर्ण अभिवृत्ति होती है। इस आयु में धर्म औपचारिक होता है। किषोरावस्था के बालकों में नास्तिकता और हठधर्मिता पाई जाती है। बाल्यकाल के दौरान सीखी गई धार्मिक कट्टरता और हठधर्मिता के स्तर में भी वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है, यहाँ तक कि किषोरावस्था में पहुँचने पर प्रारंभ में प्राप्त किया गया धार्मिक प्रकरणों का ज्ञान भी संदेहास्पद हो जाता है।

किषोरों में सत्ता (अध्यापक, प्रधानाचार्य, नेताओ और माता-पिता) के प्रति भिन्न-भिन्न अभिवृत्ति होती है जोकि उनकी अन्तर्क्रिया के दौरान प्राप्त संतोष या असंतोष की मात्रा पर निर्भर करती है। सामान्यतया किषोरावस्था में सत्ता के प्रति विरोधात्मक अभिवृत्ति होती है जबकि बाल्यावस्था में सत्ता के प्रति समर्पण करने वाली अभिवृत्ति पाई जाती है।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

5) अपनी कक्षा में भिन्न-भिन्न अभिवृत्तियों वाले षिक्षार्थियों का सामना किस प्रकार करोगे?

....

....

....

....

....

....

7.7 सृजनात्मकता

आदिकालीन मानव न तो हवाई जहाज से यात्रा करता था नहीं कार से, न तो टेलीफोन द्वारा बातचीत करता था, न टेलीविजन देखता था, न कम्प्यूटर प्रयोग करता था, न कपड़े पहनता था, न पक्के घरों में रहता था और न ही आजकल मिलने वाले भोजन जैसा भोजन खाता था। वास्तव में, मानव की आदिकाल से वर्तमान काल तक की यात्रा उसकी सृजनात्मकता की कहानी है। आओ, इस प्रकरण को और अधिक स्पष्ट रूप से समझें।

7.7.1 सृजनात्मकता क्या है?

सृजनात्मकता षिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली अभिव्यक्ति है। हम अक्सर सुनते हैं कि विद्यालयी षिक्षा का मुख्य उद्देष्य षिक्षार्थियों में सृजनात्मकता को प्रोत्साहन देना है। मूलतः सृजनात्मकता क्या है? इसकी परिभाषाएँ भी उतनी ही व्यापक है जितना कि इसका प्रयोग।

सृजनात्मकता कुछ ऐसा, जो कि नया है और समाज के लिए लाभकारी है को बनाने या खोज करने की योग्यता का नाम है। उदाहरणार्थ पेनिसिलीन की खोज, सापेक्षता का

सिद्धान्त का प्रतिपादन, टेलीविजन का निर्माण, टैगोर लिखित *गीतांजलि* और ऐसे ही अन्य अनेक कार्य सृजनात्मक क्रियाएँ हैं। सृजनात्मकता की परिभाषा बताती है कि जो भी निर्माण किया जाए वह नवीन और लाभकारी होना चाहिए। नवीन का अर्थ है जो भी निर्मित किया जा रहा है वह अप्रचलित प्रकृति का हो, चाहे वह पेनिसिलीन हो, सापेक्षता सिद्धान्त हो या गीतांजलि हो। इसमें कुछ नया उत्पादित करने पर जोर दिया जाता है। लाभ का भी उतना ही महत्व है जिसका अर्थ है सृजनात्मक उत्पाद, मनुष्य और समाज के लिए लाभदायक होने चाहिए। जैसे कि टैगोर की कृतियाँ मानवता के विषय में निष्चित मौलिक सत्यों के बारे में बताती हैं जो आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि उन्हें लिखे जाने के समय थी।

गिलफर्ड, हेज़, टायलर, टेलर, वॉलेक और कोगेन आदि मनोवैज्ञानिकों ने सामान्य रूप से नवीनता और लाभ को सृजनात्मकता के मुख्य पहलुओं के रूप में स्वीकार किया है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता को उत्पाद के रूप में परिभाषित किया है जहाँ पर क्रियात्मक प्रयास के परिणाम पर बल दिया जाता है। अन्य इसे एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसमें उत्पाद को बनाने में प्रयुक्त होने वाली विचार प्रक्रिया (योग्यता) पर बल दिया जाता है। हम सृजनात्मकता को चाहे उत्पाद के दृष्टिकोण से देखें चाहे प्रक्रिया के, दोनों ही सृजनात्मकता के मुख्य तथ्य हैं। हमारी सृजनात्मकता की परिभाषा के अनुसार, यह कुछ निर्मित करने या खोज करने (प्रक्रिया) की ऐसी योग्यता जो कि नवीन है और उत्पाद और प्रक्रिया के दृष्टिकोण में लाभकारी है।

7.7.2 क्या सृजनात्मकता में वैयक्तिक भिन्नता होती है?

आप यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि क्या बुद्धि और अभिवृत्ति की भाँति सृजनात्मकता में भी वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। इस प्रष्न का उत्तर सृजनात्मकता के घटकों को समझने पर निर्भर करता है।

आओ, सृजनात्मकता के घटकों के बारे में पता लगाएँ। **अपसारी चिंतन** इसका एक महत्वपूर्ण घटक है जो दी गई समस्या के संदर्भ में वैकल्पिक विचार या उत्तर उत्पन्न करने की विचार प्रक्रिया है।

उदाहरण– आकार में गोल चीजों की एक सूची बनाइए। एक व्यक्ति अनेक उत्तरों की सूची बना सकता है।

वास्तव में सृजनात्मकता में अपसारी चिंतन में संलग्न योग्यताओं का समूह सम्मिलित होता है। आओ, इन योग्यताओं का क्रमानुसार परीक्षण करते हैंः

समस्याओं को अनुभव करने की योग्यताः इसका अर्थ है कि वातावरण में किसी चीज की खराबी, आवष्यकता और कमी के प्रति सजगता।

उदाहरण– टेलीफोन में सुधार या हृदय रोग का इलाज ढूँढ़ना या एक रूपक की खोज, या वर्तमान परिस्थिति का वर्णन करने हेतु संकेत आदि की आवष्यकता महसूस करना।

धारा प्रवाहिताः इसका अर्थ है किसी दी हुई समस्या अथवा प्रकरण के लिए वैकल्पिक समाधान अभिव्यक्त अथवा उत्पन्न करना।

उदाहरण– समाचारपत्र के उपयोगों की सूची।

लचीलापन– किसी समस्या के विविध समाधान अथवा उत्तर देने की योग्यता, लचीलापन कहलाती है। जो व्यक्ति की विचारधारा को परिवर्तित करने के रूप में प्रदर्षित होती है। लचीलेपन के अंतर्गत समाधान की विविधता आती है न कि उनकी संख्या।

उदाहरण– समाचारपत्र के विविध उपयोग, समाचारों का स्रोत, पैकिंग सामग्री के रूप में, खिलौने बनाने में, मेज ढकने के लिए, आदि हो सकते हैं।

मौलिकता– इसका अर्थ है अद्वितीय अथवा नया विचार प्रतिपादित करने की योग्यता। सृजनात्मकता के इस पहलु के लिए अविष्कार सबसे अच्छा उदाहरण है।

उदाहरण– कविता के लिए नया शीर्षक सुझाने की योग्यता।

विस्तारीकरण– इसका अर्थ है विचार अथवा अन्तर्दृष्टि विकसित करने की योग्यता। एक विचारक अथवा लेखक की महानता अपने विचारों को व्याख्याओं, परिस्थितियों और निहितार्थ अथवा कथानक, मात्रों और संवादों द्वारा विस्तारित करने में निहित होती है।

उदाहरण–

1) यह विचार कि केवल सूचनाएँ प्रदान करने से षिक्षार्थियों की दक्षता का विकास नहीं होता, बल्कि उनकी निष्चित भागीदारी वाले कार्य अथवा क्रियाकलाप आधारित उपागम द्वारा उनकी दक्षता का विकास किया जा सकता है।

2) इस विचार को एक कहानी के माध्यम से समझाइएँ।

पुनर्परिभाषीकरण– परिस्थितियों में संक्रियात्मक सुधार की योग्यता जहाँ किसी अवधारणा के संदर्भ में एक जैसी क्रिया जिसे सामान्यतया ऐसी क्रिया करने में प्रयोग नहीं किया जाता, को दर्षाती है।

उदाहरण– वृत्त बनाने के लिए चूड़ी अथवा बोतल का प्रयोग करना।

यद्यपि सृजनात्मकता आवष्यक रूप से अलग सोच की योग्यता पर आधारित है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बुद्धि, ज्ञान और अभिप्रेरणा आदि घटक भी सृजनात्मकता से जुड़े हुए हैं। सही अर्थों में बुद्धि में संज्ञान और अलग दृष्टिकोण सम्मिलित है जैसे कि किसी परिस्थिति में आवष्यक चिंतन के रूप में अथवा ऐसी समस्या के रूप में जहाँ केवल एक या अनेक स्वीकारणीय उत्तर हों। यहाँ स्वीकार्यता पर बल दिया गया है और मनोवैज्ञानिकों का मत है कि सृजनात्मकता के लिए बुद्धि के एक निष्चित स्तर की आवष्यकता होती है। उदाहरणार्थ, मेकैन्नी (Machinnon's) द्वारा अति सृजनात्मक व्यक्तियों (जीव विज्ञानियों, गणितज्ञों, वास्तुकारों और समाज विज्ञानियों) का अध्ययन किया, जिनकी बुद्धिलब्धि का परास (range) 120 से 177 था। यह इंगित करता है कि अति सृजनात्मक व्यक्ति की बुद्धि का स्तर औसत से अधिक था, यद्यपि वे अपने उन असृजनात्मक साथियों से विलक्षण नहीं थे। इसका अर्थ है कि एक अति सृजनात्मक वास्तुकार और असृजनात्मक वास्तुकार की बुद्धिलब्धि प्राप्तांकों में कोई अंतर नहीं है। केवल सामान्य स्तर से अधिक बुद्धि का होना ही सृजनात्मकता का द्योतक नहीं है। इसका अर्थ है कि सृजनात्मकता के लिए अलग विचार प्रक्रिया तो आवष्यक है लेकिन इसके साथ ही संज्ञान और अभिसारी सोच होना भी आवष्यक है। क्रियात्मक समस्या समाधान करते समय वैकल्पिक समाधानों के अतिरिक्त तार्किक निष्कर्षों, विकल्पों की तुलना और सही विकल्प का चुनाव भी करना पड़ता है। इसके लिए सृजनात्मक विचारधारा में अलग तरह की सोच (कल्पनात्मक) के वैकल्पिक चरण, संज्ञान और अभिसारी विचारधारा भी सम्मिलित होते हैं।

वस्तुतः सृजनात्मकता स्पष्ट रूप से ज्ञान और अभिप्रेरणा से संबंधित है। एक जीवविज्ञानी या संगीतज्ञ के लिए जीवविज्ञान और संगीत के विस्तृत ज्ञान के अभाव में सृजनात्मक बनना संभव नहीं है। लम्बे समय तक अध्ययन के लिए समर्पित होने पर ही विषय का विस्तृत ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। कार्य को मौलिकता प्रदान करने के लिए अभिप्रेरणा दूसरा कारक

है। अभिप्रेरणात्मक कारकों में कुछ के नाम इस प्रकार हैंः प्रष्न पूछने की इच्छा, उच्च बौद्धिक दृढ़ता, समाधान न ढूँढ़ पाने पर तनावग्रस्त हो जाने की प्रवृत्ति और नए विचारों और जिज्ञासा से आन्नदित होना, आदि। सृजनात्मक व्यक्ति अपने कार्य को पर्याप्त समय देता है और सामान्यतया केवल मौलिकता से ही संतुष्ट होता है। इस प्रकार आपने देखा कि सृजनात्मकता के लिए पृथक सोच की योग्यता के अतिरिक्त औसत से अधिक बुद्धि, पर्याप्त ज्ञान और उच्च अभिप्रेरणा भी आवष्यक होती है।

इसका क्या अर्थ है? इसका साधारण अर्थ यह है कि अपसारी चिन्तन की योग्यताएँ, बुद्धि, ज्ञान और अभिप्रेरणा सृजनात्मकता को समझने और सृजनात्मकता में वैयक्तिक भिन्नता को पहचानने में सहायक होती हैं। वस्तुतः सभी व्यक्तियों में अपसारी चिन्तन, बुद्धि, ज्ञान और अभिप्रेरणा का स्तर एक जैसा नहीं होता। इस प्रकार की भिन्नता के कारण ही व्यक्तियों की सृजनात्मकता में भिन्नता पाई जाती है। इसके अतिरिक्त समस्या की आवृत्ति को महसूस करने की योग्यता, लचीलापन, मौलिकता, विस्तारीकरण और पुनर्परिभाषीकरण की योग्यता का स्तर भी एक ही व्यक्ति में समान नहीं होता। किसी व्यक्ति में विचारों के उत्पन्न होने की आवृत्ति तीव्र हो सकती है तो विचारों में लचीलेपन की कमी हो सकती है। इस प्रकार सृजनात्मकता में भिन्नता पाई जाती है। इस प्रकार, व्यक्ति द्वारा चुने गए अध्ययन या कार्य के क्षेत्र में सृजनात्मकता में भिन्नता के लिए अपसारी चिन्तन की योग्यता, बुद्धि, ज्ञान और अभिप्रेरणा की मात्रा में भिन्नता उत्तरदायी होती है। उदाहरणार्थ, एक व्यक्ति गणित के क्षेत्र में सृजनात्मक हो सकता है तो अन्य साहित्य में और कोई अन्य रसायन विज्ञान में या कला में या संगीत में या विज्ञापन के क्षेत्र में सृजनात्मक हो सकता है। प्रत्येक बालक से सृजनात्मकता की अपेक्षा की जाती है किन्तु सृजनात्मकता की प्रकृति प्रत्येक बालक में भिन्न हो सकती है।

7.7.3 क्या सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है?

ई.पॉल टोरेन्स, जिन्होंने सृजनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए युक्तियों की खोज की, ने सुझाव दिया कि यदि पर्याप्त सहयोगी व्यवहार और कक्षागत अभ्यास प्रदान किया जाए तो सृजनात्मकता की योग्यताओं को बढ़ाया जा सकता है। आओ, हम सृजनात्मकता में प्रयोग होने वाली तकनीकों की चर्चा करें।

असामान्य या असंगत प्रष्नों को प्रोत्साहित करना– एक षिक्षक होने के नाते आपको अपने षिक्षार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहन देना चाहिए और उनके असामान्य या असंगत प्रष्नों को भी स्वीकार करना चाहिए। जैसे कि, षिक्षार्थी आपसे पूछ सकता है कि बादल कैसे बनता है? नीचे दिए गए क्रियाकलाप का प्रयोग करते हुए आप अपने उत्तर को स्पष्ट कर सकते हैंः

अध्यापक एक बीकर को उबलते हुए पानी से आधा भरता है और इसके मुँह को बर्फ के एक टुकड़े से बंदकर देता अब क्या होता है, यह देखने के लिए षिक्षार्थियों से कहा जाता है। वे वाष्पीकरण और बीकर के ऊपरी हिस्से में बादल जैसी संरचना को देखते हैं। इसके बाद आगामी चर्चा में वे पानी, ऊष्मा, वाष्पीकरण, तापमान, बादल और वर्षा के संबंध को जान लेते हैं और यह ज्ञान उन्हें पदार्थ की विभिन्न अवधारणाओं के प्रकरण की ओर अग्रसर करता है।

आपके द्वारा प्रष्नों को स्वीकार करने से षिक्षार्थियों में जानने की इच्छा को बढ़ावा मिलता है। अक्सर ऐसे प्रष्नों को षिक्षक द्वारा "इसका उत्तर स्वयं पता लगाओ" कहकर टाल दिया जाता है। षिक्षक की उदासीनता या नकारात्मक अभिवृत्ति षिक्षार्थी की विचार प्रक्रिया और सृजनात्मक प्रयासों में बाधक हो सकती है। मान लो आपके किसी षिक्षार्थी द्वारा यह प्रष्न

पूछ लिया जाता है कि चाँद हर रात अपनी आकृति कैसे बदलता है? यदि आप इसका उत्तर नहीं जानते तो उसके प्रष्न को सहर्ष स्वीकार करते हुए उसके साथ चर्चा द्वारा या संदर्भ सामग्री का प्रयोग करके उपयुक्त उत्तर पता लगाने में उसकी सहायता कीजिए।

सृजनात्मक विचारधारा/योग्यताएँ बढ़ाने हेतु क्रियाकलाप उपलब्ध कराना– उदाहरण के लिए षिक्षार्थियों से नीचे दी गई चीजों के असामान्य उपयोगों की सूची बनाने के लिए कहा जा सकता है:

बॉलपेन	कागज	रस्सी
जूता	पुस्तक	मोमबत्ती

प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करते हुए प्रत्येक षिक्षार्थी को उसकी धारा प्रवाहिता, लचीलापन और मौलिकता को समझने में सहायता करें।

बुद्धि-उत्तेजक (Brain-Storming) सत्रों का आयोजन

यह एक युक्ति होती है जिसमें समूह के प्रत्येक सदस्य को दी गई समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिए अपने विचार देने होते हैं। नायक (आप, एक अध्यापक के रूप में) समूह के समक्ष समस्या रखता है और प्रत्येक सदस्य को समय में एक विचार देने के लिए निर्देषित करता है। एक बारी (round) के पष्चात् सब दूसरे बारी की तरफ बढ़ते हैं और इस प्रकार अनेक बारियाँ कराई जाती हैं। हर एक को एक विचार देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार सदस्यों द्वारा दिए गए विचारों को समस्या समाधान के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विचार का चयन करने हेतु सभी विचारों को जाँचा जाता है।

वाक्य रचना का प्रयोग– वाक्य रचना वह युक्ति है जो विचारों के उत्पन्न होने की समरूपता पर आधारित है। परिचित विषयवस्तु को नई विषयवस्तु से जोड़कर अथवा परिचित विषयवस्तु को नए दृष्टिकोण से देखने के द्वारा समरूपता उत्पन्न विचारों का एक ढाँचा प्रदान करती है। आप प्रत्यक्ष समरूपता अथवा वैयक्तिक समरूपता का उपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक समरूपता में दो वस्तुओं अथवा विचारों में तुलना की जाती है। षिक्षार्थियों में कार की यांत्रिकी की अंतर्दृष्टि के विकास को सहायता के लिए नीचे दिया गया उदाहरण देखों। कार की यांत्रिकी की, एक चिड़िया की गति से तुलना करो। षिक्षार्थी एक कार और चिड़िया में जो संबंध देखते हैं उसकी सूची इस प्रकार बनाते हैं:

चिड़िया	**कार**
दिमाग	इंजन
भोजन	पेट्रोल
तंत्रिका तंत्र	यांत्रिकी संबंध
बीमार	खराब होना

अब षिक्षार्थियों को इन समरूपताओं को दर्षाते हुए एक अनुच्छेद लिखने के लिए कहा जाता है। वैयक्तिक समरूपता में जिस वस्तु या विचार की तुलना की जानी है षिक्षार्थी को उससे सहानुभूति रखने को कहा जाता है। यदि हवा के विषय में चर्चा करनी है तो षिक्षार्थी को हवा में होने की कल्पना करके, उसे कैसा अनुभव हो रहा है यह अभिव्यक्त करने के लिए कहा जाता है।

- षिक्षार्थियों के समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ उपलब्ध कराई जाएँ जिससे वे अपने चिंतन के विचारों का स्वयं मूल्यांकन कर सकें। जो षिक्षार्थी अपने विचारों का स्वयं मूल्यांकन कर लेते हैं, वे भविष्य में प्रष्न पूछने में बहुत कम सकुचाते हैं।

- **सृजनात्मक विचारधारा को अतिरिक्त प्रोत्साहन देनाः** अपने विषय में षिक्षार्थियों के प्रदर्षन का मूल्यांकन करते समय सृजनात्मक विचारों पर ध्यान दें। षिक्षार्थी द्वारा दर्षाए गए सृजनात्मक प्रयासों की पहचान और अतिरिक्त प्रोत्साहन द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए। जब तक आप एक अध्यापक के रूप में अपने कक्षागत व्यवहार में मौलिकता नहीं दिखाते तो सृजनात्मकता को नहीं बढ़ाया जा सकता।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

6) षिक्षार्थियों के मध्य सृजनात्मकता विकसित करने की क्या तकनीकें हैं?

....

....

....

....

....

....

7.8 रुचि

रुचि रोजमर्रा के जीवन में सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाली अभिव्यक्ति है। रुचि का मानव व्यवहार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यह भावात्मक पक्ष का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसकी चर्चा हम इस भाग में करेंगे।

7.8.1 रुचि की प्रकृति और आयाम

रुचि का प्रत्यय प्राथमिक रूप में भावात्मक माना जाता है। यह अवधारणा व्यक्ति में उपस्थित उन कारकों, उसे उसके वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, व्यक्तियों और क्रियाकलापों के प्रति आकर्षित व विकर्षित करते हैं, से संबंधित प्रकरण को नामित करने के लिए प्रयोग की जाती है।

वेबस्टर ने रुचि को किसी वस्तु या विषय जैसे वनस्पति विज्ञान में रुचि, आदि में विशेष ध्यान देने की भावना की उत्तेजना के रूप में परिभाषित किया है। रुचि की व्याख्या उस चीज के रूप में की गई है जिसके कारण बालक अपने वैयक्तिक हित को पहचानता है, रुचि अभिप्रेरणा का वह स्रोत है जो व्यक्ति को, जहाँ वह चयन के लिए स्वतंत्र होता है, अपनी इच्छा का कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। यह ध्यान देने की दषा अथवा कारण को स्पष्ट करते हैं। हम कोई पुस्तक पढ़ते हैं, फुटबॉल मैच देखने जाते हैं, या किसी धार्मिक प्रवचन में भाग लेते हैं, आदि। हम यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि हम इन सब कार्यों को करने में रुचि रखते हैं। "रुचि" आनन्द की उस अनुभूति की तरफ भी संकेत करती है जो किसी चीज में ध्यान के परिणामस्वरूप प्राप्त होती है। रुचि को किसी चीज में भाग लेने के परिणामस्वरूप होने वाली आनन्द की उस अनुभूति के रूप में परिभाषित किया गया है। यह अनुभूति परिणाम है कारण नहीं। यह तब होता है जब हम किसी क्रियाकलाप में आनन्द अनुभव करते हैं तो कहते हैं कि अमुक पुस्तक, खेल अथवा भाषण रुचिकर है।

समय के साथ जब व्यक्ति का विकास और बुद्धि परिपक्वता के स्तर पर पहुँच जाती है तो रुचि स्थायी हो जाती है। मंद गति से परिपक्व होने वालों को अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे बालकों की रुचि षिक्षार्थियों की तत्परता और कुछ सीमा तक सीखने के अवसरों पर निर्भर करती है। रुचि सांस्कृतिक और भावात्मक कारकों से प्रभावित होती है। एक कष्टदायक संवेदना रुचि को कमजोर बनाती है जबकि खुषी रुचि को मजबूती प्रदान करती है।

रुचि के आयाम

रुचि के आत्मपरक एवं वस्तुपरक दोनों प्रकार के आयाम होते हैं। आत्मपरक आयामों के अंतर्गत अनुभव घटक पर अधिक बल दिया जाता है। वस्तुपरक आयामों में व्यक्ति के गतिक व्यवहार पर बल दिया जाता है। सभी रुचियों के संज्ञानात्मक और भावात्मक के साथ-साथ गतिक आयाम भी होते हैं।

रुचि के संज्ञानात्मक आयाम के घटक घर, विद्यालय और देष में उपलब्ध संचार साधनों के माध्यम से होने वाले वैयक्तिक अनुभवों पर आधारित होते हैं। वे क्रियाकलाप जो वैयक्तिक आवष्यकताओं की पूर्ति करती हैं अथवा व्यक्ति को आनंद का अनुभव कराती हैं, रुचि के रूप में विकसित हो जाती है। रुचि कुछ निष्चित क्रियाकलापों को जन्म देती है। इन क्रियाकलापों के प्रति अभिवृत्ति भावात्मक क्षेत्र (domain) का हिस्सा है। इसका विकास वैयक्तिक अनुभवों के साथ-साथ दूसरों विशेषतः माता-पिता, अध्यापक और समवाय समूह की विशेष क्रियाकलापों के प्रति अभिवृत्ति से होता है।

7.8.2 रुचि की वृद्धि और विकास

व्यक्ति में दो प्रकार की रुचि पाई जाती है– जन्मजात और अर्जित। रुचि तीन प्रकार के अधिगम अनुभवों द्वारा बढ़ती है:

- अभ्यास और त्रुटि अधिगम
- उन लोगों की पहचान, जिन्हें वे प्रेम अथवा प्रषंसा करते हैं
- दूसरों से प्राप्त मार्गदर्षन और निर्देषन

रुचि का विकास काफी हद तक बालक के शारीरिक और मानसिक विकास के समानान्तर होता है। उसके शारीरिक और मानसिक क्षमताओं अथवा अनुभवों की सीमाएँ उसकी रुचि की सीमाएँ निर्धारित करती हैं।

रुचि का विकास इनके माध्यम से होता है:

- वांछित क्रियाकलापों की विस्तृत श्रृंखला के साथ सम्पर्क
- क्षमताओं के अनुरूप क्रियाकलाप और
- संतुष्टि सुनिष्चित करने वाली दषाओं का विद्यमान होना।

7.8.3 रुचि की पहचान और महत्व

बालकों की रुचि की पहचान इनके माध्यम से की जा सकती है:

- उनके क्रियाकलापों का निरीक्षण
- उनके द्वारा पूछे गए प्रष्न
- उनके वार्तालाप के विषय

- उनके द्वारा पढ़ी जाने वाली पुस्तकें
- उनकी स्वाभाविक कलाकृतियाँ
- उनकी रुचि क्या है, इस विषय में उनके आत्म-प्रतिवेदन

कोई किस प्रकार का व्यक्ति अथवा बालक बनेगा यह काफी हद तक बाल्यावस्था के दौरान रुचि के विकास पर से निष्चित होता है। रुचियाँ सीखने की अभिप्रेरणा में एक सहायक कारक हैं। एक षिक्षार्थी जो शैक्षिक गतिविधियों में रुचि रखता है, उस षिक्षार्थी की अपेक्षा, जो कम रुचि रखता है चाहे खेल के माध्यम से हो अथवा कार्य के माध्यम से हो, सीखने के अधिक प्रयास करता है। यह उनकी महत्वाकांक्षा को प्रभावित करती है और उन्हें अपनी रुचि की गतिविधियों में संलग्न रहने पर आनंद प्रदान करती है। षिक्षार्थी की रुचि को समझने में असफलता षिक्षण की प्रभावषीलता को कम करती है।

किषोरावस्था के विकास में रुचि की भूमिका– किषोरावस्था के विकास में रुचि की महत्वपूर्ण भूमिका है। रुचि व्यक्ति को अपनी मर्जी की गतिविधियों को चुनने और उनके बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। स्वस्थ रुचियों की एक व्यापक श्रृंखला अनुभव और व्यक्तित्व की व्यापकता निर्धारित करती है। विफलता की स्थिति में रुचि विकल्प की सुविधा प्रदान करती है और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक होती है। तीव्र और स्थायी रुचियाँ वांछनीय हैं।

7.8.4 रुचि में वैयक्तिक भिन्नता

सभी षिक्षार्थियों की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक और वातावरणीय सहयोग, सामाजिक दबाव, अभिवृत्तियाँ, सूचनाओं तक पहुँच और उनका अनावरण और अधिगम के अवसर एक समान नहीं होते हैं। इसलिए उनकी रुचियों में भी वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है।

बालकों और किशोरों की रुचियों में स्पष्ट अंतर उनके खेलकूद, विद्यालय की गतिविधियाँ और विद्यालयी स्तर पर विभिन्न विषयगत मुद्दों और लगभग प्रत्येक कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। उनकी रुचियों का प्रसार निम्नतम से उच्चतम तक होता है। जैसे कि कुछ बच्चे अधिकतर समय खेलना पसंद करते हैं जबकि दूसरे अध्ययन को वरीयता देते हैं। षिषुओं में रुचि विद्यमान होने का परिचय ध्यान आकर्षित करने के रूप में मिलता है। शुरुआत के दो-तीन वर्षों के दौरान बालक की रुचि खोजपूर्ण गतिविधियों में होती है। 2 से 5 वर्ष की आयु के बीच के नर्सरी विद्यालय के बच्चों की रुचि खिलौनों में होती है। आयु के साथ गति रुचि की लड़कों में बढ़ती हुई और लड़कियों में घटती हुई प्रतीत होती है।

5 या 6 वर्ष की आयु में पसंद और नापसंद भी एक जैसी नहीं होती है। पसंद-नापसंद बालकों की लैंगिक भिन्नता से प्रभावित होती हैं। लड़के हर अनुपयुक्त चीज को नापसंद करते हैं। लड़कियाँ शारीरिक गतिविधियों से बचती हैं और कभी-कभार ही आक्रामकता का प्रदर्षन करती हैं।

बाल्यावस्था से पूर्व और पष्चात् की लैंगिक विशेषताओं में भी भिन्नता पाई जाती है। छोटे बच्चे सम-विषम दोनों लिंग के बच्चों के साथ खेलते हैं। विद्यालय पूर्व समूह का झुकाव असाधारण भिन्नता की ओर होता है। पाँच से आठ वर्ष की आयु वर्ग के बच्चे न तो विपरीत लिंग के साथ खेलने में लज्जा अनुभव करते हैं और न ही वयस्कों से शारीरिक स्नेह पाने में शर्मिन्दगी महसूस करते हैं। किषोरावस्था में अधिक रुचि काम, वैयक्तिक आकर्षण और विषम लिंग के साथ रहने की होती है।

7.9 जिज्ञासा

अलबर्ट आइन्सटाइन ने एक बार कहा था "The important thing is not to stop questioning. Curiosity has its own reasons for existing", यदि आप पिछली बार किसी पुस्तक, फिल्म या वार्तालाप में बढ़ी अपनी जिज्ञासा के विषय में सोचते हैं तो यह निष्चित रूप से आपको आनन्दित करेगा। जब कोई चीज आपकी जिज्ञासा को भड़का देती है तो आपका दिमाग पुरस्कार, स्मृति और अभिप्रेरणा से जुड़कर वास्तव में जोष के साथ गतिविधि में संलग्न हो जाता है। दूसरे शब्दों में, बालकों में जिज्ञासा वह महत्वपूर्ण चीज है जो दिमाग को ईमानदारी से सीखने के लिए तैयार करती है। इसमें कोई आष्चर्य नहीं है कि जिज्ञासा अधिगम को अधिक प्रभावषाली और मजेदार बना देती है। जिज्ञासु षिक्षार्थी न केवल प्रष्न पूछते हैं, बल्कि उत्तर ढूँढ़ने में भी सक्रिय रहते हैं। जिज्ञासा के बिना, सर आइजेक न्यूटन भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों का कभी प्रतिपादन नहीं कर पाते, अलेक्जेन्डर फ्लेमिंग शायद पेनिसिलीन की खोज नहीं कर पाते और मरक्यूरी का रेडियो धर्मिता के अग्रणी अनुसंधन का भी अस्तित्व नहीं होता। इसके अतिरिक्त बहुत से अन्य अनुसंधान भी संभव नहीं हो पाते। जिज्ञासा की भूमिका को समझने के लिए हमें नीचे दिए गए बिन्दुओं को जानना पड़ेगा।

मस्तिष्क को सीखने के लिए तैयार करना

अनुवर्ती अधिगम को अधिक लाभकारी बनाना

सही प्रष्न पूछना

स्वयं में जिज्ञासु होना

प्रष्न पूछना और प्रष्नों के उत्तर देना

सक्रिय श्रवण को अभ्यास और प्रोत्साहन देना

नई जानकारी टुकड़ों में प्रस्तुत करना

चित्र 7.2: जिज्ञासा को बढ़ाने वाली युक्तियाँ

1) **जिज्ञासा मस्तिष्क को सीखने के लिए तैयार करती है–** इसमें कोई आष्चर्य की बात नहीं है कि हम केवल अपनी अभिक्षमता के विषयों के अधिगम को ही स्मरण करना पसंद करते हैं। इससे पता चलता है कि जिज्ञासा रुचिकर या महत्वपूर्ण जानकारी को सीखने में सहायता करती है। यदि एक अध्यापक के रूप में आप अपने षिक्षार्थियों में किसी चीज के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने में सफल हो जाते हैं तो वे स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए अभिप्रेरित होते हैं, उन चीजों को सीखने के लिए भी वे अधिक तैयार और अभिप्रेरित होंगे, जो उन्हें रुचिकर या कठिन महसूस होती है।

   उदाहरणार्थ, यदि कोई षिक्षार्थी गणित से जूझ रहा है तो उसकी गणितीय समस्याओं को सामान्य पाठ्यपुस्तकों के प्रष्नों द्वारा सिखाने की बजाय उसके वैयक्तिक अनुभवों से जोड़कर उसे भली-भाँति सिखाया जा सकता है जो उसके लिए भविष्य में भी उस जैसी अन्य समस्याओं को हल करने में सहायक सिद्ध होंगी। यह एक षिक्षक का उत्तरदायित्व है कि वह अपने षिक्षार्थियों को जटिल प्रकरणों को भी आसानी से सीखने के लिए तैयार करे।

2) **जिज्ञासा अनुवर्ती अधिगम को अधिक लाभकारी बनाती है :** मस्तिष्क को सीखने के लिए तैयार करने के अतिरिक्त जिज्ञासा अधिगम अनुभवों को षिक्षार्थी के लिए अधिक लाभकारी बनाती है। आधुनिक अनुसंधानकर्त्ताओं ने पता लगाया कि जब षिक्षार्थियों की जिज्ञासा को बढ़ाया गया तो न केवल हाइपोथैलेमस (मस्तिष्क का वह भाग है जिसमें स्मृतियाँ निर्मित होती है) की गतिविधियाँ बढ़ गई, बल्कि मस्तिष्क का वह भाग जो पुरस्कार और प्रसन्नता से संबंधित है, में भी हलचल बढ़ गई। इस प्रकार षिक्षार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न होने से यह न केवल उन अभ्यासों को याद रखने में सहायक होती है जिन्हें वह अन्यथा एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता बल्कि अधिगम-अनुभवों को खेल, चॉकलेट या जेबखर्च की तरह आनंददायक भी बना सकती है।

3) **सही प्रष्न पूछना :** अधिगम में जिज्ञासा की भूमिका के संदर्भ में अभी भी कुछ बातें अस्पष्ट हैं। एक बात, जिसका वैज्ञानिकों ने पता लगाया है वह है इसके दूरगामी प्रभाव निष्चित करना। उदाहरणार्थ, यदि विद्यालय में दिन के आरंभ में ही षिक्षार्थी की जिज्ञासा को बढ़ा दिया जाए तो या यह उसे पूरा दिन ज्ञान प्राप्त करने के लिए सहायक सिद्ध होगी? दूसरी चीज जिसका पता लगाने के लिए अनुसंधानकर्त्ता बहुत उत्सुक हैं वह है कुछ लोग स्वाभाविक रूप से दूसरों की बजाय अधिक जिज्ञासु क्यों होते हैं, और हम कितने जिज्ञासु हैं, इस पर कौन से कारक प्रभाव डालते हैं। अतः सीधे उत्तरों को जानने की बजाय, हमें ऐसे प्रष्नों के द्वारा षिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास करने चाहिए, जिनके उत्तर वे स्वयं खोज सकें।

4) **स्वयं में जिज्ञासु होना** : जिज्ञासा संक्रामक होती है। किसी नए खेल को खेलने की कोषिष, नया शौक शुरु करना अथवा ऑनलाइन किसी अनजान विषय के पाठ्यक्रम को लेकर देखों। भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि और विचारधारा वाले लोगों को ढूँढ़ों और फिर सक्रिय रूप से सुनो कि वे क्या कहते हैं। जैसे ही आप इस प्रकार की नई चुनौतियों को अपनाते हों तो अपनी उत्तेजना, प्रोत्साहन और चुनौतियों से संबंधित अनुभवों को अपने षिक्षार्थियों के साथ बाँटते हों। इस प्रक्रिया द्वारा आप अपने षिक्षार्थियों को, किसी नए विषय को किस प्रकार सीखते हैं और प्रारंभिक कठिनाइयाँ जो अक्सर किसी नई चीज को सीखते समय सामने आती हैं के होते हुए भी, दृढ़ रहने के लिए प्रेरित करते हों।

5) **प्रष्न पूछना और प्रष्नों के उत्तर देना** : आने एक कहावत सुनी होगी, "यह यात्रा है, गंतव्य नहीं।" जब हम यह जिज्ञासा के संदर्भ में लागू करते हैं तो वे पाते हैं कि वे प्रष्न षिक्षार्थी को सीखने में संलग्न किए रखते हैं, न कि उनके उत्तर। गंतव्य षिक्षार्थी के कठिन परिश्रम का पुरस्कार होगा। जबकि, यात्रा का अंतिम परिणाम (गंतव्य पर पहुँचना) को और अधिक उत्तेजक और संतोषजनक बना देती है। जिज्ञासा षिक्षार्थी को यात्रा आरंभ करने और चाहे रास्ता कितना भी पथरीला क्यों न हो, यात्रा को जारी रखने के लिए अभिप्रेरित करती है।

षिक्षार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु आपको ऐसे प्रष्न पूछने की आवष्यकता है जिनके एक से अधिक उत्तर होते हों और जिनका उत्तर हाँ, नहीं या कंधे उचकाकर न दिया जा सके ताकि वे स्वयं अपने उत्तर ढूँढ़ने के लिए प्रोत्साहित हो सकें। इस प्रकार के प्रष्न निम्न शब्दों से शुरु हो सकते हैं:

- क्या होगा यदि ....
- इस जैसा क्या होगा ....

- क्यों .... हुआ?
- हमें यह कैसे ज्ञात हुआ कि ....
- आपने क्या सोचा जब ....

6) **सक्रिय श्रवण को अभ्यास और प्रोत्साहन देना** : बेषक, यदि अच्छे प्रष्नों को ध्यान से नहीं सुना जाता है तो वे व्यर्थ हैं। जब आप अपने षिक्षार्थी को सक्रिय रूप से सुनते हो तो आपको इस बात का प्रमाण भी मिलता है कि वह कितना जिज्ञासु है और कितना प्रभावषाली संप्रेषण कर पा रहा है। उदाहरण द्वारा अपने षिक्षार्थियों को दिखाओं कि किस प्रकार प्रतिश्रवण या वक्ता की टिप्पणी की व्याख्या की जाती है और अधिक जानकारी देने वाले प्रष्न किस प्रकार पूछे जाते हैं और ऐसे अनेक प्रष्न हो सकते हैं।

7) **नई जानकारी टुकड़ों में प्रस्तुत करना** : जिज्ञासा पैदा करने के लिए किसी जानकारी को छोटे-छोटे टुकड़ों में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यदि जानकारी छोटे-छोटे हिस्सों में दी जाती है तो षिक्षार्थी अगले हिस्से के विषय में सोचने के लिए बाध्य हो जाता है।

बोध प्रष्न

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

7) जिज्ञासा अधिगम प्रक्रिया में कैसे सहायक है?

....

....

....

....

....

....

7.10 सारांष

इस इकाई में हमने षिक्षार्थी की तत्परता, अभिप्रेरणा, अभिवृत्ति और अभिक्षमता, जिज्ञासा, रुचि आदि के विषयों का अधिगम को सुलभ बनाने के संदर्भ में अध्ययन किया। अधिगम बालक के जन्म से शुरु होकर उसकी मष्त्युपर्यन्त तक चलता रहता है। अधिगम प्रक्रिया में सहयोगी विभिन्न कारकों के अभाव में अधिगम संभव नहीं हो सकता है। शैक्षिक मनोविज्ञान में तत्परता का अर्थ है कुछ ऐसा सीखने के लिए तैयार होना जोकि जीव के लिए नया है। इस प्रत्यय का विकास यह व्याख्या करने के लिए हुआ है कि कुछ निष्चित संबंध (associations) दूसरों की अपेक्षा अधिक तत्परता से क्यों सीख जाते हैं। जैसे कि, कक्षा में वह षिक्षार्थी जो सीखने के लिए तत्पर नहीं है उसका अधिगम उपलब्धि सीखने के लिए तत्पर षिक्षार्थी के अधिगम उपलब्धि से कम होगी। अभिप्रेरणा एक सैद्धांतिक संरचना है जो व्यवहार की व्याख्या करने में प्रयुक्त होती है। यह व्यक्ति की क्रियाओं, इच्छाओं और आवष्यकताओं का कारण प्रस्तुत करती है। अभिप्रेरणा को व्यक्ति के व्यवहार की दिषा के

रूप में अथवा कोई व्यक्ति किसी व्यवहार को किस कारण से बार-बार दोहराता है अथवा नहीं करता है कि रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। अभिप्रेरक वह है जो व्यक्ति को एक निष्चित तरीके से कार्य करने के लिए तत्पर करता है अथवा किसी विशेष व्यवहार के लिए प्रेरित करता है। अभिवृत्ति हमेषा से बहुत से मनोवैज्ञानिकों की रुचि का विषय रही है। उसे बहुत उत्तेजक और रहस्यमयी मानी जाती है। अभिवृत्ति कार्य करने की सीखी हुई आदत अथवा किसी वस्तु के प्रति निष्चित तरीके से की जाने वाली प्रतिक्रिया है। अतः यह अभिवृत्ति का परिणाम है, इसे अभिवृत्ति द्वारा किए जाने वाले तथ्यगत और भावात्मक दोनों प्रकार के घटक सम्मिलित हैं। किसी विशेष क्षेत्र का ज्ञान अथवा कौषल प्राप्त करने में कुछ अपने सहपाठियों की तुलना में अधिक योग्य सिद्ध होते हैं। यह केवल कुछ विशिष्ट योग्यताओं के कारण होता है जिन्हें अभिवृत्ति कहते हैं।

अभिक्षमता का वर्णन सामान्य बौद्धिक योग्यता से भिन्न उस विशिष्ट योग्यता या क्षमता के रूप में किया जा सकता है जो व्यक्ति की किसी विशिष्ट क्षेत्र में कुषलता प्राप्त करने में सहायता करती है। यह सीखने की योग्यता है। यह अधिगम जन्मजात अथवा प्रयासों द्वारा अर्जित हो सकता है, जैसे कि तकनीकी की तरफ झुकाव जन्मजात अभिवृत्ति है जबकि इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त करना सीखी हुई अभिक्षमता है।

7.11 इकाई के अंत में अभ्यास

1) अभिक्षमता परीक्षण का एक उपयोग बताइए।
2) अभिवृत्ति को परिभाषित कीजिए।
3) अभिप्रेरणा के मूल प्रत्यय की व्याख्या कीजिए।
4) अच्छी समझ के लिए जिज्ञासा उत्पन्न करने के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5) चालक/अन्तर्नोद और प्रोत्साहन के मध्य की चर्चा कीजिए।
6) आंतरिक और बाह्य अभिप्रेरणा में अंतर की चर्चा कीजिए।
7) षिक्षण-षिक्षक प्रक्रिया में षिक्षार्थी की तत्परता का क्या लाभ है?
8) सीखने में रुचि होना षिक्षक और षिक्षार्थी दोनों के लिए कैसे महत्वपूर्ण है?

7.12 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

अब्राहम, कोरमॉन, के. (1974), *दि सायकोलॉजी ऑफ मोटीवेषन,* न्यूजर्सीः प्रिंटिस हॉल।

अमाविल, टी.एम. (1983), *दि सोषल सायकोलॉजी ऑफ क्रियेटीविटी,* न्यूयार्कः स्प्रिंगर।

एटकिंसन, जे. डब्ल्यू (1969), *एक इन्ट्रोडक्षन ऑफ मोटीवेषन,* प्रिंसटनः वॉन स्ट्रैंड।

हिल्गार्ड, ई. आर. (1966), *थ्योरी ऑफ लर्निंग,* न्यूयार्कः एप्लीटॉन संचुरी।

पिंटरिच, पी. तथा शौंक, डी. (1995), *मोटीवेषन इन एजुकेषनः थ्योरी, रिसर्च एंड एप्लीकेषन,* (प्रथम संस्करण), कोलम्बसः ओ. एच. पियरसन एजुकेषन प्रेस।

स्टिपेक, डी. जे. (2001), *मोटीवेषन टू लर्नः इंटीग्रेटिंग थ्योरी एंड प्रैक्टिस,* (चतुर्थ संस्करण), बोस्टनः पियरसन एलन एंड बेकन।

कैथलीन एफ. बेनियल (2008), *टीचिंग अनप्रिपेयर्ड लर्नर्सः स्ट्रेटजीज फॉर प्रोमोटिंग सक्सेस एंड रिटेन्सन इन हायर एजुकेषन।*

7.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

1) भाग 7.3 का अध्ययन करें और अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर दीजिए।
2) अनुभाग 7.4.3 का अध्ययन करें और उसके आधार पर उत्तर दीजिए।
3) अभिप्रेरणा के संदर्भ में सुविधादाता की भूमिका के आधार पर उत्तर दिया जाए।
4) प्रत्ययों और सिद्धान्तों का बार-बार सारांष, साधारण उदाहरणों द्वारा समीक्षा, सादृश्यता और उचित व्याख्या आदि।
5) अपने कक्षागत अनुभवों के आधार पर उत्तर दीजिए।
6) भाग 7.7 का अध्ययन करें और अपने अनुभवों के आधार पर उत्तर दीजिए।
7) भाग 7.9 का अध्ययन करें और उसके आधार पर उत्तर दीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY